RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 350, नई दिल्ली । बुधवार, 26 फरवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

03 भाजपा मुख्यमंत्री का नाम अभी तक तय नहीं कर पाई है या फिर...

06 आस्था, शिष्टाचार और महाकुंभ का

08 सीबीआई ने आईएएस विष्णुपद सेठी के घर पर छापा मारा; सुबह 7 बजे से मैराथन छापेमारी

शिव की जटाओं से बहती ऊर्जा: महाशिवरात्रि का ब्रह्मांडीय प्रभाव

महाशिवरात्रि वह रहस्यमयी रात्रि है, जब ब्रह्मांड की अदृश्य शक्तियाँ तीव्र ऊर्जा के स्पंदन से जागृत हो उठती हैं। यह साधक के लिए वह दुर्लभ क्षण है, जब वह अपनी निद्रित संभावनाओं को जागृत कर सकता है। इस रात महादेव शिव अपने तेजस्वी स्वरूप में प्रकट होते हैं—वह क्षण जब समय और चेतना एक हो जाते हैं, और आत्मा व परमात्मा के बीच का सूक्ष्म पर्दा हट जाता है। यह केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक संयोग है। भारतीय योग और तंत्र परंपराएँ इसे विशिष्ट मानती हैं, क्योंकि इस दौरान ब्रह्मांड की ऊर्जाएँ इस तरह संरचित होती हैं कि वे मानव शरीर और मन पर असाधारण प्रभाव डालती हैं। इसलिए ऋषियों और योगियों ने इस रात्रि को ध्यान, जागरण और शिव के स्मरण के लिए चुना, ताकि आत्मा का उत्कर्ष संभव हो सके।

शिव: चेतना का असीम स्वरूप

शिव कोई साधारण देवता नहीं, वे एक प्रचंड ऊर्जा हैं—संहार के अधिपति और सृजन के मूल स्रोत। वे मृत्यु को परास्त करने वाले और अमरत्व का मार्ग प्रशस्त करने वाले हैं। वैराग्य उनके स्वभाव में है, फिर भी वे संसार की नींव हैं। हर कण में व्याप्त वह शक्ति हैं, जो जीवन को गति और अर्थ देती है। उनके तीसरे नेत्र का रहस्य यह है कि जब दृष्टि भीतर की ओर मुड़ती है, तो संपूर्ण ब्रह्मांड का ज्ञान हृदय में उजागर हो जाता है।

महाशिवरात्रि का उपवास देह का त्याग नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि और इच्छाओं पर विजय का संकल्प है। यह भीतरी ऊर्जा को ऊर्ध्वमुखी करता है, जिससे चेतना प्रखर होती है। शिवलिंग पर जल और दूध अर्पित करना ऊर्जा का संतुलन स्थापित करता है। बेलपत्र मन को शांत करता है, धतूरा शिव की अलौकिक निर्लिप्तता को दर्शाता है। ये प्रतीक केवल रस्में नहीं, बल्कि गहरे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक अर्थों से युक्त हैं।

तंत्र और योग की नजर में

तांत्रिक साधकों के लिए यह रात्रि एक शक्तिशाली अवसर है। शिव तंत्र के आधार हैं, और उनका अर्धनारीश्वर रूप शक्ति और चेतना के संयोग का प्रतीक है, जो सृष्टि को संचालित करता है। इस रात विशेष अनुष्ठानों से साधक अपनी चेतना को प्रज्वलित कर उसे परम शिखर तक ले जा सकता है। योग परंपरा इसे ₹ऊर्जा की महारात्रि₹ कहती है। इस दौरान शरीर का ऊर्जा-प्रवाह स्वाभाविक रूप से ऊपर की ओर बहता है। यदि साधक सीधा बैठकर तप में लीन हो, तो यह ऊर्जा सहस्रार तक पहुँचती है, जिससे गहन आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त होते हैं। सद्गुरु कहते हैं कि इस रात का जागरण और ध्यान साधक को उसकी चेतना के उच्चतम आयाम तक ले जा सकता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

आधुनिक विज्ञान भी इस रात्रि की विशिष्टता को स्वीकारता है। चंद्रमा और पृथ्वी की स्थिति के कारण उत्पन्न ऊर्जा-प्रवाह मस्तिष्क और मेरुदंड को प्रभावित करता है। ₹ॐ₹ का उच्चारण मस्तिष्क की तरंगों को संतुलित करता है, और महामृत्युंजय मंत्र का जाप इस प्रभाव को और गहरा करता है। शोध बताते हैं कि शिवलिंग के आसपास का वातावरण नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर सकारात्मकता को संचित करता है। यह रात्रि केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय संरचना का एक प्रभावशाली पहलू है।

पर्यावरण के साथ बंधन

महाशिवरात्रि प्रकृति के प्रति सम्मान का संदेश देती है। शिव हिमालय के तपस्वी हैं, जहाँ उनकी जटाओं से गंगा धरती को जीवन देती है। उनका वाहन नंदी पशुजगत के प्रति संवेदना का प्रतीक है। सर्पों से अलंकृत ग्रीवा और चंद्र से सुशोभित मस्तक प्रकृति के साथ उनके अटूट सामंजस्य को दिखाते हैं। शिवलिंग पर जल अर्पण जल के महत्व को रेखांकित करता है। बेलपत्र हवा को शुद्ध करता है, धतूरा औषधीय गुणों से युक्त है—ये सभी तत्व पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देते हैं। यह पर्व कहता है कि प्रकृति की रक्षा ही शिव की सच्ची सेवा है। वृक्ष लगाना, जलाशयों को बचाना और जीवों का संरक्षण इस पूजा का हिस्सा बनना चाहिए।

मानसिक शांति का स्रोत

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह रात आत्मनिरीक्षण का अवसर है। उपवास, ध्यान और जागरण से मानसिक तनाव हल्का होता है, एकाग्रता बढ़ती है, और आत्मविश्वास जागता है। आधुनिक जीवन की आपाधापी में, जहाँ अवसाद ने मन को जकड़ लिया है, यह पर्व एक दर्पण बनकर हमें भीतर झाँकने को प्रेरित करता है। यह सिखाता है कि सच्चा सुख बाहरी वैभव में नहीं, बल्कि आत्मबोध की शांति में है। शिव का स्वरूप हमें यह अहसास दिलाता है कि जीवन का लक्ष्य भौतिक दौड़ नहीं, बल्कि आत्मज्ञान की प्राप्ति है।

आत्मा से शिवत्व की ओर

महाशिवरात्रि आत्मा के शिवत्व तक पहुँचने की यात्रा है—यह मोक्ष का द्वार है। शिव असीम ऊर्जा हैं, ब्रह्मांड का नाद, जो कैलाश की शांति में बसते हैं और श्मशान की निस्पंदता में गूंजते हैं। वे वैराग्य की ऊँचाई हैं, प्रेम की गहराई भी। मृत्यु को हरने वाले और जीवन को अनंत करने वाले। यह रात्रि हमें अपने भीतर के अज्ञान को जलाने और शिव के स्वरूप को अपनाने का आह्वान देती है। यह केवल रीति नहीं, आत्मबोध की साधना है। यह वह क्षण है, जब हम क्षुद्र सीमाओं से मुक्त होकर अनंत की ओर बढ़ सकते हैं। शिव हमारे भीतर हैं—यह रात उस सत्य की झलक है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

शिव सत्यं है।

शिव हैं परमपिता,
वही हमारा आधार है
धरती पर वह सत्य है,
वह शून्य भी और सर्वव्यापी शिखर भी
क्योंकि, वह हम सभी के लिए सत्य है।

दुनिया को बचाने स्वयं ही,
विष का सेवन किया
वह दानी-औघड़ जिसने सब कुछ दान किया,
वह कालों के काल महाकाल बनकर जग का
कल्याण किया,
क्योंकि, वह हम सभी के लिए सत्य है।

वह हमारे लिए आराध्य,
वह देवों के देव महादेव
काशी के भोलेनाथ,
सबका बेड़ा पार करेंगे
क्योंकि, वह हम सभी के लिए सत्य है।

पूरी सृष्टि की सृजनात्मकता,
जग के लिए ओंकार व शिव-शम्भू महादेव
हम सभी के खेवनहार जग के भोलेनाथ,
क्योंकि, वह हम सभी के लिए सत्य है।

रावण को सोने की लंका देने वाले,
भक्तों की भक्ति से प्रसन्न होने वाले।
भक्तों पर कृपा बरसाने वाले,
क्योंकि, वह हम सभी के लिए शिव सत्य है॥

हरिहर सिंह चौहान

शिव सहस्त्रनाम के कुछ प्रभावशाली मंत्रो के जाप से होगी मनोकामना पूर्ति:

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी)

यूं तो भगवान शिव के सहस्त्रों नाम है और हर नाम का अपना एक महत्त्व है। जो व्यक्ति भगवान शिव के शिवसहस्त्रनाम का पाठ प्रत्येक सोमवार तथा सावन मास और महाशिवरात्रि जैसे पर्व पर पाठ करता है उसके जीवन में आ रही बाधाओं का निवारण तो होता ही है साथ ही मनोकामना पूर्ति भी होती है और यदि शिव सहस्त्रनाम में वर्णित नामो को नमः संपुट लगा कर जप किया जाए तो फिर कहना ही क्या उस व्यक्ति के जीवन में एक अलग ही चमत्कार देखने को मिलेगा। एक प्रयोग में भगवान शिव के प्रत्येक नाम के जप का अपना एक अलग ही प्राभव है देखने को मिला है। जैसे की किसी व्यक्ति को जीवन में स्थिरता में कमी हो तो उसे भगवान शिव के इस मंत्र ॐ स्थिराय नमः का जाप प्रतिदिन 1 माला (रुद्राक्ष की माला) से करना चाहिए। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का मन अशांत रहता अथवा पढाई इत्यादि में मन नही लगता हो उसे ॐ ध्रुवाय नमः मन्त्र का जप करना चाहिए साथ ही शिव लिंग पर दुग्ध चढ़ाना चाहिए। इसी प्रकार यदि किसी की आकांक्षा जीवन में विख्यात होने की है तो उसे ॐ सर्वविख्याताय नमः मन्त्र का जाप शिव जी पर बेल पत्र चढ़ाते हुए करना चाहिए। वहीं सौभाग्य में वृद्धि और सुखी दांपत्य जीवन के लिए ॐ सौभागेश्वराय नमः मन्त्र का जाप करना चाहिए। धन प्राप्ति हेतु ॐ निधये नमः मन्त्र का जाप करने से धन लाभ होता है और जिसे बल प्राप्ति की कामना हो उसे ॐ महाबलाय नमः मन्त्र का जाप करना चाहिए। इसी प्रकार भगवान शिव के अन्य नामो का भी अपना अलग प्राभव है जो की यहां पर संक्षिप्त रूप से वर्णन किया जा रहा है।

भौम प्रदोष व्रत

प्रदोष व्रत में भगवान शिव की पूजा की जाती है। धार्मिक मान्यताओं अनुसार इस व्रत को रखने से जीवन के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। एक महीने में दो प्रदोष व्रत पड़ते हैं। इस तरह से पूरे साल में 24 या 25 प्रदोष व्रत होते हैं। इस व्रत की पूजा के लिए प्रदोष काल समय सबसे शुभ माना जाता है। व्रत में अन्न का सेवन नहीं किया जाता।

प्रदोष व्रत का मुहूर्त

==========

25 फरवरी को प्रदोष व्रत पूजा का मुहूर्त शाम 6 बजककर 18 मिनट से लेकर रात 8 बजकर 49 मिनट तक रहेगा।

प्रदोष व्रत पूजा विधि

==========

प्रदोष व्रत वाले दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान कर व्रत का संकल्प लें और इस समय विधि विधान भगवान शिव की पूजा करें। फिर शाम की पूजा से पहले फिर से स्नान करें। इसके बाद घर के मंदिर में घी का दीपक लगाएं। शिव जी को बेलपत्र, भांग, धतुरा इत्यादि चीजें अर्पित करें। प्रदोष व्रत की कथा सुनें। अंत में आरती करके पूजा संपन्न करें। ये व्रत फलाहारी भोजन ग्रहण करके रखा जाता है।

भौम प्रदोष व्रत पर क्या करना चाहिए क्या नहीं ?

==========

भौम प्रदोष व्रत पर आपको टूटे हुए चावल शिवलिंग पर कभी नहीं चढ़ाना चाहिए। बल्कि साफ और खड़े चावल चढ़ाएं।

वहीं, पूजा पाठ में आपको काले कपड़े नहीं पहनने चाहिए। इसलिए भौम प्रदोष व्रत में इस रंग के कपड़े पहनने से बचें।

आप पूजा में शिव जी की कृपा पाने के लिए सफेद, हरे या पीले कपड़े पहनने चाहिए .यह बहुत शुभ माना जाता है।

भौम प्रदोष व्रत में भूलकर भी मास का सेवन नहीं करना चाहिए। इसके अलावा आपको किसी को अपशब्द नहीं बोलने चाहिए।

तुलसी की पत्तियां भगवान शिव को नहीं चढ़ानी चाहिए। कुमकुम या सिंदूर को भी शिवलिंग पर नहीं अर्पित करना चाहिए।

प्रदोष व्रत के दिन क्या करें

==========

प्रदोष व्रत के दिन शिवलिंग पर बिल्व पत्र चढ़ाना चाहिए।

प्रदोष व्रत के दिन ॐ नमः शिवाय मंत्र का जाप करना चाहिए।

प्रदोष व्रत के दिन शिव पुराण का पाठ करना चाहिए।

प्रदोष व्रत के दिन गरीबों को दान करना चाहिए।

प्रदोष व्रत के दिन शिव मंदिर में जाकर दर्शन करना चाहिए।

महा शिवरात्रि व्रत

महाशिवरात्रि का पर्व हर वर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। हिंदू धर्म के अनुसार, इसी दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। महाशिवरात्रि के दिन देवाधिदेव महादेव ने गृहस्थ जीवन को अपनाया। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की विधिपूर्वक पूजा करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। हालांकि, महाशिवरात्रि का पूरा दिन शिव पूजा के लिए समर्पित होता है, लेकिन शुभ मुहूर्त में की गई पूजा विशेष फल देती है।

महाशिवरात्रि कब है ? फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि आरंभः 26 फरवरी, प्रातः11:08 बजे से 27 फरवरी 2025, प्रातः 08:54 बजे तक

चतुर्दशी तिथि का प्रदोष और निशिता काल 26 फरवरी

इसलिए, महाशिवरात्रि का व्रत 26 फरवरी 2025 को रखा जाएगा।

महाशिवरात्रि पर भद्रा काल 26 फरवरी, महाशिवरात्रि के दिन प्रातः11:08 बजे से रात्रि 10:05 बजे तक रहेगा भद्रा का समय

शिव कालों के काल महाकाल हैं, इसलिए उनकी पूजा पर भद्रा और पंचक जैसे अशुभ काल का कोई असर नहीं पड़ता। इसीलिए, महाशिवरात्रि के दिन भद्रा होने के बावजूद, पूरे दिन निर्बाध रूप से शिव पूजा की जा सकेगी।

चार प्रहर की पूजा का समय

महाशिवरात्रि का दिन विशेष महत्व रखता है, और इस दिन की रात में चारों प्रहर में पूजा का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष महाशिवरात्रि पर चार प्रहर की पूजा के लिए निम्नलिखित मुहूर्त निर्धारित किए गए हैं-

प्रथम प्रहर पूजा का समयः सायं 06:19 बजे से रात्रि 09:26 बजे तक

द्वितीय प्रहर पूजा का समयः रात्रि 09:26 बजे से मध्यरात्रि 12:34 बजे तक

तृतीय प्रहर पूजा का समयः मध्यरात्रि 12:34 बजे से 27 फरवरी , प्रातः03:41 बजे तक

चतुर्थ प्रहर पूजा का समयः 27 फरवरी , प्रातः03:41 बजे से प्रातः 06:48 बजे तक

महाशिवरात्रि पूजा का महत्व

महाशिवरात्रि शब्द का अर्थ है भगवान शिव की रात्रि।

महाशिवरात्रि में महा का अर्थ है महान और शिवरात्रि का अर्थ है भगवान शिव की रात्रि। धार्मिक मान्यता है की शिवरात्रि के दिन भगवान भोलेनाथ का माता पार्वती के साथ विवाह हुआ था। इसीलिए महाशिवरात्रि के दिन रात भर जागकर शिव और उनकी शक्ति माता पार्वती की आराधना करने से भक्तों पर शिव और मां पार्वती की विशेष कृपा होती है। महाशिवरात्रि का रात्रि जागरण से जीवन के तमाम कष्ट दूर हो जाते हैं, इसलिए महाशिवरात्रि की रात सोना नहीं चाहिए।

शिव-पार्वती से हर पति-पत्नी को लेनी चाहिए 5 सीख

महाशिवरात्रि सिर्फ उपवास और पूजा का पर्व नहीं है बल्कि यह शिव और पार्वती के अटूट प्रेम समर्पण और विश्वास की याद भी दिलाता है। उनका रिश्ता आज के हर दंपति के लिए एक प्रेरणा है। अगर आप भी अपनी शादीशुदा जिंदगी को सुखी और प्रेमपूर्ण बनाना चाहते हैं तो शिव-पार्वती के रिश्ते से ये 5 अहम सीख जरूर लें।

महाशिवरात्रि का पर्व सिर्फ उपवास, मंत्र और पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सच्चे प्रेम, अटूट विश्वास और जीवनसाथी के प्रति समर्पण का भी प्रतीक है। यह दिन भगवान शिव और माता पार्वती के पवित्रमिलन का प्रतीक माना जाता है। जिस तरह शिव-पार्वती का रिश्ता प्रेम, त्याग और धैर्य से भरा था, वैसे ही हर शादीशुदा जोड़े को अपने रिश्ते में इन गुणों को अपनाना चाहिए। आजकल के दौर में रिश्तों में पहले जैसी गहराई और धैर्य कम होता जा रहा है। छोटी-छोटी गलतफहमियां रिश्तों को तोड़ने की वजह बन जाती हैं। जहां कभी प्रेम और सम्मान हुआ करता था, वहां अब ईगो और अहंकार ने जगह ले ली है। ऐसे में, अगर कोई दंपति अपने रिश्ते को मजबूत और मधुर बनाना चाहता है, तो उसे भगवान शिव और माता पार्वती के रिश्ते से सीख लेनी चाहिए। अगर आप भी चाहते हैं कि आपका रिश्ता अटूट और मिसाल बनने वाला बने, तो शिव-पार्वती से ये 5 सीख जरूर अपनाएं। ये न सिर्फ आपके रिश्ते को मजबूत करेंगी, बल्कि जीवनभर के लिए प्यार और सम्मान को बनाए रखने में मदद करेंगी। आइए जानते हैं।

सच्चा प्रेम हर परीक्षा से गुजरता है

माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए वर्षों तक कठोर तपस्या की थी। उनका प्रेम सिर्फ बाहरी आकर्षण पर नहीं, बल्कि आत्मा के गहरे जुड़ाव पर आधारित था। उन्होंने धैर्य रखा, कठिनाइयों को सहा, और तब जाकर भगवान शिव को प्राप्त किया। यह हमें सिखाता है कि हर रिश्ते में परीक्षा की घड़ी आती है, लेकिन जो सच्चा प्रेम करता है, वह धैर्य रखता है और हर मुश्किल का सामना करता है। आजकल के रिश्तों में जरा-सी परेशानी आने पर लोग अलग होने की बात करने लगते हैं, लेकिन सच्चे प्यार का मतलब मुश्किल समय में भी साथ निभाना होता है।

एक-दूसरे की कमियों को अपनाएं

भगवान शिव का रूप बाकी देवताओं से अलग था। वे भस्म लगाए रहते थे, उनके शरीर पर सर्प लिपटे रहते थे और वे श्मशान में वास करते थे, लेकिन माता पार्वती ने उन्हें वैसे ही अपनाया, जैसे वे थे। उन्होंने उनकी शक्तियों को पहचाना और उनके साथ जीवन बिताने का संकल्प लिया।

आज के रिश्तों में लोग परफेक्शन की तलाश में रहते हैं। लेकिन सच्चा रिश्ता वही होता है, जहां आप अपने पार्टनर की खूबियों के साथ-साथ उसकी कमजोरियों को भी अपनाते हैं। जब आप अपने जीवनसाथी को उसी रूप में स्वीकारते हैं जैसे वे हैं, तब ही आपका रिश्ता मजबूत बनता है।

सम्मान और समानता है जरूरी

भगवान शिव और माता पार्वती का रिश्ता सिर्फ प्रेम का ही नहीं, बल्कि सम्मान और समानता का भी उदाहरण है। भगवान शिव हमेशा माता पार्वती को बराबरी का दर्जा देते थे और उनके विचारों का सम्मान करते थे। वे उन्हें 'अर्धनारीश्वर' के रूप में देखते थे, जिसका अर्थ है कि पति और पत्नी एक-दूसरे के पूरक होते हैं। आज के समय में कई रिश्ते इसलिए टूट जाते हैं क्योंकि उनमें सम्मान की भावना नहीं होती। अगर पति-पत्नी एक-दूसरे की राय को महत्व दें और एक-दूसरे को बराबर का दर्जा दें, तो कोई भी समस्या उनके रिश्ते को हिला नहीं सकती। जहां समानता और सम्मान होता है, वहां प्यार अपने आप बढ़ता है।

मुश्किलों में साथ निभाना

भगवान शिव और माता पार्वती के जीवन में कई कठिनाइयां आईं, लेकिन उन्होंने हमेशा एक-दूसरे का साथ निभाया। चाहे वह माता सती का बलिदान हो या फिर माता पार्वती का कठिन तप, दोनों ने हर परिस्थिति में एक-दूसरे का साथ दिया।

आज के समय में कई रिश्ते छोटी-छोटी परेशानियों में बिखर जाते हैं। लेकिन सच्चा रिश्ता वही होता है, जहां कठिन समय में भी साथ न छोड़ा जाए। जब मुश्किलें आएं, तो एक-दूसरे की ताकत बनें, न कि कमजोरी।

मौन भी एक भाषा होती है

भगवान शिव को 'महामौन' कहा जाता है। वे कम बोलते थे, लेकिन जब भी माता पार्वती को मार्गदर्शन की जरूरत होती, वे हमेशा सही समय पर उन्हें सही दिशा दिखाते थे।

आज के रिश्तों में बहुत ज्यादा बोलने से ज्यादा जरूरी सही समय पर सही बातें कहना है। कई बार शब्दों की जरूरत नहीं होती, बल्कि मौन भी एक गहरी समझ और प्रेम को दर्शा सकता है। सच्चा रिश्ता वही है, जहां बिना कुछ कहे भी एक-दूसरे की भावनाओं को समझा जा सके।

महाशिवरात्रि पर शिवलिंग पर चढ़ाएं काले तिल और चावल, मिलते हैं गजब के फायदे

दिव्यांशी भदौरिया

महाशिवरात्रि का त्यौहार आने में ज्यादा समय नहीं बचा है। इस दिन भक्तजन भगवान शिव की विधिवत रुप से पूजा-अर्चना करते हैं। इस दिन माना जाता है कि शिवलिंग पर काले तिल और चावल अर्पित करने से शुभ परिणाम मिलते हैं।

शिव भक्तों को महाशिवरात्रि पर्व का बेसब्री से इंतजार रहता है। इस साल महाशिवरात्रि का त्यौहार 26 फरवरी 2025 को मनाया जा रहा है। इस दिन भगवान शिव की विधिवत रुप से पूजा-अर्चना करते हैं। भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए भक्त कई उपाय करते हैं। महाशिवरात्रि पर भोलेबाबा को प्रसन्न करने के लिए भांग, धतूरा व बेलपत्र अर्पित करने के साथ ही जलाभिषेक करते हैं। हालांकि, शिवलिंग पर काले तिल और चावल को अर्पित करने से भी भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। आइए आपको बताते हैं महाशिवरात्रि पर शिवलिंग पर काले तिल व चावल चढ़ाने से क्या होता है।

काले तिल चढ़ाने का महत्व

ज्योतिष के अनुसार, शिव पूजन में काले तिल का अर्पित करना शुभ होता है। मान्यता है कि महाशिवरात्रि

पर शिवलिंग पर काले तिल अर्पित करने से सर्प दोष, शनि की साढ़ेसाती व ढैय्या का अशुभ प्रभाव कम होता है। इतना ही नहीं, शिवलिंग पर काले तिल को अर्पित करने से व्यक्ति को हर तरह की परेशानियों से मुक्ति मिल जाती है और ऐसा करने से भगवान शिव की कृपा से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

शिवलिंग पर कच्चा तिल चढ़ाने से क्या होता है

महाशिवरात्रि पर कच्चा चावल चढ़ाने से भगवान शिव काफी प्रसन्न होते हैं। इसके साथ ही महाशिवरात्रि पर धन-धान्य का आशीर्वाद प्राप्त होता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार शिवलिंग पर अक्षत अर्पित करने से भगवान शिव की कृपा से मनवांछित फल प्राप्त होने के साथ ही धन लाभ भी होता है।

तारा चक्र वर्णन

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी)

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सभी 27 नक्षत्रों को नौ श्रेणियों में विभाजित किया गया है। जन्म नक्षत्र से गिनकर लगातार नौ तारों को नवचक्र तारा भी कहा जाता है। इन नौ तारों को अलग अलग श्रेणियों में रखा गया है। जिनके नाम क्रमशः जन्म,संपत, विपत क्षेम,प्रत्यरि,साधक,वध,मित्र,अतिमित्र है। नवचक्र तारों का इस्तेमाल मुहूर्त तथा गोचर फल देखने हेतु किया जाता है।

जन्म तारा: जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में हो,उसे जन्म नक्षत्र कहा जाता है। जन्म नक्षत्र से 1,10,19 वाँ नक्षत्र जन्म तारा कहलाता है। जन्म तारा का संबंध देह सुख से होता है। जन्म तारा के ही स्वामी ग्रह की दशा जातक को जन्म के समय प्राप्त होती है। विद्वानों के अनुसार यदि मां और शिशु का एक ही नक्षत्र में जन्म हो तो एक तारा दोष माना जाता है।

संपत तारा: जन्म नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र को संपत तारा माना गया है। जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है कि यह संपत्ति , धन सुख,वैभव को बढ़ाने वाला है। जन्म नक्षत्र से 2,11,20 वाँ तारा संपत तारा कहलाता है। यदि पुत्र, पिता के नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में जन्मा हो तो अत्यंत भाग्यशाली माना जाता है।

विपत तारा: जन्म नक्षत्र से तीसरा तारा अनिष्टप्रद माना गया है।

जन्म नक्षत्र से 3,12,21 वाँ नक्षत्र विपद तारा कहलाता है। इस नक्षत्र में बैठे ग्रह की दशा अंतर्दशा में जातक को विघ्न बाधा,क्लेश तथा विपत्ति का सामना करना होता है।

क्षेम तारा: जन्म नक्षत्र से चौथा तारा क्षेम तारा कहलाता है जो की अत्यंत कल्याण कारी माना गया है। इनमे क्रमश 4,13,22 वाँ तारा क्षेम में आते हैं। इस तारे की दशा में जातक स्नेह ,सम्मान,सहयोग तथा खूब संपत्ति अर्जित करता है।

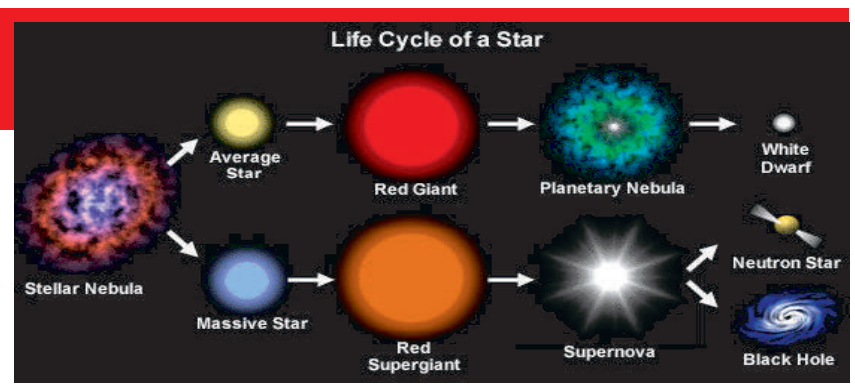

प्रत्यरि तारा: जन्म नक्षत्र से 5,14,23 वाँ नक्षत्र प्रत्यरि तारा कहलाता है। इस नक्षत्र में बैठे ग्रह की दशा में शत्रु बाधा,क्लेश पीड़ा आदि होती है।

साधक तारा: जन्म नक्षत्र से 6,15,24 वाँ नक्षत्र साधक तारा कहलाता है। इसका संबंध जातक के कार्य सिद्धि,लक्ष्य प्राप्ति और सफलता से है।

वध तारा: जन्म नक्षत्र से 7,16,25 वाँ तारा वध तारा कहलाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इन नक्षत्र में बैठे ग्रहों की दशा अंतर्दशा में जातक को मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट प्राप्त होता है।

मित्र तारा : जन्म नक्षत्र से 8,17 और 26 वाँ तारा मित्र तारा कहलाता है। इन नक्षत्र में बैठे ग्रह की दशा में जातक को मित्र सुख तथा सहयोग प्राप्त होता है। पिता के नक्षत्र से 8,17,26 वें नक्षत्र में जन्मा शिशु पिता के लिए सुखकारी,मित्रवत व्यवहार करने वाला होता है।

अतिमित्र तारा: जातक के जन्म नक्षत्र से 9,18 तथा 27 वाँ तारा अतिमित्र तारा कहलाता है। जैसा कि नाम से ही प्रतीत हो रहा है कि इस नक्षत्र में बैठे ग्रहों की दशा अंतर्दशा में जातक को धन , मान सम्मान तथा सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है।

बिना एक भी पैसा खर्च किए इस तरीके से लगा सकते हैं गुड़हल का नया पौधा, लाल-लाल फूलों से भर जाएगा गार्डन

गुड़हल का पौधा देखने में बेहद सुंदर होता है। इसके फूल लाल सफेद हल्के गुलाबी रंगों में उगते हैं जो गार्डन की खूबसूरती पर चार चांद लगा देते हैं। ऐसे में अगर आप भी अपने गार्डन में गुड़हल का पौधा लगाना चाहते हैं तो स्टेम कटिंग तकनीक का इस्तेमाल कर सकते हैं। आइए जानें कैसे करते हैं स्टेम कटिंग तकनीक।

नई दिल्ली। गुड़हल (Hibiscus Plants) एक सुंदर और रंगीन फूलों वाला पौधा है, जो न केवल बगीचे की शोभा बढ़ाता है, बल्कि इसके फूलों का इस्तेमाल आयुर्वेदिक और ब्यूटी प्रोडक्ट्स में भी किया जाता है। गुड़हल का पौधा लगाने और उगाने के लिए स्टेम कटिंग (तना काटकर) विधि सबसे आसान और असरदार तरीकों में से एक है।

इस विधि से गुड़हल का नया पौधा जल्दी तैयार हो जाता है और आपको नया पौधा खरीदने के लिए पैसे भी नहीं लगाने पड़ते (Grow Hibiscus Plant For Free)। आइए जानते हैं कि गुड़हल की स्टेम काटकर नया पौधा कैसे उगाएं।

सही समय चुनें

गुड़हल की कटिंग लगाने का सबसे अच्छा समय वसंत ऋतु (मार्च-अप्रैल) या मानसून का मौसम (जून-जुलाई) होता है। इस समय मौसम नम और गर्म होता है, जो पौधे के विकास के लिए अनुकूल होता है।

स्टेम कटिंग तैयार करना

स्वस्थ और मैच्योर गुड़हल के पौधे से एक तना चुनें। यह तना लगभग 6-8 इंच लंबा होना चाहिए।

तने को 45 डिग्री के कोण पर काटें। इससे पानी और पोषक तत्वों का अब्जॉर्प्शन बेहतर होता है।

तने के निचले हिस्से की पत्तियों को हटा दें, ताकि वह हिस्सा मिट्टी में दब सके। ऊपरी हिस्से में 2-3 पत्तियां छोड़ दें, जो फोटो सिंथेसिस में मदद करेंगी।

रूटिंग हार्मोन का इस्तेमाल (ऑप्शनल)

कटिंग को जड़ें जल्दी विकसित करने में मदद के लिए रूटिंग हार्मोन पाउडर का इस्तेमाल किया जा सकता है। कटिंग के निचले हिस्से को पानी में डुबोकर फिर रूटिंग हार्मोन में लगाएं। यह कदम ऑप्शनल है, लेकिन यह सफलता दर बढ़ा सकता है।

मिट्टी तैयार करना

गुड़हल के पौधे के लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी सबसे बेहतर होती है। मिट्टी में बालू, कोकोपीट और कम्पोस्ट मिलाकर इसे हल्का और पोषक तत्वों से भरपूर बनाएं। गमले या ग्रो बैग में मिट्टी भरें और उसे अच्छी तरह से नम करें।

कटिंग लगाना

मिट्टी में एक छोटा सा गड्ढा बनाएं और कटिंग को उसमें डालें। कटिंग का लगभग एक तिहाई हिस्सा मिट्टी में दबा होना चाहिए।

सेंटरफ्रूट ने कुंभ मेले के "जीभ लपलपाने वाले" स्ट्रीट फ़ूड का किया प्रदर्शन

सुषमा रानी मुख्य संवाददाता

नेशनल, – महाकुंभ मेला एक अनोखा अनुभव है, जहां रंग, ध्वनियां और स्वाद मिलकर यादगार पल बनाते हैं। मेले की एक खास बात है यहां मिलने वाला विविध और स्वादिष्ट भोजन है। चटपटी चाट से लेकर गरमा-गरम जलेबियों तक, कुंभ का स्ट्रीट फूड सिर्फ पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि एक साझा आनंद भी है, यात्रा की थकान मिटाने का अवसर और महोत्सव के बीच स्वाद का एक खास पड़ाव है।

इस साल, सेंटरफ्रूट ने महाकुंभ मेले के स्वाद के अनुभव को और भी मजेदार बना दिया है। मेले में आने वाले लोगों को सबसे बेहतरीन स्ट्रीट फूड स्टॉल तक पहुँचाने के लिए 200 से अधिक फूड स्टॉल्स पर आकर्षक बैनर लगाए गए, जिससे वे आसानी से टेस्टी फूड्स का आनंद ले सकें और हर फूड स्टॉप एक 'जीभ लपलपाई' पल बन जाए। इस खोज को और आसान बनाने के लिए, सेंटरफ्रूट के 'कैसी जीभ लपलपाई' बिलबोड्र्स पूरे शहर और स्थानीय टैक्सियों में भी

लगाए गए है, जो मेले के सबसे लोकप्रिय फूड हॉटस्पॉट तक सीधा मार्ग दिखा रहे थे। चाहे कोई चटपटा स्ट्रीट स्नैक हो या कोई प्रसिद्ध स्थानीय फूड्स, सेंटरफ्रूट ने फूडीज़ को महाकुंभ मेले में सबसे बेहतरीन टेस्ट तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई !

इस अनोखी पहल पर अपनी बात रखते हुए, परफेटी वैन मेल इंडिया के मार्केटिंग डायरेक्टर, गुंजन खेतान ने कहा, "खाना कुंभ मेले के अनुभव का एक अहम हिस्सा है, जो लोगों को जोड़ता है और यादगार बना देता है। 'कैसी जीभ लपलपाई' के जरिए, मेहमानों को सबसे बेहतरीन फूड स्टॉल तक पहुँचाने के साथ-साथ हर बाइट के बाद सेंटरफ्रूट के फ्रूटी स्वाद का मज़ा देने के लिए हम इस अनुभव को और भी खास बना रहे हैं।"

13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक चलने वाले इस महाकुंभ मेले में लाखों श्रद्धालु जुट रहे हैं, सेंटरफ्रूट इस भव्य मेले में टेस्ट का अनोखा तड़का लगाकर हर फूड स्टॉप को खुशियों से भर रहा है। तो अगली बार कुंभ में भूख लगे, तो बस दिए गए साइंस को फॉलो करें, क्योंकि अगले फूड स्टॉल पर 'जीभ लपलपाए' का खास लम्हें आपका इंतजार कर रहा है! इस पहल के तहत, सेंटरफ्रूट अपनी नई मुहिम 'कैसी जीभ लपलपाई' को और आगे बढ़ा रहा है, जिससे कुंभ के विजिटर्स को सबसे टेस्टी (और जीभ लपलपाने वाले) स्ट्रीट फूड स्टॉल्स तक पहुँचने में मदद मिले। यह हर फूड स्टॉल के अनुभव को और भी फनी, यादगार और टेस्ट से भरपूर बनाने का प्रयास है।

Shrinkflation क्या है और यह कैसे उपभोक्ताओं को प्रभावित करती है?

संजय अग्रवाला, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल

आर्थिक दुनिया में बदलाव के कई स्वरूप होते हैं, जिनमें से एक अत्यंत चतुराई से लागू किया जाने वाला तरीका है—₹Shrinkflation₹। यह शब्द दो अलग-अलग शब्दों ₹Shrink₹ (सिकुड़ना) और ₹Inflation₹ (मुद्रास्फीति) के मेल से बना है, जिसका अर्थ है किसी उत्पाद की मात्रा या गुणवत्ता को घटा देना, लेकिन उसकी कीमत को बनाए रखना या बढ़ा देना। यह उपभोक्ताओं के लिए एक प्रकार की छिपी हुई महंगाई होती है, जो बिना स्पष्ट संकेत के उनकी जेब पर असर डालती है। जब महंगाई बढ़ती है और उत्पादन की लागत में वृद्धि होती है, तो कंपनियां आमतौर पर दो तरीकों से प्रतिक्रिया देती हैं—या तो वे कीमतें बढ़ा देती हैं, या फिर वे उत्पाद की मात्रा को घटाकर उसी कीमत पर बेचना जारी रखती हैं। दूसरे विकल्प को ही ₹Shrinkflation₹ कहा जाता है। यह उपभोक्ताओं को सीधे नज़र नहीं आता, क्योंकि उन्हें लगता है कि वे वही उत्पाद खरीद रहे हैं, जबकि वास्तव में उन्हें पहले की तुलना में कम मात्रा मिल रही होती है। इस प्रवृत्ति के पीछे मुख्य कारण उत्पादन लागत में वृद्धि होती है, जिसमें कच्चे माल, श्रम, परिवहन और अन्य व्यय शामिल होते हैं। जब इन लागतों में बढ़ोतरी होती है, तो कंपनियों को अपने मुनाफे की सुरक्षा के लिए कोई न कोई तरीका अपनाना पड़ता है। यदि वे सीधे कीमतें बढ़ा दें, तो उपभोक्ता शायद दूसरी कंपनियों के सस्ते विकल्पों की ओर रुख कर सकते हैं। इसलिए, वे उत्पाद की मात्रा में सूक्ष्म परिवर्तन करके अपनी बिक्री बनाए रखते हैं, जबकि उपभोक्ता को यह अहसास तक नहीं होता कि वे पहले से कम पा रहे हैं।

Shrinkflation का सबसे बड़ा प्रभाव उपभोक्ताओं पर पड़ता है, क्योंकि वे समान मूल्य चुकाने के बावजूद पहले की तुलना में कम उत्पाद प्राप्त कर रहे होते हैं। यह प्रभाव अक्सर धीरे-धीरे महसूस होता है, क्योंकि कंपनियां मात्रा को अचानक नहीं घटातीं, बल्कि यह प्रक्रिया क्रमिक रूप से होती है। उदाहरण के लिए, किसी चॉकलेट बार का वजन 50 ग्राम से घटाकर 45 ग्राम कर दिया जाता है, या किसी स्नैक पैक में चिप्स की संख्या कम कर दी जाती है, लेकिन पैकेजिंग का आकार लगभग वैसा ही रखा जाता है ताकि उपभोक्ता को यह परिवर्तन तुरंत समझ न आए। Shrinkflation का सबसे अधिक असर उन उत्पादों पर देखा जाता है जो रोजमर्रा की जरूरतों से जुड़े होते हैं, जैसे कि खाद्य पदार्थ, पेय पदार्थ, साबुन, टॉयलेट पेपर और अन्य उपभोक्ता वस्तुएं। कई बार यह प्रक्रिया इतनी सूक्ष्म होती है कि जब तक उपभोक्ता इसे महसूस करते हैं, तब तक वे लंबे समय से इस बदलाव का सामना कर रहे होते हैं। कुछ मामलों में, कंपनियां केवल मात्रा ही नहीं, बल्कि उत्पाद की गुणवत्ता भी घटा देती हैं। उदाहरण के लिए, किसी स्नैक के अंदर इस्तेमाल किए जाने वाले उच्च गुणवत्ता वाले घटकों की जगह सस्ते विकल्पों को शामिल किया जा सकता है, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

Shrinkflation न केवल उपभोक्ताओं के लिए चुनौतीपूर्ण होती है, बल्कि यह आर्थिक असमानता को भी बढ़ा सकती है। निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोग, जो पहले से ही अपनी आवश्यकताओं के लिए सीमित बजट में गुजारा कर रहे होते हैं, Shrinkflation के कारण और अधिक दबाव में आ जाते हैं। उनके लिए यह महंगाई की एक छिपी हुई मार होती है, क्योंकि वे बिना किसी स्पष्ट मूल्य वृद्धि के ही अधिक खर्च करने को मजबूर होते हैं। इस प्रवृत्ति का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह उपभोक्ताओं की मनोवैज्ञानिक धारणा पर भी प्रभाव डालती है। जब लोग कीमतों में स्पष्ट वृद्धि देखते हैं, तो वे अपने खर्चों को नियंत्रित करने के लिए कदम उठाते हैं, जैसे कि किसी महंगे उत्पाद को छोड़कर किसी सस्ते विकल्प की तलाश करना। लेकिन जब उत्पाद की मात्रा धीरे-धीरे घटाई जाती है, तो उपभोक्ताओं को इस बदलाव का एहसास धीरे-धीरे होता है और वे इसे अनदेखा कर सकते हैं। कई बार, उपभोक्ता केवल तब जागरूक होते हैं जब वे किसी उत्पाद को बार-बार खरीदते हैं और ध्यान देते हैं कि यह अब पहले की तुलना में जल्दी खत्म हो रहा है। Shrinkflation का एक दिलचस्प पहलू यह भी है कि कंपनियां इसे छिपाने के लिए विभिन्न विपणन रणनीतियों का उपयोग करती हैं। कभी-कभी वे पैकेजिंग डिजाइन को बदलकर या ₹नया और बेहतर₹ जैसे शब्दों का उपयोग करके इस बदलाव को कम करने का प्रयास करती हैं। कई मामलों में, उत्पाद के आकार को बदल दिया जाता है ताकि उपभोक्ता को लगे कि यह पहले जैसा ही है, जबकि वास्तव में अंदर मौजूद उत्पाद की मात्रा कम हो चुकी होती है। उदाहरण के लिए, किसी जूस के पैकेट की ऊंचाई बढ़ाकर उसकी चौड़ाई घटा दी जाती है, जिससे उपभोक्ता को यह आभास होता है कि यह पहले जैसा ही है, जबकि इसमें कम तरल पदार्थ होता है।

इस समस्या का समाधान उपभोक्ताओं की जागरूकता में निहित है। यदि उपभोक्ता खरीदारी करते समय उत्पाद की मात्रा और वजन पर ध्यान दें, तो वे Shrinkflation को पहचान सकते हैं। कई देशों में उपभोक्ता संगठनों और नियामक एजेंसियों ने इस प्रवृत्ति पर नजर रखने के लिए कदम उठाए हैं, लेकिन अभी भी यह एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि Shrinkflation बाजार की एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है और कंपनियों के पास इसे अपनाने के अलावा कोई और रास्ता नहीं होता, क्योंकि वे अपनी लागतों को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष कर रही होती हैं। हालांकि, इस तर्क का एक दूसरा पक्ष भी है—यदि कंपनियां पूरी पारदर्शिता के साथ कीमतें बढ़ाएं, तो उपभोक्ताओं को कम से कम यह स्पष्ट रूप से पता तो चले कि वे अधिक भुगतान कर रहे हैं। लेकिन Shrinkflation के माध्यम से कीमतें अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ाई जाती हैं, जिससे उपभोक्ताओं के पास अपनी खरीदारी को लेकर सूचित निर्णय लेने की क्षमता सीमित हो जाती है। अंततः, Shrinkflation एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया है जो उपभोक्ताओं को बिना उनकी जानकारी के प्रभावित करती है और उनकी क्रय शक्ति को धीरे-धीरे कमजोर करती है। यह एक सूक्ष्म लेकिन प्रभावशाली रूप से लागू की जाने वाली रणनीति है, जिससे उपभोक्ता को कम उत्पाद मिलता है, लेकिन वह इसे सीधे समझ नहीं पाता। यह बाजार की एक स्वाभाविक प्रक्रिया हो सकती है, लेकिन यदि उपभोक्ता जागरूक रहें और अपनी खरीदारी के प्रति सतर्क रहें, तो वे इस छिपी हुई महंगाई से बच सकते हैं।

वैभव नहीं, व्यवहार बनाता है महान, [हर मुलाकात में बोएँ सम्मान के बीज]

सच्ची महानता वह नहीं जो पद, प्रतिष्ठा या संपदा के बल पर ऊँचा उठे और आँखों को चौंधिया दे, बल्कि वह है जो विनम्रता के अनमोल रत्न से हृदय को प्रकाशित करे। ऐसा व्यक्ति, जो शिखर की चोटी पर बैठकर भी अपनी जड़ों को न भूले, जो हर मुलाकात में अपनी विशालता का प्रदर्शन न करे, बल्कि सामने वाले के मन में आत्म-सम्मान और निडरता का प्रचंड ज्वार उत्पन्न कर दे, वही इस संसार में महान कहलाने का सच्चा अधिकारी है। महानता का मोल केवल ऊँचाइयों को छूने से नहीं आँका जाता, अपितु उस शक्ति से तय होता है जो दूसरों को अपने संग गर्व का आकाश छूने का संबल देती है। यह वह अग्नि है जो स्वयं को जलाकर दूसरों को आलोकित करती है, वह दीप है जो तूफानों में भी स्थिर रहकर मार्ग दिखाता है।

अहंकार वह विष है जो मनुष्य को अपने ही लोगों से काट देता है। जब कोई अपनी उपलब्धियों के मद में डूबकर स्वयं को सर्वोच्च और दूसरों को हेय समझने लगे, तो उसकी सत्ता का महल रेत का ढेर बन जाता है, जो एक झोंके में बिखरने को तैयार रहता है। इतिहास की पुस्तकें चीख-चीखकर कहती हैं कि जिन्होंने अपनी ताकत और वैभव का दंभ भरा, वे अंततः न केवल पराजित हुए, बल्कि एकाकीपन के अंधेरे में खो गए। इसके ठीक विपरीत, जिन्होंने हर इंसान के प्रति प्रेम, करुणा और अपनत्व का आलिंगन किया, वे समय की सीमाओं को लाँघकर युगों तक अमर हो उठे। महात्मा गांधी का सादा चरखा, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का सपनों से भरा विज्ञान, और मदर टेरेसा की सेवा की ममता – इन सबमें एक समानता थी: चाहे वे किसी राजा से मिलें या रंक से, उनके व्यवहार में कभी भेदभाव का स्वर नहीं गूँजा। यही वह प्रबल शक्ति थी, जो लोगों के हृदय को झकझोर देती थी और उनके भीतर प्रेरणा की ज्वाला प्रज्वलित कर देती थी।

महानता का असली मापदंड भव्यता या शब्दों की गर्जना नहीं, बल्कि वह सौम्यता है जो किसी को उसकी अपनी महत्ता का बोध कराए। एक सच्ची मुस्कान, प्रेम से भरी नजर, या हृदय से निकला उत्साहवर्धन का एक शब्द किसी के जीवन में क्रांति ला सकता है। यह जरूरी नहीं कि सम्मान के लिए सोने-चाँदी के उपहार बरसाए जाएँ; कभी-कभी एक क्षण का सच्चा ध्यान, एक बात का गहरा मोल देना ही किसी को यह अहसास दिला देता है कि वह इस विशाल सृष्टि में अद्वितीय और अनमोल है। जब कोई व्यक्ति यह अनुभव करता है कि उसकी उपस्थिति मायने रखती है, तो उसके भीतर सोई संभावनाएँ जाग उठती हैं, और वह अपनी क्षमताओं के नए क्षितिज छूने को आतुर हो उठता है। यह वह जादू है जो साधारण को असाधारण बना देता है।

समाज का ताना-बाना तभी अटूट होता है, जब उसमें आत्मीयता, समानता और सम्मान के धागे मजबूती से बुने जाएँ। जब कोई बड़ा अपने व्यवहार की शालीनता से छोटे को यह एहसास दिलाए कि वह भी उतना ही मूल्यवान है, तो वह न केवल एक व्यक्ति को ऊँचा उठाता है, बल्कि पूरे समाज में सौहार्द और प्रेम का बीज बोता है। हमारे शब्द और कर्म किसी के आत्म-विश्वास को आकाश दे सकते हैं या उसे धराशायी कर सकते हैं। इसीलिए हर मुलाकात को एक अवसर मानें – ऐसा अवसर जिसमें हमारा आचरण किसी के हृदय में आत्म-गौरव की अग्नि प्रज्वलित करे। ज्ञान, अनुभव या पद को ढोल पीटकर प्रदर्शित करना आसान है, किंतु उसे प्रेमपूर्वक बाँटकर दूसरों के जीवन को समृद्ध करना ही सच्ची कला और शक्ति है।

सच्ची महानता आत्ममुग्धता की संकरी गलियों में नहीं पनपती, बल्कि दूसरों को वैभव के शिखर तक ले जाने की उदात्त विशालता में फलती-फूलती है। जो केवल अपने लिए साँस ले, उसे यह विश्व भुला देता है, पर जो दूसरों के जीवन को अपने प्रकाश से दीप्तिमान कर दे, वह चिरंजन बनकर इतिहास के पन्नों पर अंकित हो जाता है। हर मनुष्य इस सृष्टि का एक अनुपम रंग है, और उसे यह तेजस्वी अनुभूति कराना – कि वह इस विराट कैनवास का अपरिहार्य हिस्सा है – यही बड़प्पन का प्रखर स्वरूप है। महान वह नहीं जो स्वयं को ऊँचा दिखाए, बल्कि वह है जो अपनी ऊँचाई को दूसरों के कंधों तक ले आए, ताकि वे भी इस संसार के अनंत विस्तार में अपनी जगह तलाश सकें। यही महानता का चरमोत्कर्ष है – एक ऐसा शिखर, जहाँ ₹मैं₹ का अंत हो और ₹हम₹ का उदय हो।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आँखों की अनदेखी न करें... Don't Ignore Your Eyes...

ग्लूकोमा यानी काला मोतिया...

ग्लूकोमा भारत में अंधेपन के प्रमुख कारणों में से एक कारण काला मोतिया या ग्लूकोमा है।

इस बीमारी के कारणों को देखने के पहले हमें आँख की रचना समझना होगी।

आँख में स्थित कॉर्निया के पीछे आँखों को सही आकार और पोषण देने वाला तरल पदार्थ होता है, जिसे एक्वेस ह्यूमर कहते हैं।

लेंस के चारों ओर स्थित सीलियरी टिश्यू इस तरल

पदार्थ को लगातार बनाते रहते हैं।

और यह द्रव पुतलियों के द्वारा आँखों के भीतरी हिस्से में जाता है।

इस तरह से आँखों में एक्वेस ह्यूमर का बनना और बहना लगातार होता रहता है, स्वस्थ आँखों के लिए यह जरूरी है।

आँखों के भीतरी हिस्से में कितना दबाव रहे यह तरल पदार्थ की मात्रा पर निर्भर रहता है।

जब ग्लूकोमा होता है तब हमारी आँखों में इस तरल पदार्थ का दबाव बहुत बढ़ जाता है। कभी-कभी आँखों की बहाव नलिकाओं का मार्ग रुक जाता है, लेकिन सीलियरी

ऊतक इसे लगातार बनाते ही जाते हैं।

ऐसे में जब आँखों में ऑप्टिक नर्व के ऊपर पानी का दबाव अचानक बढ़ जाता है तो ग्लूकोमा हो जाता है।

अगर आँखों में पानी का इतना ही दबाव लंबे समय तक बना रहता है तो इससे आँखों की ऑप्टिक नर्व नष्ट हो सकती है।

समय रहते यदि इस बीमारी का इलाज नहीं कराया जाता तो इससे दृष्टि पूरी तरह जा सकती है।

ग्लूकोमा के प्रकार..

ओपन एंगल ग्लूकोमा- अधिकांश रुप से यही ग्लूकोमा

होता है।

इसमें तरल पदार्थ मुख्यतः आँखों की

पुतलियों से होकर आँखों के दूसरे भागों में बहता है और द्रव वहाँ नहीं पहुँचता जहाँ इसे छाना जाता है।

जिससे आँखों में इस द्रव का दबाव बढ़ जाता है कि दृष्टि कमजोर हो जाती है।

लो टेंशन या नॉर्मल एंगल ग्लूकोमा -

इसमें आँखों की

तंत्रिका नष्ट हो जाती है और देखने की क्षमता में कमी आ जाती है।

एंगल क्लोजर ग्लूकोमा -

इस प्रकार के ग्लूकोमा में आँखों के द्रव का दबाव अचानक ही बहुत बढ़ जाता है, और दबाव को कम करने के लिए तुरंत इलाज की आवश्यकता होती है।

कन्जनाइटल ग्लूकोमा -

इसमें जन्म से बच्चे को ग्लूकोमा के लक्षण पाए जाते हैं।

क्या होते हैं लक्षण. ?

अधिकांश लोगों को ग्लूकोमा के बारे में कम ही जानकारी है इसलिए इसके लक्षणों को तब तक

पहचाना नहीं जाता जब तक कि उन्हें आँखों से कम नहीं दिखाई देने लगता !

इस बीमारी के शुरुआती दौर में जब आँखों की तंत्रिकाओं की कोशिकाएँ मामूली रूप से टूटने लगती हैं तो आँखों के सामने छोटे छोटे बिंदु और रंगीन धब्बे दिखाई देते हैं।

पहले पहल लोग इन लक्षणों को गंभीरता से नहीं लेते परिणामस्वरुप उन्हें हमेशा के लिए अपनी आँखों की रोशनी खोनी पड़ती है।

ग्लूकोमा के जितने भी प्रकार हैं उनमें से एक्यूट एंगल-

क्लोजर ग्लूकोमा के लक्षणों की पहचान पहले से की जा सकती है क्योंकि यह बीमारी धीरे धीरे आती है।

इसके प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं..

लेकिन अलग अलग लोगों में ये अलग हो सकते हैं. !

आँखों के आगे इंद्रधनुष जैसी रंगीन रोशनी का घेरा दिखाई देना,

सिर में चक्कर और मितली आना,

आँखों में तेज दर्द

होना आदि।

हालाँकि एक्यूट एंगल ग्लूकोमा के ये लक्षण आँखों की दूसरी समस्याओं में भी देखे जा सकते हैं।

उपरोक्त लक्षणों में से अगर आपको या आपके परिवार के किसी सदस्य को किसी भी लक्षण का आभास हो तो आप तत्काल नेत्र रोग विशेषज्ञ से सलाह लें।

इन बातों से रहें सावधान

ग्लूकोमा के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि सामान्य रुप से पहले इसके कोई विशेष लक्षण दिखाई नहीं देते, जिनके आधार पर बीमारी को पहचाना जा सके।

फिर भी इस संबंध में कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिए-

अगर परिवार में माता पिता को ग्लूकोमा है तो बच्चों को भी यह बीमारी हो सकती है।

अगर आप चश्मा पहनते हैं तो आप अपनी आँखों की नियमित जाँच जरूर करवाएँ।

डायबिटीज से पीड़ति लोगों को ग्लूकोमा का खतरा बना रहता है।

ब्लड प्रेशर बहुत अधिक या कम होने पर भी ग्लूकोमा हो सकता है। इसलिए अगर आपका ब्लडप्रेशर बहुत ज्यादा या कम रहता हो तो आपको नियमित रूप से आँखों की जाँच करवानी चाहिए।

हृदय रोग भी इस बीमारी का एक कारण है।

अगर आप हैं 40 वर्ष से अधिक के हैं तो वर्ष में एक बार

आँखों की जाँच जरूर कराएँ।

अगर छोटे बच्चे की आँखें सामान्य आकार से बड़ी दिखती हों, बच्चा सूर्य की रोशनी को सहन नहीं कर पाता हो या उसकी आँखों से पानी आता हो

तो तुरंत जाँच करनी चाहिए।

कैसे होता है उपचार..

ग्लूकोमा की पहचान सिर्फ एक नेत्र चिकित्सक ही

आँखों की विस्तृत जाँच के द्वारा कर सकता है।

इसकी जाँच मुख्यतः चार भागों में की जाती है-

पहले सामान्य नेत्र परीक्षण किया जाता है, जिससे

आँखों की दृष्टि क्षमता मापी जाती है।

इसके बाद आँखों में थोड़ी देर तक आई ड्राप डालकर रखते हैं।

उसके बाद मशीन से रेटिना और आँखों की तंत्रिका की गहन जाँच की जाती है।

आँखों के साइड विजन की जाँच में वह कमजोर निकलता है।

इसलिये खुद डॉक्टर न बनें और सीधे अपनी आंखों की अच्छे डॉक्टर से चेक करवायें।

नेता प्रतिपक्ष आतिशी के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी के विधायक विधानसभा के बाहर धरने पर बैठे, बाबा साहब के जमकर लगाए नारे

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली विधानसभा सत्र के दूसरे दिन मंगलवार को आम आदमी पार्टी ने विधानसभा स्थित मुख्यमंत्री और मंत्रियों के कार्यालय से बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की तश्वीर हटाने का मुद्दा सदन के अंदर उठाया। दिल्ली की पूर्व सीएम और नेता प्रतिपक्ष आतिशी के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी के विधायकों ने सदन में बाबा साहब के नारे लगाकर अपना विरोध जताया। इस पर भाजपा ने ''आप'' के सभी विधायकों को सदन से बाहर निकवा दिया। सदन से निष्कासित करने के विरोध में नेता प्रतिपक्ष आतिशी समेत आम आदमी पार्टी के सभी विधायक विधानसभा के बाहर धरने पर बैठ गए और जय भीम, बाबा साहब का यह अपमान, नहीं सहेगा हिन्दुस्तान समेत तमाम नारे लगाकर प्रदर्शन किया।

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि भाजपा ने बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर की फोटो की जगह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीर लगा दी है। मुख्यमंत्री कार्यालय में जहां बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर की तस्वीर होती थी, वहां अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तस्वीर लग गई है। विधानसभा के मुख्यमंत्री कार्यालय में भी जहां बाबा साहब की तस्वीर होती थी, वहां अब प्रधानमंत्रीनरेंद्र मोदी की तस्वीर लग गई है। दिल्ली सरकार के कार्यालयों में जहां बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर की तस्वीर होती थी, अब वहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीर लग गई है।

एलओपी आतिशी ने कहा कि मैं भाजपा से पूछना चाहती कि क्या उन्हें नरेंद्र मोदी, बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर से बड़े लगते हैं? भाजपा को इतना अहंकार हो गया है कि उन्हें लगता है कि नरेंद्र मोदी बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर की जगह ले सकते हैं? आम आदमी पार्टी ने इसी के खिलाफ प्रदर्शन किया। आज जब हमने विधानसभा में बाबा साहब के नाम के नारे लगाए तो आम आदमी पार्टी के विधायकों को निष्कासित कर दिया गया। वही जब भाजपा के विधायकों ने प्रधानमंत्री मोदी के नारे लगाए तो उनको छुआ तक नहीं गया।

उन्होंने कहा कि इसका मतलब यह है कि भाजपा को बाबा साहब की तस्वीर और उनके नाम से नफरत है। भाजपा को लगता है कि मोदी जी बाबा साहब अम्बेडकर से बड़े हैं। देश के लोग भाजपा को उसके इस अहंकार का जवाब देंगे। जब तक बाबा साहब अम्बेडकर की तस्वीर उनकी जगह पर वापस नहीं लग जाती, तब तक हम सदन से लेकर सड़क तक इसके खिलाफ प्रदर्शन करते रहेंगे।

आतिशी ने आगे कहा कि इस देश का विकास अगर किसी ने किया है तो उसका नाम बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर हैं। जो सरकार बाबा साहब अंबेडकर की तस्वीर हटाकर अपनी शुरुआत करती हैं, उसने यह साफ कर दिया है कि वह किस तरह का विकास चाहते हैं।

आतिशी ने कहा कि भाजपा दोबारा उसी स्थान पर बाबा साहब की तस्वीर लगा दे, हम सदन में वापस आ जाएंगे। वह दोबारा तस्वीर लगा दें तो सारी बात ही खत्म हो जाएगी। लेकिन सच्चाई यह है कि वह बाबा साहब भीमराव अंबेडकर से नफरत करते हैं। ये लोग बाबा साहब की तस्वीर और उनके नाम से नफरत करते हैं।

नीतिगत दस्तावेज के रूप में सरकार 'विकसित दिल्ली' संकल्प पत्र को अंगीकार करेगी-उपराज्यपाल

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली ।दिल्ली में मुख्यमंत्री नियुक्त होते ही सभी मंत्रियों के शपथ लेने के बाद से ही विधानसभा में सत्र शुरू हो गया। दिल्ली में आज विधानसभा सत्र का दूसरा रहा है। विधानसभा सत्र के दूसरे दिन की शुरुआत उपराज्यपाल वीके सक्सेना के अभिभाषण से हुई। इस दौरान बीच में आम आदमी पार्टी के विधायकों ने जमकर हंगामा किया।

वीके सक्सेना ने कहा कि दिल्ली की जनता ने विकसित दिल्ली संकल्प पत्र में विश्वास जताकर नई सरकार को जनादेश देकर सेवा का अवसर दिया है। उनका कहना है कि मेरी सरकार पारदर्शी और जवाबदेह शासन देने के लिए संकल्पबद्ध है जहां भ्रष्टाचार के लिए कोई स्थान नहीं होगा। दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने कहा, 'पिछले 10 वर्षों में पिछली सरकार द्वारा खेले गए आरोप-प्रत्यारोप के खेल ने दिल्ली को बहुत प्रभावित किया है' मेरी सरकार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए प्रतिस्पर्धी और सहकारी संघवाद के सिद्धांतों के अनुसार, केंद्र और अन्य राज्यों के साथ काम करेगी।'

उन्होंने कहा कि अगले पांच साल में मेरी सरकार साधारण नागरिकों से संबंधित 5 बुनियादी जरूरतों समेत 10 क्षेत्रों पर व्यापक जोर देगी। भ्रष्टाचार मुक्त कुशल प्रशासन, सशक्त नारी, गरीब कल्याण, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार, उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था, विश्व स्तरीय सड़क परिवहन, स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त दिल्ली, यमुना का पुनरुद्धार, स्वच्छ जल, अनधिकृत कॉलोनियों का नियमितीकरण और किफायती आवास। सरकार की कोशिश रहेगी इन सभी कामों को समय से पूरा किया जाए।

उन्होंने कहा कि सरकार 'विकसित दिल्ली' संकल्प पत्र को नीतिगत दस्तावेज के रूप में अंगीकार करेगी। सभी विभागों को 100 दिन की योजना बनाकर विकास की रूपरेखा बनाने को कहा गया है। एलजी ने कहा कि मंत्रिमंडल ने पहली बैठक में ही भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की रिपोर्टों को विधानसभा के पटल पर रखे जाने का निर्णय लिया है, जिससे पिछली सरकार की प्रशासनिक कमियों को जानने और उन्हें दूर करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

एलजी ने कहा कि आने वाले कुछ महीनों में सरकार की पहली प्राथमिकता सड़कों, नालियों, सीवर लाइनों, स्वास्थ्य सुविधाओं और पीने के पानी की समस्या को दूर करने की होगी। सरकार अब तक की लचर और भ्रष्ट शासकीय व्यवस्था, जिसको विज्ञापनों के मायाजाल ने छुपा रखा था, उसे तत्काल प्रभाव से भ्रष्टाचार मुक्त कर सुदृढ़ और सुचारू बनाएगी।

"अडानी ने दो हजार करोड़ रुपए की रिश्वत देकर सेकी से सोलर मैन्युफैक्चरिंग का कांट्रैक्ट लिया और कई राज्यों को महंगी बिजली बेची"

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने 20 हजार करोड़ रुपए के बिजली घोटाले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गौतम अडानी के खिलाफ जांच कराने की मांग की है। ''आप'' की वरिष्ठ नेता और दिल्ली की पूर्व सीएम आतिशी ने कहा कि न्यूयॉर्क के प्रॉसीक्यूटर ने अडानी के पावर कॉर्पोरेशन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं और अमेरिका में अडानी के भ्रष्टाचार पर जब सवाल पूछे गए तो प्रधानमंत्री मोदी ने इसे व्यक्गित मामला बता दिया। आतिशी ने कहा कि अडानी ने दो हजार करोड़ रुपए की रिश्वत देकर सेकी से सोलर मैन्युफैक्चरिंग का कांट्रैक्ट लिया और महंगी बिजली बेचने के लिए ओडिशा, जम्मू-कश्मीर, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश सरकार को घूस देकर कॉन्ट्रेक्ट साइन करवाए।

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने पार्टी मुख्यालय में प्रेसवार्ता कर कहा कि देश के सामने 20 हजार करोड़ रुपए का एक घोटाला सामने आया है। पूरे देश ने देखा कि जब प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका गए और वहां उनसे अडानी के भ्रष्टाचार के ऊपर सवाल पूछे गए तो प्रधानमंत्री मोदी ने उसे व्यक्तिगत मामला बताया। किस तरह से न्यूयॉर्क के प्रॉसीक्यूटर ने अडानी के पावर कॉर्पोरेशन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं। लेकिन अब पूरा देश देख रहा है कि किस तरह गौतम अडाणी ने दो हजार करोड़ रुपए की घूस देकर सेकी (सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया) से सोलर मैन्युफैक्चरिंग के लिए कॉन्ट्रेक्ट लिया और किस तरह से महंगी बिजली बनाने का कॉन्ट्रेक्ट साइन किया गया।

आतिशी ने कहा कि देश भर में जब कोई भी सरकार यह महंगी बिजली खरीदने के लिए तैयार नहीं थी, तब किस तरह अडाणी ने ओडिशा, जम्मू-कश्मीर, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश की सरकारों को घूस देकर कॉन्ट्रेक्ट साइन करवाए। इन सरकारों से महंगी बिजली खरीदवाई। जिससे इन सरकारों को 20 हजार करोड़ रुपए का नुकसान हुआ और अडाणी को 20 हजार करोड़ रुपए का मुनाफा हुआ।

आतिशी ने कहा कि आज आम आदमी पार्टी देश के सामने अपनी दो मांगें रख रही है। हमारी मांग है कि अडानी के 20 हजार करोड़ रुपए के बिजली घोटाले पर अडानी और उनके दोस्त प्रधानमंत्री मोदी की जांच की जाए, जिससे कि देश की पांच सरकारों के माध्यम से जनता के 20 हजार करोड़ रुपए का घाटा हुआ। 20 हजार करोड़ रुपए का घोटाला हुआ। हमारी मांग है कि अडाणी के इस 20 हजार करोड़ रुपए के बिजली घोटाले में प्रधानमंत्री मोदी और गौतम अडानी के खिलाफ जांच की जाए।

सीएजी रिपोर्ट से पता चलता है कि पुरानी शराब नीति से सरकारी खजाने को नुकसान हो रहा था और इसमें बदलाव की बहुत जरूरत थी : आतिशी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के सदन में मंगलवार को दिल्ली शराब नीति पर पेश की गई कैग रिपोर्ट ने आम आदमी पार्टी के उस दावे पर अपनी मोहर लगा दी है कि पुरानी शराब नीति में भारी गड़बड़ी थी, डीलर कालाबाजारी करते थे और बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार हो रहा था। सीएजी रिपोर्ट से पता चलता है कि पुरानी शराब नीति से सरकारी खजाने को नुकसान हो रहा था और इसमें बदलाव की बहुत जरूरत थी। साथ ही, कैग रिपोर्ट ने इस पर भी मोहर लगाती है कि आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा पुरानी एक्साइज पॉलिसी को बदलने का फैसला सही था। कैग रिपोर्ट बताती है कि पुरानी नीति में जितनी शराब की बोलते बेची जाती थी, उसकी 28 फीसद कम रिपोर्टिंग करके मुनाफा कमाया जा रहा था।

''आप'' मुख्यालय में मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ और वरिष्ठ नेता जस्मीन शाह के साथ दिल्ली की पूर्व सीएम व नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने प्रेसवार्ता यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा लाई गई नई शराब नीति अधिक पारदर्शी थी। इससे कालाबाजारी रूकती और सरकार का राजस्व बढ़ता, लेकिन भाजपा के एलजी, ईडी, सीबीआई ने अड़चनें डालकर इसे लागू नहीं होने दी और इसकी वजह से दिल्ली सरकार को 2000 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। अगर इन्होंने नई नीति लागू करने दी होती तो मात्र एक साल में दिल्ली का एक्साइज रेवेन्यू 4,108 करोड़ से बढ़कर 8,911 करोड़ रुपए तक पहुंच जाता। 2022 में यही पॉलिसी ''आप'' की सरकार ने पंजाब में लागू की है और आज वहां एक्साइज रेवेन्यू 65 फीसद तक बढ़ गया है। इसलिए आम आदमी पार्टी की मांग है कि कैग रिपोर्ट के आधार पर एलजी, सीबीआई और ईडी के खिलाफ जांच की जाए, ताकि यह पता चले कि सरकार को 2 हजार करोड़ का घाटा क्यों करवाया गया?

आतिशी ने कहा कि आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार ने लगातार बार-बार पुरानी एक्साइज पॉलिसी में हो रहे भ्रष्टाचार को दिल्ली वालों के सामने रखा। आम आदमी पार्टी की दिल्ली सरकार ने बार-बार यह उजागर किया कि किस तरह पुरानी एक्साइज पॉलिसी में कालाबाजारी हो रही है और उसके शराब के दाम बढ़ाए जाते थे। किस तरह शराब निर्माता गलत दाम बताकर ज्यादा मुनाफा कमाते थे। आम आदमी पार्टी की सरकार ने बार-बार यह बताया कि पुरानी एक्साइज पॉलिसी से हो रहे भ्रष्टाचार और ब्रांड पुशिंग की वजह से लगातार हरियाणा और उत्तर प्रदेश से तस्करी करके शराब दिल्ली में आती रही है।

आतिशी ने आगे कहा कि आज आम आदमी पार्टी की बात पर कैग की रिपोर्ट ने भी मोहर लगा दी है कि 2017 से 2021 तक चली पुरानी एक्साइज पॉलिसी में हर प्रकार का भ्रष्टाचार हुआ। कैग की रिपोर्ट बताती है कि दो तरह से भ्रष्टाचार हो रहा था। पहला, जितनी शराब बेची जा रही थी, उसमें भ्रष्टाचार हो रहा था। क्योंकि सरकार के पास जो पैसा आता था, वह हर बोतल के हिसाब से आता था। यह सब जानते हैं कि शराब बेचने वाले लोग किस पार्टी से जुड़े हुए थे। सब जानते हैं कि वह किस पार्टी के लोग थे, जिन्हें शराब बेचने और शराब बनाने के ठेके मिले हुए थे। जब हर बोतल पर एक्सेस कैलकुलेट होता था, तब वह यह दिखाने में फर्जीवाड़ा करते थे कि कितनी बोतले बेची

आतिशी ने कहा कि आज कैग की रिपोर्ट ने यह साबित कर दिया है कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने पुरानी एक्साइज पॉलिसी को हटाकर सही फैसला लिया। कैग की रिपोर्ट यह भी बताती है की नई एक्साइज पॉलिसी की वजह से पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता बढ़ीं। उसमें ब्लैक मार्केटिंग को रोकने के तरीके थे। साथ ही उसमें दिल्ली सरकार के राजस्व को बढ़ाने की भी तरीके थे। आज कैग की रिपोर्ट अपने आठवें चैप्टर में बता रही है कि आदमी पार्टी की सरकार 2021 में जो नई एक्साइज पॉलिसी लेकर आई, उसकी वजह से दिल्ली सरकार का खजाना बढ़ता। नई पॉलिसी में पारदर्शिता थी। उसमें स्मगलिंग और ब्लैक मार्केटिंग रोकने के तरीके थे।

आतिशी ने कहा कि आज हमारी यह मांग है कि इस कैग की रिपोर्ट के आधार पर भाजपा के एलजी, सीबीआई और ईडी पर जांच हो, ताकि यह पता चले कि आखिरकार क्यों इस पॉलिसी को रोका गया? दिल्ली सरकार को क्यों दो हजार करोड़ रुपए का घाटा करवाया गया? इसकी जांच होनी चाहिए और इस पर एफआईआर होनी चाहिए।

भाजपा के हंगामे के बावजूद 100 गज या इससे कम के एरिया में बने मकानों के लिए हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ करने का प्रस्ताव भी पारित- महेश खिंची

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली नगर निगम की आम आदमी पार्टी की सरकार ने मंगलवार को एक साथ 12 हजार कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव सदन में पास करके एक इतिहास रच दिया। हालांकि सदन की बैठक के दौरान भाजपा के पार्षदों द्वारा जमकर हंगामा कर कार्य को बाधित किया और उन्होंने मेयर की माइक तक तोड़ दी। इसके बावजूद मेयर महेश कुमार खिंची ने कच्चे कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पास करा दिया। मेयर ने बताया कि भाजपा के हंगामे के बावजूद 100 गज या इससे कम के एरिया में बने मकानों के लिए हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ करने का प्रस्ताव भी पारित कर दिया गया। इसके तहत समय से हाउस टैक्स जमा करने पर 100 से 500 गज के मकानों पर 50 फीसद और 1300 रिहायशी सोसायटी को भी हाउस टैक्स में 25 फीसद की छूट मिलेगी।

दिल्ली नगर निगम के मेयर महेश कुमार खिंची ने मंगलवार को एमसीडी के सदन में हुए हंगामे के बाद प्रेस वार्ता को सम्बोधित किया। इस मौके पर डिप्टी मेयर रविंद्र भारद्वाज और नेता सदन मुकेश गोयल भी मौजूद थे। मेयर ने कहा कि आम आदमी पार्टी जनता से किए वादों को पूरा करने के लिए तत्पर है। उन्होंने कहा कि आज के सदन में बीजेपी के हंगामे के बावजूद हमने निगम के 12000 कर्मचारियों को नियमित करने का प्रस्ताव पारित कर दिया है। साथ ही 100 गज और उससे कम के क्षेत्र पर बने घरों के लिए हाउस टैक्स पूरी तरह से माफ करने सम्बन्धी प्रस्ताव भी पारित कर दिया गया है। मेयर ने बताया कि इसके तहत 100-500 गज के क्षेत्र के मकानों के लिए हाउस टैक्स को आधा कर दिया जाएगा। साथ ही 1300 रिहायशी सोसायटी को समय से हाउस टैक्स भरने पर हाउस टैक्स में 25 प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

मेयर महेश खिंची ने बताया कि सदन की बैठक में बीजेपी द्वारा किए गए हंगामे में दो ऑन टेबल प्रस्ताव भी पास कर दिए गए है। इसके साथ ही सदन की कार्यवाही अगली बैठक तक के लिए स्थगित कर दिया गया है।

नेता सदन मुकेश गोयल ने बताया कि सदन में 70 से ज्यादा पार्षद आम आदमी पार्टी के थे और इस प्रकार बैठक चलाने के कोरम पूरा था। नेता सदन ने कहा कि बैठक समय पर शुरू हुई और हर बार की तरह इस बार भी हंगामे की भेंट चढ़ गयी। उन्होंने कहा कि हम जनता को सुविधा देने की बात कर रहे थे और अगर भारतीय जनता पार्टी अगर जनता के हितो से सरोकार रखती तो उनको भी हमारे साथ इन प्रस्तावो का समर्थन करना चाहिए था, लेकिन इसके विपरीत उन्होंने हंगामा दिया।

नेता सदन ने कहा कि यह भाजपा की गुंडागर्दी है कि मेरे हाथ से एजेंडा छीन कर फेंक दिया गया और मेयर का माइक तोड़ दिया गया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी पूरी तरह से एक्सपोज़ हो गई है। इसे ना तो दिल्ली नगर निगम के कर्मचारियों से मतलब है और ना ही दिल्ली की जनता के हितो से कोई सरोकार है।

सांसद भोला सिंह मशहूर फैशन डिजाइनर अजीत राजोरा की शादी में आशीर्वाद देने पहुंचे

नई दिल्ली / बुलंदशहर भाजपा के लोकसभा सांसद भोला सिंह आज बॉलीवुड के मशहूर फैशन डिजाइनर अजीत राजोरा की शादी में दूल्हा दुल्हन को आशीर्वाद देने पहुंचे*

इस मौके पर भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के मीडिया सह प्रभारी गुरुजी राजू चंदेल ने नव दंपति को आशीर्वाद देते हुए उनके कुशल जीवन की कामना की तथा देश-विदेश से आए विशेष अतिथियों ने नव दंपति को आशीर्वाद देते हुए शुभकामनाएं दी इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी उत्तर पूर्वी जिला की जिला अध्यक्ष पूनम चौहान उत्तर पूर्वी जिला अनुसूचित जाति मोर्चा की वरिष्ठ उपाध्यक्ष दीपिका चंदेल एवं महामंत्री मोतीलाल उत्तर प्रदेश की विधायक सरोज सोनकर नव दंपत्ति के पिता भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता योगेंद्र राजोरा ने तमाम अतिथियों का भव्य स्वागत किया।

इस मौके पर बुलंदशहर के भाजपा सांसद भोला सिंह ने नव दंपति को आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमारे मशहूर फैशन डिजाइनर बहुत ही काबिल और होनहार सफल व्यक्ति हैं और मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनका दांपत्य जीवन भी इसी प्रकार सफल रहे ईश्वर से कामना करता हूं कि आगे जाकर वह अपने पारिवारिक जीवन में भी इसी प्रकार से कामयाब हो जिस प्रकार से उन्होंने अपने फैशन डिजाइनर के क्षेत्र में कामयाबी पाई है।

साकेत बार एशोसिएशन के चुनाव में सत्यजीत सिंह अध्यक्ष पद के प्रबल दावेदार

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। वरिष्ठ अधिवक्ता सत्यजीत कुमार सिंह की स्वच्छ छवि एवं अधिवक्ताओं की समस्याओं के समाधान के लिए कुछ भी कर जाने की प्रतिबद्धता के कारण साकेत बार एसोसिएशन के चुनाव में उन्हें अधिवक्ताओं का अपार समर्थन मिल रहा है।एडवोकेट सत्यजीत सिंह का कहना है कि इस बार बार एसोसिएशन के चुनाव में सत्य की ही जीत होगी। वर्ष 2015 में श्री सिंह साकेत बार एसोसिएशन के लिए एडिशनल सेक्रेटरी तथा 2018 में बार काउंसिल आफ इंडिया के मेंबर के लिए चुनाव लड़ चुके हैं। उनका कहना है कि अध्यक्ष पद पर अगर वह विजयी होते हैं तो उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता युवा अधिवक्ताओं के लिए चैंबर्स एवं सिटिंग की व्यवस्था की होगी।इसके अलावा लेडी बार रूम भी उनकी प्राथमिकता में शामिल है।श्री सिंह ने बताया कि फ्री वाई-फाई, वकालतनामा के माध्यम से अधिवक्ताओं को आर्थिक सहयोग,किफायती कैंटीन,प्रिंट कॉस्ट में कमी, शानदार कॉमन रूम की व्यवस्था,स्वच्छ पेयजल के लिए आरओ की व्यवस्था,रेस्ट रूम की सुविधा,सुविधाओं से सुसज्जित जीम, आदि कि व्यवस्था के प्रति वह कृत संकल्पित है। उनका कहना है कि अधिवक्ताओं की समस्याओं के समाधान की बात तो चुनाव के पूर्व सभी करते हैं परंतु चुनाव के बाद किसी भी समस्या का समाधान नहीं होता, जिस कारण अधिवक्ता अपने आप को ठगा महसूस करते हैं।उन्होंने कहा कि अधिवक्ताओं की डिग्निटी बनी रहे तथा वह आर्थिक तंगी के हालात से नहीं गुजरे और उन्हें अपना काम करने में किसी भी तरह की परेशानी नहीं हो इसका पूरा ध्यान रखा जाएगा।श्री सिंह ने कहा कि अधिवक्ताओं की सुरक्षा के लिए सरकार को शीघ्र ठोस निर्णय लेना चाहिए ताकि अधिवक्ता भयमुक्त होकर न्याय प्रक्रिया की अपनी जिम्मेदारी को निभा सकें।

महाशिवरात्रि पर प्रशासन रहेगा सख्त, श्रद्धालुओं के लिए विशेष इंतजाम; दूधेश्वरनाथ मंदिर जाने वाले लोग देख लें रूट

महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर गाजियाबाद स्थित दूधेश्वर नाथ मठ मंदिर में नगर निगम का कंट्रोल रूम स्थापित किया जाएगा। पर्व की तैयारियों को लेकर अधिकारियों ने काम शुरू कर दिया है। रविवार से मंदिर के आसपास बैरिकेडिंग का काम शुरू हो गया। नगर निगम सभी मंदिरों और शिवालयों के बाहर साफ-सफाई पेयजल और प्रकाश व्यवस्था को सुदृढ़ कर रहा है।

गाजियाबाद। शिवरात्रि पर बुधवार को दूधेश्वरनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए यातायात पुलिस ने डायवर्जन प्लान जारी किया है। मंगलवार शाम छह बजे से बुधवार रात 12 बजे तक जीटी रोड पर साजन मोड़ से मेरठ तिराहा तक सभी व्यवसायिक वाहनों का आवागमन बंद रहेगा।

चार स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था

गौशाला अंडरपास से जस्सीपुरा मोड़ के बीच सभी प्रकार के वाहनों के आवागमन पर रोक लगाई गई है। मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए पुलिस ने चार स्थानों पर पार्किंग की व्यवस्था की है।

एडीसीपी यातायात पीयूष कुमार सिंह ने बताया कि मंगलवार शाम छह बजे से डायवर्जन प्लान लागू हो जाएगा। किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर वाहन चालक यातायात हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क कर सकते हैं।

यहां रहेगा डायवर्जन

लाल कुआं व मेरठ तिराहा के बीच सभी तरह के व्यवसायिक वाहन नहीं चलेंगे। इन वाहनों को जीटी रोड पर साजन मोड़ से बुलंदशहर रोड औद्योगिक क्षेत्र में श्यामा प्रसाद मुखर्जी पार्क चौराहे से विवेकानंद नगर आरओबी आते हुए हापुड़ चुंगी से राजनगर एक्सटेंशन चौराहा होते हुए मेरठ रोड से मेरठ तिराहा आवाजाही करनी होगी।

चौधरी मोड़ से हापुड़ तिराहा के बीच हल्के व्यवसायिक वाहन भी नहीं चलेंगे। इन वाहनों को चौधरी मोड़ से अंबेकर रोड, पुराना बस अड्डा चौराहा, हापुड़ रोड से हापुड़ तिराहा आवाजाही करनी होगी।

हापुड चुंगी से ठाकुरद्वारा तिराहा की तरफ सभी व्यवसायिक वाहन प्रतिबंधित रहेंगे। इन वाहनों को हापुड़ चुंगी से राजनगर एक्सटेंशन चौराहा होते हुए मेरठ रोड से मेरठ तिराहे की तरफ आवाजाही करनी होगी।

पुराना बस अडडा से कोई भी बस या अन्य व्यावसायिक वाहन हापुड तिराहा की ओर नहीं जाएंगे। ऐसे वाहन घूकना मोड से मेरठ रोड होकर गंतव्य की तरफ जाएंगे। गऊशाला फाटक से दूधेश्वरनाथ मंदिर के बीच सभी तरह के वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

श्रद्धालुओं के लिए पार्किंग व्यवस्था

जीटी रोड और अंबेडकर रोड से आने वाले श्रद्धालुओं के लिए घंटाघर रामलीला मैदान में पार्किंग पी-एक बनाई गई है। यहां से श्रद्धालु पैदल मंदिर की तरफ जाएंगे।

नया बस अड्डा की ओर से आने वाले सभी श्रद्धालु ठाकुरद्वारा फ्लाईओवर पार कर अपने वाहन रामलीला मैदान घंटाघर पी-एक पार्किंग में खड़ा कर पैदल मंदिर जाएंगे।

हापुड़ रोड से आने वाले सभी श्रद्धालु अपने वाहन नवयुग मार्केट रोड पी-तीन पार्किंग में खड़ा कर पैदल मंदिर जाएंगे।

विजयनगर की ओर से आने वाले सभी श्रद्धालु अपने वाहन मिलिट्री ग्राउंड विजयनगर पी-चार पार्किंग में खड़ा कर पैदल मंदिर जाएंगे।

पुलिसकर्मियों के लिए शंभु दयाल डिग्री कालेज में पार्किंग पी-दो बनाई गई है।

श्रद्धालुओं के लिए खास इंतजाम

महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर दूधेश्वर नाथ मठ मंदिर में नगर निगम का कंट्रोल रूम स्थापित किया जाएगा। पर्व की तैयारियों को लेकर अधिकारियों ने काम शुरू कर दिया है। रविवार से मंदिर के आसपास बैरिकेडिंग का काम शुरू हो गया।

नगर निगम सभी मंदिरों और शिवालयों के बाहर साफ-सफाई, पेयजल और प्रकाश व्यवस्था को सुदृढ़ कर रहा है। मुख्य अभियंता निर्माण नरेंद्र कुमार चौधरी भी मौके पर व्यवस्थाओं को देखने के लिए लगातार निरीक्षण कर रहे हैं।

मुख्य अभियंता निर्माण नरेंद्र कुमार चौधरी ने बताया कि दूधेश्वर नाथ मंदिर के आगे और पीछे के हिस्से में भी बैरिकेडिंग की गई है। मंदिर परिसर से एमएमजी रोड तक 400 मीटर और पीछे के हिस्से में 300 मीटर तक बैरिकेडिंग की गई है।

नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक ने बताया कि महाशिवरात्रि पर्व की व्यवस्थाओं में नगर निगम के सभी विभाग लगे हुए हैं।

नोएडा में बिना हेलमेट फैक्ट्री आने वाले कर्मचारियों की खैर नहीं, एंट्री पर रोक के साथ कटेगा वेतन

नोएडा में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एक बड़ा कदम उठाया गया है। नोएडा एंटरप्रेन्योर्स एसोसिएशन (एनईए) ने अपने सदस्यों को निर्देश दिया है कि बिना हेलमेट पहनने वाले कर्मचारियों को फैक्ट्री में प्रवेश नहीं दिया जाए। साथ ही उनका एक दिन का वेतन भी काटा जाएगा। इस पहल का उद्देश्य कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और सड़क दुर्घटनाओं को कम करना है।

नोएडा। सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए सबसे पुराने औद्योगिक संगठन नोएडा एंटरप्रेन्योर्स एसोसिएशन (एनईए) ने शासन प्रशासन के साथ कदम ताल कर लिया है। नोएडा-ग्रेटर नोएडा में संगठन से जुड़े 3600 फैक्ट्री-कंपनी को सर्कुलर जारी कर दिया है, कहा है कि बिना हेलमेट काम पर आने वाले लोगों के प्रवेश पर रोक लगाई जाए।

उन्हें हेलमेट लगाने पर बाध्य किया जाए, यदि उनके साथ पीछे की सीट पर भी कोई बैठकर आता जाता है, तो उससे भी हेलमेट का प्रयोग कराया जाए। यदि वह न माने तो उनका एक दिन का वेतन काट लिया जाए। नोएडा एंटरप्रेन्योर्स एसोसिएशन (एनईए) अध्यक्ष विपिन कुमार मल्हन ने बताया कि कारोबारियों को पत्र जारी कर अवगत कराया गया है कि दोपहिया से आने वाले अधिकांश लोग हेलमेट लगाकर इकाइयों में नहीं पहुंचते हैं।

लापरवाही बरतने वाले लोगों पर कार्रवाई की तैयारी

इससे सड़क दुर्घटनाओं में अधिकांश लोग गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं, जिससे उनकी मौत हो जाती है। ऐसे दोपहिया वाहन चालक खुद की जान खतरे में डालते हैं, साथ ही पीछे बैठकर चलने वाले लोगों की जान भी जोखिम में डालते हैं। नियमानुसार दोनों को हेलमेट लगाकर दोपहिया वाहन की सवारी करनी चाहिए।

ऐसे में लापरवाही बरतने वाले लोगों पर इकाइयों व कंपनियों में सख्ती बरतने की आवश्यकता है। इसके लिए दंड का प्रविधान किया जाए। जागरूकता के लिए फैक्ट्री-कंपनी के अंदर अभियान संचालित किया जाए। बता दें कि गौतमबुद्ध नगर में 25 हजार औद्योगिक इकाइयां संचालित हो रही हैं, अधिकांश एमएसएमई सेक्टर से जुड़ी हैं।

नोएडा में चलाया जा रहा है नो हेलमेट नो फ्यूल अभियान

तमाम मल्टीनेशनल कंपनियों के कार्यालय भी यहां पर है। इसमें करीब 13 लाख लोग काम कर रहे हैं। चार हजार गारमेंट्स फैक्ट्री में आठ लाख लोग काम कर रहे है। अब इनसे यातायात नियमों का पालन कराया जा सके। ताकि लोग सुरक्षित सड़कों पर चले और काम करने वापस घर पहुंचे।

नो हेलमेट नो फ्यूल अभियान परिवहन विभाग की ओर से नोएडा में नो हेलमेट नो फ्यूल (No Helmet No Fuel) अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत नोएडा के सभी पेट्रोल पंप पर इस तरह के पोस्टर और बैनर लगे है। यहां पेट्रोल पंप पर बिना हेलमेट पहने वाहन चालकों को फ्यूल नहीं दिया जा रहा है।

बिहार में शराब तो मिलती नहीं' नशे के लिए इस्तेमाल हो रही ये 'छोटी शीशी', छापेमारी में खुला राज

गाजियाबाद के ट्रॉनिका सिटी में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां थाना पुलिस और औषधि निरीक्षक की संयुक्त टीम ने इलायचीपुर गांव स्थित एक गोदाम में छापेमारी कर 87 लाख रुपये कीमत की ऐसी चीज पकड़ी है जो बिहार में नशे के रूप में उपयोग होती है। पुलिस ने मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

लोनी। गाजियाबाद के ट्रॉनिका सिटी थाना पुलिस व औषधि निरीक्षक की संयुक्त टीम ने इलायचीपुर गांव स्थित एक गोदाम में छापेमारी कर ऐसी चीज पकड़ी है, जिसे बिहार में नशे के लिए उपयोग किया जाने की बात सामने आई है।

पुलिस ने जब इस गोदाम में छापा मारा और एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया तो पूरे मामले का खुलासा हुआ। छोटी सी शीशी में बंद चीज को किस तरह से नशे के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है, यह जानकर पुलिस भी हैरान रह गई।

पुलिस ने क्या पकड़ा

पुलिस और औषधि विभाग की संयुक्त टीम ने गोदाम से 87 लाख के कीमत की अवैध खांसी की सिरप पकड़ी है।पुलिस ने मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। यहां से बिहार में नशे के लिए यह सिरप चोरी-छिपे भेजी जा रही थी।

बिना लाइसेंस के स्टॉक कर रखी थी सिरप

सहायक पुलिस आयुक्त लोनी, सूर्यबली मौर्य ने बताया कि औषधि निरीक्षक ने पुलिस को जानकारी दी कि इलायचीपुर गांव में कुछ व्यक्ति अवैध तरीके से बिना लाइसेंस खांसी का सिरप का भंडारण करने और यहां से आपूर्ति करने का काम कर रहे हैं।

औषधि निरीक्षक और ट्रॉनिका सिटी थाना पुलिस की संयुक्त टीम बनाई गई। मंगलवार को टीम इलायचीपुर गांव पहुंची। जहां छापेमारी कर एक गोदाम से 273 खांसी के सिरप की पेटियां बरामद की गईं।

बहराइच का गौतम सिंह गिरफ्तार

पुलिस ने मौके से ग्राम मोहम्मदनगर डीहा थाना रामगांव जिला बहराइच के गौतम सिंह को गिरफ्तार किया। आरोपी ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि खांसी के सिरप का अवैध भंडारण करते हैं।

डिब्बों में खास तरीके से छिपाते थे सिरप

यह भंडार विमल कुमार पांडेय व मनोज कुमार का है। हम सब मिलकर ये काम कर रहे हैं। चोरी-छिपे डब्बों में कंबल के नीचे छिपाकर बिहार भेजते हैं। जहां पर इस सिरप का प्रयोग नशे के लिए किया जाता है। वहां इसके अच्छे रुपये मिलते हैं।

यूपी के इस जिले में बसाई जाएगी हेरिटेज सिटी, YEIDA को मिली ये जिम्मेदारी; 925 करोड़ आएगी लागत

ग्रेटर नोएडा की हेरिटेज सिटी परियोजना को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय से स्वीकृति मिल गई है। इस परियोजना के तहत यमुना एक्सप्रेसवे से बांके बिहारी मंदिर तक 6.9 किलोमीटर लंबी हेरिटेज सिटी विकसित की जाएगी। इस परियोजना की लागत 925 करोड़ रुपये होगी। इसकी वजह से हेरिटेज सिटी के ढांचे में कोई बदलाव नहीं आएगा और इसमें कई खासियतें भी हैं।

ग्रेटर नोएडा। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने मथुरा जिले में यमुना प्राधिकरण की हेरिटेज सिटी परियोजना को स्वीकृति दे दी है।

राष्ट्रीय राजमार्ग-44 से यमुना एक्सप्रेसवे तक भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण 15.3 किमी लंबा मार्ग का निर्माण करेगा। इस पर आने वाली लागत को एनएचएआई वहन करेगा, यमुना प्राधिकरण मार्ग के लिए जमीन उपलब्ध कराएगा।

गेट पर लगेंगी ये खास मूर्तियां

यमुना एक्सप्रेसवे और बांके बिहारी मंदिर के बीच करीब 6.9 में हेरिटेज सिटी परियोजना विकसित होगी। यमुना एक्सप्रेसवे पर इंटरचेंज बनाकर इसे जोड़ा जाएगा। यहां गेट पर राधा कृष्ण की मूर्ति भी स्थापित होगी। मंत्रालय से स्वीकृति मिलने के बाद अब यमुना प्राधिकरण हेरिटेज सिटी परियोजना के लिए विकासकर्ता चयन की प्रक्रिया शुरू करेगा। यमुना प्राधिकरण के फेज दो मास्टर प्लान में शामिल हेरिटेज सिटी परियोजना को धरातल पर उतारने के लिए काफी समय से प्रयास चल रहे हैं।

क्यों राया कट के पास से नहीं बन सकी बात?

प्राधिकरण ने पूर्व में राया कट से यमुना नदी तक 6.9 किमी का ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे बनाकर उसके किनारे हेरिटेज सिटी परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कराई थी, लेकिन राया कट के आसपास अतिक्रमण के कारण इसे यमुना एक्सप्रेसवे के 101 किमी प्वॉइंट से बनाने का फैसला किया गया, लेकिन यह क्षेत्र मास्टर प्लान से बाहर होने के कारण अड़चन आ गई।

प्राधिकरण ने मास्टर प्लान को संशोधित कर प्रस्तावित क्षेत्र को उसमें शामिल किया, इसी बीच एनएचएआई के प्रस्तावित मार्ग को लेकर पेंच फंस गया।

एनएचएआई ने एनएच-44 से यमुना एक्सप्रेस वे पर तक 15.3 किमी लंबे नए मार्ग की योजना तैयार की है। इस पर 925 करोड़ खर्च होने का अनुमान है। इससे एक्सप्रेसवे व एनएच दोनों जुड़ जाएंगे।

सीधे पहुंचेंगे बांके बिहारी मंदिर

आगरा और दिल्ली की ओर से जाने वाले वाहन नए मार्ग से होकर सीधे बांके बिहारी मंदिर पहुंच सकेंगे। इस मार्ग के करीब सात किमी के दायरे में दोनों ओर हेरिटेज सिटी विकसित की जाएगी।

पिछले दिनों केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के सचिव के साथ यीडा (YEIDA) अधिकारियों की बैठक में परियोजना को स्वीकृति दे दी गई। यीडा सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह का कहना है कि मार्ग का निर्माण एनएचएआई करेगा।

प्राधिकरण मार्ग के लिए जमीन उपलब्ध कराएगा। ब्रज विकास परिषद यमुना नदी पर सस्पेंशन ब्रिज का उत्तर प्रदेश राज्य सेतु निगम से निर्माण करा रहा है।

प्राधिकरण के अधिसूचित क्षेत्र से बाहर होने की वजह से यीडा इसमें कोई सहयोग नहीं करेगा, लेकिन यमुना नदी के किनारे बेगमपुर गांव में 12 हजार हेक्टेयर जमीन को पार्किंग के लिए अधिगृहीत करेगा। एनएचएआई के प्रस्तावित मार्ग से सस्पेंशन ब्रिज को जोड़ने वाले मार्ग का प्राधिकरण निर्माण करेगा।

पार्किंग में व्यावसायिक गतिविधियों की नहीं होगी अनुमति

यमुना नदी के किनारे 12 हजार हेक्टेयर में पार्किंग बनाई जाएगी, लेकिन इसमें किसी तरह की व्यावसायिक गतिविधि की अनुमति नहीं होगी।

रिवर फ्रंट के लिए अनुमान्य गतिविधि ही हो सकेंगी। यह पार्किंग सस्पेंशन ब्रिज के नजदीक होगी। वाहन चालक पार्किंग में अपने वाहन खड़ा कर सस्पेंशन ब्रिज होकर बांके बिहारी मंदिर जा सकेंगे।

101 किमी प्वॉइंट पर बनेगा इंटरचेंज यमुना एक्सप्रेसवे पर 101 किमी प्वाइंट पर इंटरचेंज बनाकर एनएचएआई के मार्ग को जोड़ा जाएगा।

यहां प्रवेश द्वार का भी निर्माण होगा। इसके साथ ही ब्रज विकास परिषद के आग्रह को स्वीकार करते हुए राधा कृष्ण की मूर्ति स्थापित की जाएगी।

हेरिटेज सिटी के ढांचे में नहीं होगा कोई बदलाव

यमुना प्राधिकरण की ओर से हेरिटेज सिटी परियोजना की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट में कोई बदलाव नहीं होगा। डीपीआर के तहत हेरिटेज सिटी में कथा वाचलाय, हाट, प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र, विश्राम गृह, आध्यात्मिक केंद्र, प्यूजियम, होटल आदि विकसित किए जाएंगे।

सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों से जुड़े हुए हैं प्रदर्शन कलाएँ और रंगमंच

मजदूर वर्ग को आजाद कराने और स्थापित सत्ता के खिलाफ क्रांति को मज़बूत करने के लिए 20वीं सदी की शुरुआत में नुक्कड़ नाटक का विकास हुआ। इसकी शुरुआत मुख्य रूप से उपनिवेशवाद विरोधी युग के दौरान भारत में वामपंथी रंगमंच कार्यकर्ताओं द्वारा की गई थी। यद्यपि नुक्कड़ नाटक और लोक नाटक में कई समानताएँ हैं, लेकिन नुक्कड़ नाटक एक सीधा-सादा कलात्मक माध्यम होने के बजाय एक सहभागी सामाजिक संचार प्रक्रिया है। इस निबंध में सामुदायिक विकास के एक उपकरण के रूप में नुक्कड़ नाटक के कार्य और क्षमता की जांच की गई है, जो सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना चाहता है। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के तुरंत बाद, थिएटर उद्योग में महत्त्वपूर्ण उथल-पुथल हुई। अधिक लोकप्रिय फ़िल्मि शैलियों से प्रतिस्पर्धा ने मनोरंजन थिएटर उद्योग को नुक़सान पहुँचाया। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बंगलौर जैसे प्रमुख शहरों में शौकिया रंगमंच का विकास हुआ।

डॉ सत्यवान सौरभ

जैसे-जैसे क्षेत्रीय नाट्य परम्पराएँ विकसित हुई हैं, भारत का रंगमंच और प्रदर्शन कलाएँ सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक रही हैं। न्याय को बढ़ावा देने, सत्ता का विरोध करने और सामाजिक अन्याय की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए रंगमंच एक सशक्त माध्यम साबित हुआ है। बढ़ते क्षेत्रीय राष्ट्रवाद, राष्ट्र का प्रश्न और उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष की जटिल कथाओं ने क्षेत्रीय नाट्य परम्पराओं के विकास को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, बंगाली नाटक नील दर्पण (1860) में बताया गया कि ब्रिटिश शासन के दौरान नील की खेती करने वाले किसानों का किस प्रकार शोषण किया जाता था। आधुनिक रंगमंच सांस्कृतिक उत्पादन के औपनिवेशिक मॉडलों और पारंपरिक सांस्कृतिक प्रथाओं के प्रतिच्छेदन ने आधुनिक रंगमंच को आकार दिया है। रंगमंच सहित प्रदर्शन कलाएँ सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए एक सशक्त साधन तथा चर्चा के लिए एक जीवंत मंच बनी हुई हैं। रंगमंच लंबे समय से भारत में जागरूकता बढ़ाने, सुधार और प्रतिरोध के लिए एक सशक्त साधन रहा है, जिसका प्रभाव राजनीतिक आंदोलनों के साथ-साथ सामाजिक संरचनाओं पर भी पड़ा है। शास्त्रीय रीति-रिवाजों से लेकर समकालीन नुक्कड़ नाटकों तक, इसने सामाजिक बदलावों को प्रतिबिंबित करने और प्रभावित करने के लिए कभी भी बदलाव करना बंद नहीं किया है। सामाजिक अन्याय को लंबे समय से रंगमंच के माध्यम से प्रकाश में लाया जाता रहा है।

ब्रिटिश शासन के दौरान नील की खेती करने वाले किसानों के शोषण को 1860 में बंगाली थियेटर के नील दर्पण द्वारा सार्वजनिक किया गया था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान लोगों को बड़े पैमाने पर नाटकों और लोक प्रदर्शनों के माध्यम से संगठित किया गया था। रंगमंच के माध्यम से, भारतीय जन रंगमंच संघ (इप्टा) ने 1943 में उपनिवेशवाद विरोधी भावना को बढ़ावा दिया। निम्न वर्ग के समुदाय रंगमंच के माध्यम से अपनी

पहचान व्यक्त करने में सक्षम रहे हैं। दलित सशक्तिकरण और अम्बेडकरवादी दर्शन को भीम नाट्य (महाराष्ट्र) द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। रंगमंच का उपयोग भ्रष्टाचार को उजागर करने और नीतियों की आलोचना करने के लिए किया गया है। 1980 के दशक में, सफ़दर हाशमी के जन नाट्य मंच ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किए जिनमें सरकारी नीतियों की आलोचना की गई; इसके कारण 1989 में उनकी हत्या कर दी गई। कानून और सामाजिक सुधार रंगमंच से प्रभावित हुए हैं। विजय तेंदुलकर की 1972 में प्रकाशित पुस्तक सखाराम बाइंडर में महिलाओं के अधिकारों और घरेलू दुर्व्यवहार के खुलासे पर चर्चा के परिणामस्वरूप सख्त सेंसरशिप कानून बनाये गये। धार्मिक और सामाजिक परंपराएँ: प्राचीन रंगमंच की मज़बूत धार्मिक और सामाजिक जड़ें थीं। कुटियाट्टम (केरल), जिसे 2001 में यूनेस्को द्वारा मान्यता दी गई थी, अभी भी संस्कृत रंगमंच की परंपराओं को क़ायम रखे हुए है। लोक रंगमंच के माध्यम से सामाजिक टिप्पणी: वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को लोक परंपराओं में प्रतिबिंबित किया गया है।

नक्सलवादी आंदोलन के दौरान वर्ग संघर्ष को जत्रा (बंगाल) में दर्शाया गया। आधुनिक रंगमंच में मानवाधिकार, लोकतंत्र और भ्रष्टाचार नए विषय बन गए। 1950 के दशक में हबीब तनवीर के नया थिएटर ने लोक और आधुनिक विषयों को मिलाकर सामाजिक मुद्दों को चित्रित किया। राज्य हस्तक्षेप और सेंसरशिप: राजनीतिक रूप से संवेदनशील नाटकों पर सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाए जाते हैं। विजय तेंदुलकर की 1972 की फ़िल्मि घासीराम कोतवाल को जाति आधारित भ्रष्टाचार और शोषण को उजागर करने के कारण प्रतिबंधित कर दिया गया था। डिजिटल प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता ने थिएटर के प्रभाव और पहुँच को बढ़ा दिया है। सामाजिक सक्रियता के लिए, यूट्यूब आधारित थिएटर समूह, जैसे जन नाट्य मंच, डिजिटल प्रदर्शनों का उपयोग करते हैं। भारत और विदेश के सरकारी और निजी स्रोतों ने स्वतंत्रता के बाद से भारतीय रंगमंच को इसके अनेक रूपों में सहयोग दिया है, लेकिन यह हमेशा विशिष्ट प्रतिभाओं द्वारा संचालित रहा है और पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित रहा है, साथ ही स्वदेशी संसाधनों की ओर भी मुड़ता रहा है। इस अवधि के दौरान विजय तेंदुलकर, बादल सरकार, धर्मवीर भारती, मोहन राकेश और गिरीश कर्नाड, चंद्रशेखर कंबार, पी लंकेश और इंदिरा पार्थसारती जैसे आधुनिकतावादी नाटककार पैदा हुए; उनके नाटकों का उपयोग और अध्ययन पूरी दुनिया में किया गया है।

इन नाटककारों ने थिएटर में आधुनिकतावादी आक्रोश पर गहन औपचारिक कठोरता और विषयगत ध्यान केंद्रित किया। पहचान का संकट और वैश्वीकरण के परिणाम उन विषयों में से हैं जिन पर युवा लेखक वर्तमान में कई स्थानों पर चर्चा कर रहे हैं। आधुनिक भारतीय रंगमंच मुख्यतः तीन परंपराओं से प्रभावित है: संस्कृत रंगमंच, लोक रंगमंच और पश्चिमी रंगमंच। वास्तव में, तीसरा वह है जिसे आज भारतीय रंगमंच की आधारशिला माना जा सकता है। हम सभी देख सकते हैं कि समय के साथ रंगमंच और प्रदर्शन कलाएँ किस प्रकार विकसित हुई हैं, उन्होंने सत्ता को चुनौती दी है, न्याय को बढ़ावा दिया है, तथा सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया है। आज, पूरे देश में कई थिएटर समूह और निजी से लेकर सरकारी संस्थानों तक कई थिएटर अभिनय संस्थान हैं। अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए, उन्हें सांस्कृतिक संरक्षण, डिजिटल एकीकरण और नीति समर्थन के लिए पहल के माध्यम से अपनी स्थिति को मज़बूत करना होगा। जबकि शोषितों या आम जनता के जीवन में सामाजिक परिवर्तन लाना, नुक्कड़ नाटक आंदोलन और यात्रा के केंद्र में है।

इसे प्राप्त करने के लिए ₹प्रगतिशील सामुदायिक विकास₹ प्रक्रिया को ₹लोकप्रिय शिक्षा₹ के साथ संयोजित करना आवश्यक है। एक लोकप्रिय रंगमंचीय अभ्यास के रूप में, नुक्कड़ नाटक एक सहभागी प्रक्रिया स्थापित करने का प्रयास करते हैं जो लक्षित दर्शकों के ₹सांस्कृतिक रूपों₹ के प्रति संवेदनशील होती है। नुक्कड़ नाटक, प्रोसेनियम थिएटर के विपरीत, वह स्थान है जहाँ अभिनेता अपनी कलात्मक और व्यावसायिक रुचियों को अपनी राजनीतिक और सामाजिक मान्यताओं के साथ जोड़ते हैं। हालाँकि, इसकी क्षमता को पूरी तरह से साकार करने और समाज पर प्रभाव डालने के लिए दीर्घकालिक विकासात्मक योजना को नाट्य प्रक्रिया के साथ जोड़ा जाना चाहिए। यह लक्ष्य नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समुदाय को जानने, लोगों की चिंताओं के मुद्दों को पहचानने, मनोरंजन और सामुदायिक अभिव्यक्ति को संयोजित करने, दर्शकों की भागीदारी को आमंत्रित करने और कार्यवाही के लिए आह्वान करने से प्राप्त किया जा सकता है।

एमजी रही सबसे सस्ती इलेक्ट्रिक कार कॉमेट के ब्लैक स्टॉर्म एडिशन को लाने की तैयारी, जानें कब तक होगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

एमजी कॉमेट ब्लैकस्टॉर्म ब्रिटिश वाहन निर्माता MG Motors की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से सबसे सस्ती EV के तौर पर ऑफर की जाने वाली MG Comet EV को जल्द ही नए एडिशन में लाया जाएगा। किस एडिशन के साथ कॉमेट ईवी को कब तक लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता MG मोटर्स भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में EV और ICE सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करती है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली देश की सबसे सस्ती EV को नए एडिशन के साथ लॉन्च किया जा सकता है। MG Comet EV को किस एडिशन के साथ लॉन्च किया जाएगा। कब तक इसे लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

MG Comet EV का आएगा Blackstorm Edition

एमजी की ओर से कॉमेट ईवी को बिक्री के लिए भारतीय बाजार में उपलब्ध करवाया जाता है। इस इलेक्ट्रिक कार को जल्द ही Blackstorm Edition के साथ लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। लॉन्च से पहले सोशल मीडिया पर कंपनी ने जानकारी दी है।

क्या मिली जानकारी

सोशल मीडिया पर एमजी मोटर्स की ओर से कॉमेट ईवी के नए एडिशन को लाने की जानकारी सार्वजनिक की है। पहले वीडियो टीजर में गाड़ी की फोटो के साथ ही डार्क मोड को दिखाया गया है। इसके साथ फिएरी एक्सपीरियंस और इलेक्ट्रिफाइंग एक्सपीरियंस के लिए तैयार रहने की बात कही गई है। वहीं दूसरे टीजर में फास्ट एंड फिएरी के साथ वीडियो टीजर जारी किया गया है।

जानकारी के मुताबिक एमजी की ओर से कॉमेट ईवी के नए एडिशन में सिर्फ कॉस्मैटिक बदलाव ही किए जाएंगे। इसमें किसी भी तरह का बदलाव डिजाइन, बैटरी, मोटर में नहीं किया जाएगा। लेकिन ब्लैक एक्सटीरियर के साथ ही इसमें रेड कलर के इंसर्ट्स को दिया जाएगा, जिनको व्हील्स, लोगो के साथ ही इंटीरियर में भी देखा जा सकेगा।

MG Comet EV की स्पेसिफिकेशन्स

कंपनी की ओर से MG Comet EV को 17.3 kWh की क्षमता की बैटरी के साथ ऑफर किया जाता है। इस बैटरी के साथ गाड़ी को सिंगल चार्ज में 230 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसमें लगी मोटर से इसे 42 हॉर्स पावर और 110 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

MG Comet Blackstorm Edition की लॉन्च डेट और संभावित कीमत

एमजी की ओर से कॉमेट ईवी के नए एडिशन के लॉन्च के समय ही कीमत की सही जानकारी मिल पाएगी। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसकी कीमत में बेहद मामूली बदलाव किया जा सकता है। फिलहाल इसे 6.99 लाख रुपये की शुरुआती एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। इसके टॉप वेरिएंट को 9.83 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है।

ऑफ रोडिंग पसंद करने वालों के लिए लॉन्च हुई डुकरटी डिजर्ट डिस्कवरी बाइक, दमदार इंजन के साथ कीमत 21 लाख रुपये

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में सामान्य बाइक्स के साथ ही दमदार इंजन वाली बाइक्स को भी काफी पसंद किया जाता है। Ducati की ओर से दमदार इंजन के साथ ऑफ रोडिंग क्षमता के साथ नई बाइक Ducati DesertX Discovery को लॉन्च किया गया है। इसमें कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस तरह के फीचर्स दिए हैं। किस कीमत पर बाइक खरीदी जा सकती है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में इटली की दो पहिया निर्माता Ducati की ओर से नई बाइक के तौर पर DesertX Discovery को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की इस बाइक में किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन बाइक में मिलता है। किस कीमत पर बाइक को खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई डुकाटी DesertX Discovery बाइक

भारतीय बाजार में ऑफ रोडिंग बाइक्स को पसंद करने वालों के लिए डुकाटी की ओर से DesertX Discovery बाइक को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इस बाइक को दमदार इंजन और कई फीचर्स के साथ लाया गया है।

Ducati DesertX specifications

Ducati DesertX Discovery बाइक में कंपनी की ओर से 937 सीसी की क्षमता का लिक्विड कूल्ड इंजन दिया गया है। जिससे बाइक को 110 हॉर्स पावर के साथ 92 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। बाइक में राइडिंग के लिए खासतौर पर ऑफ रोडिंग मोड, विली कंट्रोल, इंजन ब्रेक कंट्रोल जैसे मोड्स को दिया गया है। बाइक को 6स्पीड गियरबॉक्स दिया गया है।

Ducati DesertX Discovery Features

कंपनी की ओर से बाइक में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें 21 लीटर की क्षमता का फ्यूल टैंक, हीटेड ग्रिप, बड़ी विंडशील्ड, टर्न बाय टर्न नेविगेशन, फ्रंट बुल बार प्रोटेक्शन, प्रोटेक्टिव रेडिएटर ग्रिल, इंजन गार्ड प्लेट, सेंट्रल स्टैंड को स्टैंडर्ड फीचर्स के तौर पर दिया गया है। इसके साथ ही इसमें क्रूज कंट्रोल, बाई-डायरेक्शनल क्विक शिफ्टर, फुल एडजस्टेबल यूएसडी फ्रंट फॉर्क्स, केवाईबी का रियर मोनोशॉक सस्पेंशन और दोनों पहियों में डिस्क ब्रेक के साथ स्पोक्ड व्हील्स को दिया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

डुकाटी इंडिया के एमडी विपुल चंद्रा ने इस मौके पर कहा कि डेज़र्टएक्स डिस्कवरी भारतीय बाज़ार में डुकाटी की बढ़ोतरी में एक महत्वपूर्ण कदम है। हम यहाँ एडवेंचर सेगमेंट की अपार संभावनाओं को पहचानते हैं, और हमें पूरा विश्वास है कि यह मोटरसाइकिल पूरे भारत में एडवेंचर के शौकीनों के दिलों पर छा जाएगी। हम एडवेंचर मोटरसाइकिलों की एक बड़ी रेंज पेश करने के लिए भी प्रतिबद्ध हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर समझदार भारतीय ग्राहक अपनी व्यक्तिगत सवारी शैली और ज़रूरतों से मेल खाने वाली एकदम सही डुकाटी पा सके।

DesertX Discovery price in India

डुकाटी की ओर से DesertX Discovery बाइक को एक लीटर इंजन वाली एडवेंचर बाइक के तौर पर लाया गया है। जिसकी एक्स शोरूम कीमत 21.78 लाख रुपये रखी गई है।

31 मार्च से पहले गाड़ी में लगवा लें HSRP; वरना कटेगा 5000 का चालान, जानिए बनवाने का ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रोसेस

परिवहन विशेष न्यूज

महाराष्ट्र में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट यानी हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट को लगवाने की आखिरी तारीख का एलान कर दिया गया है। वहीं इसे पूरे भारत में वाहनों के लिए अनिवार्य है। इसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि आप कैसे हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेटको ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीके से बनवा सकते हैं।

नई दिल्ली। आपके पास चार पहिया गाड़ी हो या फिर दोपहिया। सभी के लिए हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट को अनिवार्य कर दिया गया है। इसे बिना लगवाए गाड़ी चलाना उतना ही अनिवार्य कर दिया गया है, जितना चार पहिया के लिए सेट बेल्ट और दोपहिया के लिए हेलमेट। अगर आप इन नियम का पालन नहीं करते हैं तो जिस तरह से आपका चालान काटा जाता है, उसी तरह से हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (High Security Registration Plate) नहीं लगवाने पर भी ट्रैफिक जुर्माना लगाया जाएगा। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको HSRP को अप्लाई करने का ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रोसेस के बारे में बता रहे हैं। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

क्या है HSRP?

हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट यानी हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट को पूरी तरह से एल्युमिनियम से बनाया जाता है। इस प्लेट पर बाई तरफ के ऊपरी कोने पर क्रोमियम बेस्ड एक होलोग्राम लगा हुआ होता है, जिसमें वाहन की सभी जानकारी दी गई होती है। इसके साथ ही इसमें सेफ्टी के लिए यूनिक लेजर कोड भी दिया गया होता है, जो हर वाहन के लिए अलग-अलग होता है। इस कोड को आसानी से हटाया नहीं जा सकता है। इसे नए वाहनों के साथ ही पुराने वाहनों पर भी लगाना जरूरी है।

वाहन पर HSRP नहीं होने पर कितना जुर्माना?

पूरे भारत में ही सभी गाड़ियों पर हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट को लगवाना अनिवार्य किया गया है। वहीं, अगर आप महाराष्ट्र में रहते हैं तो आपको अपनी गाड़ी पर यह नंबर प्लेट 31 मार्च 2025 से पहले जरूर लगवा लें। यह नियम उन लोगों के लिए जिन्होंने अपनी गाड़ी का रजिस्ट्रेशन 1 अप्रैल 2019 से पहले करवाया है। हर राज्य के लिए इसके लिए अलग-अलग ट्रैफिक चालान राशि है जो 500 रुपये से लेकर 5 हजार रुपये तक हो सकती है।

कैसे लगवाएं हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट?

ऑनलाइन प्रोसेस

इसके लिए आपको सरकार द्वारा अधिकृत पंजीकरण पोर्टल Bookmyhsrp.com पर जाना होगा।

यहां पर आपको हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट विद कलर स्टीकर पर क्लिक करना होगा।

फिर आपको बुकिंग डिटेल-वाहन नंबर, चेसिस नंबर, इंजन नंबर, पता, संपर्क सूत्र की जानकारी देना होगा।

अगर आपका वाहन पर्सनल यूज के लिए है तो आपको 'non-transport' ऑप्शन पर क्लिक करना होगा।

फिर आपको फॉर्म को सबमिट करना होगा। इसके बाद आपको रजिस्टर नंबर पर एक यूजरनेम और पासवर्ड आ जाएगा।

आप वेबसाइट पर यूजरनेम और पासवर्ड से लॉगिन करके पेयमेंट करना होगा। जिसकी आपको रसीद भी मिलेगी।

ऊपर बताए गए प्रोसेस को पूरा करने के तीन से चार दिन बाद आपकी HSRP बन जाएगी।

जब हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट तैयार हो जाएगा, तो आपके मोबाइल नंबर इसकी सूचना मिल जाएगी।

ऑफलाइन प्रोसेस

अगर आप हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट को ऑफलाइन तरीके से बनवाना चाहते हैं, तो आपको आरटीओ या डीलरशिप पर जाना होगा।

यहां पर आपको अपने वाहन से संबंधित सभी पहचान प्रमाण जैसे आरसी, लाइसेंस नंबर, और पते का प्रमाण के साथ जाना होगा।

यहां पर आप हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट के आवेदन पत्र शुल्क को जमा करना होगा और कुछ दिन में यह बनकर आ जाएगा।

कितना आएगा खर्च?

हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (HSRP) को बनवाने में आपको करीब 500 से 1000 रुपये तक का पेमेंट करना होगा। इसके साथ ही आपको इस प्लेट को लगवाने के लिए आपकी पसंदीदा जगह, समय और तारीख सिलेक्ट करने का ऑप्शन भी दिया जाता है।

मारुति की नई स्विफ्ट पर शुरू हो गया काम, 2026 तक हो सकती है लॉन्च, जानें क्या होंगे बदलाव

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी ने अपनी हैचबैक कार Maruti Swift की नई Sport पर काम शुरू कर दिया है। इसे कब तक लॉन्च किया जा सकता है। किस तरह के बदलावों के साथ इसे लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। भारत के साथ ही मारुति सुजुकी ब्रॉन्ड के तहत कई देशों में वाहनों का निर्यात भी करती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हैचबैक सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Maruti Suzuki Swift के नए Sport वर्जन को लाने की तैयारी की जा रही है। इसमें किस तरह के बदलावों के साथ लाया जा सकता है। क्या, इसे भारत में लॉन्च (2026 Maruti Swift) किया जाएगा या नहीं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

नई स्विफ्ट की तैयारी शुरू हुई

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मारुति सुजुकी की ओर से हैचबैक सेगमेंट में लाई जाने वाली Maruti Suzuki Swift के नए Sport वर्जन पर काम शुरू कर दिया गया है। हालांकि कंपनी ने इस बारे में कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी है। लेकिन फिलहाल इंटरनेशनल मार्केट में कंपनी ने ZC33S का फाइनल एडिशन पेश किया है, जिसकी बिक्री नवंबर 2025 तक हो सकती है।

क्या होगा बदलाव

नई स्विफ्ट स्पोर्ट में कंपनी की ओर से कई बदलावों को किया जाएगा। हैचबैक कार के डिजाइन से लेकर इंजन तक में बदलाव किए जा सकते हैं। Swift Sport को सामान्य स्विफ्ट के मुकाबले पहले ही ज्यादा फीचर्स और स्टाइल के साथ लाया जाता है।

मिल सकता है नया इंजन

रिपोर्ट्स के मुताबिक Swift Sport की नई जेनरेशन में कंपनी की ओर से माइल्ड हाइब्रिड इंजन को दिया जा सकता है। फिलहाल इसमें 1.4 लीटर की क्षमता का बूस्टर जेट इंजन दिया जाता है। माइल्ड हाइब्रिड इंजन से स्विफ्ट स्पोर्ट को ज्यादा पावर के साथ ही बेहतर माइलेज भी मिलेगी।

कितनी लंबी-चौड़ी होगी गाड़ी

जानकारी के मुताबिक नई सुजुकी स्विफ्ट स्पोर्ट की लंबाई 3990 एमएम होगी। इसकी चौड़ाई 1750 एमएम, ऊंचाई 1500 एमएम, व्हीलबेस 2450 एमएम होगा। इसके साथ ही नई सुजुकी स्विफ्ट स्पोर्ट का कर्ब वेट भी 960 किलोग्राम तक हो सकता है, जो मौजूदा मॉडल के मुकाबले हल्का होगा। जिससे गाड़ी का पावर टू वेट रेशो और बेहतर हो सकता है।

भारत में हो सकती है पेश?

कंपनी की ओर से इसे भारतीय बाजार में लॉन्च नहीं किया जाएगा। लेकिन सुजुकी की ओर से इसे 2026 तक कई देशों में लॉन्च किया जा सकता है। लॉन्च के समय इसकी संभावित कीमत 13.56 लाख रुपये से 14.74 लाख रुपये के आस-पास हो सकती है।

होंडा एलीवेट के किस वेरिएंट को हाथों-हाथ खरीद रहे लोग, किस रंग की है सबसे ज्यादा मांग, जानें डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा कार्स इंडिया की ओर से देश में इकलौती एसयूवी के तौर पर Honda Elevate को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इस एसयूवी ने हाल में किस तरह की उपलब्धि को हासिल किया है। किस वेरिएंट की बाजार में सबसे ज्यादा मांग है और किस रंग में इसे सबसे ज्यादा पसंद किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता Honda की ओर से भारतीय बाजार में सेडान और एसयूवी सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से एसयूवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली इकलौती एसयूवी Honda Elevate ने नई उपलब्धि हासिल की है। एसयूवी के किस वेरिएंट को सबसे ज्यादा पसंद किया जा रहा है। किस रंग में एसयूवी की सबसे ज्यादा बिक्री हो रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Honda Elevate ने हासिल की उपलब्धि

होंडा कार्स की ओर से मिड साइज एसयूवी सेगमेंट में Honda Elevate को ऑफर किया जाता है। एसयूवी ने हाल में ही बिक्री के मामले में नई उपलब्धि हासिल की है। कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक एसयूवी ने लॉन्च के बाद से अब तक एक लाख यूनिट्स की बिक्री (Honda Elevate Sales Trend) कर दी है। इनमें से 53326 यूनिट्स की बिक्री देश में हुई है और 47653 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया गया है। जिन देशों में इस एसयूवी का एक्सपोर्ट किया गया है उनमें जापान, साउथ अफ्रीका, नेपाल और भूटान शामिल हैं।

किस ट्रिम को किया जा रहा पसंद

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक भारतीय बाजार में इस एसयूवी के टॉप ट्रिम ZX की सबसे ज्यादा मांग (Honda Elevate Popular Variant) है। एसयूवी की कुल बिक्री में इस वेरिएंट का योगदान 53 फीसदी है। इसके अलावा 79 फीसदी लोगों ने एसयूवी को सीवीटी ट्रांसमिशन के साथ खरीदा है। इनमें से 22 फीसदी लोग ऐसे हैं जिन्होंने पहली बार गाड़ी खरीदी है। वहीं 43 फीसदी से ज्यादा लोगों ने एलीवेट को अतिरिक्त कार के तौर पर खरीदा है।

होंडा की ओर से यह जानकारी भी दी गई है कि एसयूवी को किस रंग के साथ सबसे ज्यादा पसंद (Honda Elevate Color Demand) किया जाता है। Platinum White Pearl रंग में इस एसयूवी को 35.1 फीसदी लोगों ने खरीदा है। इसके बाद Golden Brown Metallic रंग को 19.9 फीसदी, Meteoroid Grey Metallic रंग को 15.4 फीसदी और Obsidian Blue Pearl रंग के साथ 15.3 फीसदी एसयूवी की बिक्री हुई है। इसके अलावा अन्य रंगों के विकल्प के साथ एसयूवी को 14.3 फीसदी लोगों ने खरीदा है।

किनसे है मुकाबला

भारतीय बाजार में होंडा की ओर से ऑफर की जाने वाली इकलौती एसयूवी Honda Elevate को मिड साइज सेगमेंट में लाया जाता है। बाजार में इसका सीधा मुकाबला Hyundai Creta, Maruti Grand Vitara, Toyota Urban Cruiser Hyryder, MG Hector, Tata Harrier, Mahindra Scorpio जैसी एसयूवी के साथ होता है।

किताबों का कोना

विजय गर्ग

विचारों की जगह हाथ में पुस्तकें लिए विद्यार्थी बच्चे कितने भी बड़े हो जाएं, पर रहते छोटे बच्चे ही। स्कूल-कालेज के दिनों में कुछ बच्चे अपनी पुस्तकों में छिपा कर चिट्ठी-पाती भी किया करते थे। इसके बारे में उनके साथ वाले किसी न किसी रूप में जरूर जान जाते थे। हालांकि उनके घर वाले बेखबर हुआ करते थे। आज के युवक खुले विचारों के हैं। सोशल मीडिया ने समय को पढ़ने की अपेक्षा देखने में परिवर्तित कर दिया है। परिवर्तन बलवान ही नहीं, प्रगति के लिए भी होता है । इसलिए समय को भगवान मानते हैं। आज के प्रगतिवादी भी जमीन को देखने से पहले आसमान को देखते हैं।

हर हाथ में स्मार्टफोन के दौर में पुस्तक पढ़ने की संस्कृति को लेकर अक्सर चिंता जताई जाती है। मगर सच यह है कि आज भी ऐसे लोगों की खासी संख्या है, जो किताबों से प्रेम करते हैं और उन्हें भी किताबों की दुनिया सजने की खबर मिलती है, वे वहां पहुंचते हैं। पहले भी और आज भी, मस्तिष्क में किसी भी संदर्भ में सामूहिकताबोध या फिर लोगों के एक जगह जमा होने से जो भाव पैदा होता है, उसका अर्थ धार्मिक या कोई सांस्कृतिक उत्सव मनाने से ही लिया जाता है। दौड़-भाग के इस समय में ऐसे जमावड़े का शुद्ध मतलब मेल-मिलाप ही माना जाता है, लेकिन बात पुस्तकों की हो, तो उसे क्या कहें- पुस्तकों का संसार या लोगों तक पहुंची पुस्तकें ? यह भी कह सकते हैं कि पुस्तकों के पीछे दर्शक - पाठक। इनके पीछे आयोजक और प्रकाशक । सबके आगे पुस्तकों की निर्बाध चाहत। जहां अलग-अलग भाषाओं की पुस्तकों के प्रेमी जुटते हैं, जहां पाठक जुड़ते हैं, पुस्तकों को छापने वाले प्रकाशक- गण एकत्रित होते हैं और लेखकों का भी जमावड़ा होता है, ऐसी ही जगहों से पुस्तक संस्कृति जीवन पाती है। मगर विडंबना यह है कि प्रचारित मेले को ही लोग मुख्य रूप से पुस्तक मेला के रूप में जानते हैं, जबकि पुस्तकें पढ़ने की संस्कृति एक विस्तृत सागर है, जहां से ज्ञान अपना जीवन पाता है। लेखकों को अपनी पुस्तकों के परिदृश्य के विस्तार को अपनी आंखों से देखने में सुख मिलता है कि उनके विचार लोगों तक पहुंच रहे हैं। ऐसा तब भी है, जब आज वह समय नहीं रहा, जब कभी पुस्तकें बड़ी शिद्दत से पढ़ी जाती थीं, पुस्तक - प्रेमी जब भी किताबें अपने हाथों में लिए इतराते चलते थे, तब पास-पड़ोसी तक जान जाते थे कि यह जरूर कहीं पढ़ता है।

विचारों की जगह हाथ में पुस्तकें लिए विद्यार्थी बच्चे कितने भी बड़े हो जाएं, पर रहते छोटे बच्चे ही। स्कूल-कालेज के दिनों में कुछ बच्चे अपनी पुस्तकों में छिपा कर चिट्ठी-पाती भी किया करते थे। इसके बारे में उनके साथ वाले किसी न किसी रूप में जरूर जान जाते थे। हालांकि उनके घर वाले बेखबर हुआ करते थे। आज के युवक खुले विचारों के हैं। सोशल मीडिया ने समय को पढ़ने की अपेक्षा देखने में परिवर्तित कर दिया है। परिवर्तन बलवान ही नहीं, प्रगति के लिए भी होता है । इसलिए समय को भगवान मानते हैं। आज के प्रगतिवादी भी जमीन को देखने से पहले आसमान को देखते हैं।

शुरू के दिनों में बच्चे पुस्तकों को देख अक्सर रोते हैं। किताबें प्रकाशित करने वालों का अलग रोना होता है। कि पुस्तकें बिकती नहीं। ऐसी स्थिति में लेखक भी यही मान लेते हैं। हालांकि इसके

अतिरिक्त उनके पास और क्या उपाय होता है। धैर्य ही उनके लेखन की वास्तविक जननी है। इतना जानते-समझते भी पुस्तक और पढ़ने की संस्कृति के विकास के बजाय इसे आर्थिक हिसाब-किताब और मुनाफे का मौका बना लाया जाता है। यों भी सरकार किसी की हो, उसके हर फैसले को मान मिल ही जाता है, यह मान देने वाला चाहे पठन- पाठन से जुड़ा कोई भी पक्ष हो। सबकी नजरें किसी न किसी औचित्य की ओर इंगित होती हैं।

कितने लिखने वालों को इसका फल मिलता है, यह नहीं पता, लेकिन इस सबका बोझ उठाना पड़ता है पाठक को ।

रुचि का विस्तार

बहरहाल, किताबों के लिए मेल-मिलाप और एक मकसद के लिए होता है- पुस्तक-संस्कृति को जिंदा रखना । ठीक इसी तर्ज पर कभी-कभार सालाना स्तर पर आयोजन जैसे प्रयास किए जाते हैं, ताकि पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति कम न हो। एक समान रुचि वाले लोगों के एक जगह जमा होने पर इस संस्कृति के विस्तार की संभावना पैदा होती है। लेकिन इसके समांतर यह आमतौर पर देखा जा सकता है कि अन्य अभिरुचियों के लोग भी सामूहिकताबोध की वजह से पुस्तकों के संसार में कदम रखते हैं और उसके बाद उनकी रुचि किताबों में भी विकसित होने लगती है। ऐसी जगहों पर सब तरह के लोग मिल सकते हैं। मेलजोल करने वाले भी और छत्तीस के आंकड़े वाले भी बहुत अच्छी किताबें, तो कुछ ऐसी किताबें भी, जिनको देख हैरानी हो । कितना कुछ मिल जाता है, यह पुस्तक संस्कृति से प्रेम करने वाले ही बता सकते हैं।

सहयोग की राह

करीब डेढ़ सौ करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश में साक्षरता के आंकड़े के मुताबिक मोटे तौर पर कितने लोग किताबें पढ़ने वाले होंगे ? जगह-जगह लगने वाले पुस्तक मेलों में यह भी मान लिया जाए कि दस करोड़ दर्शकों ने अपनी हिस्सेदारी दिखाई है, तब भी प्रकाशक खुशहाल रहते हैं। दिखाने बताने को जो कहा जाए। पुस्तकें, उनके लेखकों को मिलने वाली रायल्टी आदि की बातें इतनी जटिल हैं और खासकर हिंदी की दुनिया में कि इस मसले पर बात करना अपने आप में चुनौतीपूर्ण है। किसकी किताब किस मोड़ पर रुक जाए, कहा नहीं जा सकता। इस तरह की दुनिया में अदब का मतलब पुस्तकों के संसार में अदब से चलना होता है। इसलिए हर स्थिति में मर्यादा में रहना बुद्धिमान कहलाता है।

आवश्यकता इस बात की है कि पुस्तक - संस्कृति के विकास और विस्तार में प्रकाशकों लेखकों के हित में अगर सरकार के स्तर पर कोई ठोस कदम उठाए जाएं, तो सबसे पहले किताबें लोगों तक पहुंचाने वालों के लिए कुछ रियायत हो, ताकि बड़े के साथ-साथ छोटे प्रकाशक भी इस पुस्तक संसार में अपनी जगह बना सकें। साथ ही पुस्तकों के बढ़े डाक-शुल्क कम हों, तो सभी लोगों का भला होगा। वरना किताबों और उनकी कीमतों तक पहुंच के लिहाज से देखा जाए तो पाठकों की पुस्तकों से दूरी की वजह समझी जा सकती है। और फिर कई पुस्तकें मात्र सफेद, पीले, नीले या हरे रंग में बंट कर रह जा सकती हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

उम्र बढ़ने रफ्तार थामने की कोशिश

विजय गर्ग

दुनिया में पिछले कुछ वर्षों से शोधकर्ता कोशिका के स्तर पर मानव जीवन काल बढ़ाने के रहस्यों को जानने का प्रयास कर रहे हैं। उनका मुख्य फोकस टेलोमियर पर है, क्योंकि उसके छोटा होने पर बुढ़ापा आता है। आखिर टेलोमियर क्या होते हैं? टेलीमियर दरअसल कोशिका के नाभिक में स्थित गुणसूत्रों (क्रोमोसोम) के सिरों पर एक सुरक्षात्मक संरचना है, जो जूते के फीते की नोक की तरह काम करती है। टेलोमियर कोशिकाओं के डीएनए को सुरक्षित रखने और कोशिकाओं की वृद्धि और विभाजन को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समय के साथ टेलोमियर छोटे होते जाते हैं। इसकी वजह से कोशिकाएं स्वस्थ विकास के लिए विभाजित होने की अपनी क्षमता खो देती हैं और कुछ अंततः मरने लगती हैं।

मनुष्यों में कोशिका के स्तर पर टेलोमियर का अध्ययन हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है। अब वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी के विज्ञानियों ने बुढ़ापा - रोधी शोध को आगे बढ़ाने के लिए मानव जैसे छोटे टेलोमियर वाले चूहे विकसित किए हैं। मानव जैसे छोटे टेलोमियर मानव शरीर और अंगों में आयु वृद्धि के अध्ययन को आसान बनाते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार यह वास्तव मानवकृत 'टेलोमियर वाला पहला माउस माडल है, क्योंकि इस माडल में टेलोमियर वयस्क ऊतकों में व्यक्त नहीं होता है। अब उनका लक्ष्य यह देखना है कि चूहों में उम्र कैसे बढ़ती है। उनके अध्ययन का एक दूसरा लक्ष्य उम्र से संबंधित बीमारियों से मुक्त जीवन की अवधि को बढ़ाने के लिए रणनीतियों की खोज करना भी है।

इस कार्य के भविष्य की दवाओं और उपचारों के विकास के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। दीर्घावधि में यह बुढ़ापा रोधी रणनीतियों का मार्गप्रशस्त कर सकता है, जिनका उद्देश्य टेलीमियर की रक्षा करने के लिए कोशिकाओं को सक्रिय करना और जीवन काल को बढ़ाना है। कई बीमारियां कोशिका के स्तर पर उत्पन्न होती हैं, इसलिए दवाओं को लक्षित करना एक सामान्य रणनीति है। शोधकर्ता यह अध्ययन भी कर रहे हैं कि नींद मानव स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करती है। संशोधित चूहों का उपयोग यह देखने के लिए किया जाएगा कि नींद की कमी और जीवन के अन्य तनावों का टेलोमियर विनियमन और उम्र वृद्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। टेलीमियर उम्र वृद्धि को कैसे नियंत्रित करते हैं, पहले इसका अध्ययन दूध में अलग-अलग मानव कोशिकाओं का उपयोग करके किया जाता था। नए माउस माडल की खासियत यह है कि इससे पूरे जीव में उम्र बढ़ने की प्रक्रिया का निरीक्षण किया जा सकता है। शोधकर्ताओं को उम्मीद है कि आयु वृद्धि, मानव दीर्घायु और कैंसर पर अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए संशोधित चूहों को अन्य शोध टीमों के साथ साझा किया जाएगा। नया माउस माडल दुनिया भर के विज्ञानियों को इन प्रक्रियाओं का पता लगाने के लिए एक मूल्यवान उपकरण प्रदान कर सकता है।

कहानी: फेसरीडर

विजय गर्ग

वह सीट पर आ तो बैठा था लेकिन निश्चिंत नहीं था क्योंकि जो निश्चिंतता अपने निर्धारित टिकट से प्राप्त आरक्षित सीट पर आती है वह यहां नहीं थी.

पैंतालीस साल के अधेड़ दिवाकर ने जल्दी से औटो वाले को किराया दिया और अपना हैंडबैग संभालते हुए तेजी से रेलवे स्टेशन के उस हिस्से की ओर दौड़ पड़ा जहां क्लौकरूम स्थित था. बारबार घड़ी देखने के साथ उस की नजर क्लौकरूम की ओर थी, जहां से उसे अपना सूटकेस लेना था.

ट्रेन छूटने में सिर्फ 20 मिनट ही शेष थे और उसे तत्परता से यह काम कर, 2 फुटओवर ब्रिज पार कर के प्लेटफौर्म नंबर 6 पर पहुंचना था जहां पर वह ट्रेन खड़ी थी जिस में सवार हो कर उसे अपने गंतव्य दिल्ली पहुंचना था. खैर, शीघ्रता से औपचारिकता पूरी कर उस ने अपना सूटकेस लिया और दौड़तेहांफता प्लेटफौर्म नंबर 6 पर जा पहुंचा.

ट्रेन चल पड़ी थी लेकिन अभी उस ने रफ्तार नहीं पकड़ी थी. उस की आंखें चलती ट्रेन में अपने कंपार्टमैंट एस-3 डब्बे को खोजने लगी. ट्रेन धीरेधीरे स्पीड पकड़ रही थी और उस का एस-3 डिब्बा आगे निकल चुका था. उस ने सोचा, यदि वह अपने कंपार्टमैंट की ओर दौड़ेगा और उस तक पहुंचेगा, तब तक तो ट्रेन की स्पीड बढ़ जाएगी और उस का ट्रेन में चढ़ना मुश्किल हो जाएगा. संभव है ट्रेन ही छूट जाए. उस की त्वरा बुद्धि ने तुरंत प्रतिक्रिया दी. उस ने अपना सूटकेस सामने से गुजरते हुए एक डब्बे में फेंका और खुद भी दौड़ कर उस में सवार हो गया.

जिस डब्बे में वह चढ़ा था वह एक द्वितीय श्रेणी का आरक्षित कंपार्टमैंट था. उस ने घूम कर देखा, सभी लोग अपनीअपनी सीट पर बैठे अपने में मशगूल थे. कोई अपना सामान सेट कर रहा था, तो कोई जूते उतार कर उन्हें बर्थ के नीचे खिसका रहा था, तो वहीं, कोई मोबाइल में व्यस्त था. उन्हीं में से एक ऐसा भी हिस्सा था जिस में एक ही महिला बैठी हुई थी. सकुचाते और इधरउधर देखते हुए वह इस हिस्से में महिला के सामने वाली खाली बर्थ पर जा कर बैठ गया. जो महिला उस के सामने वाली बर्थ पर बैठी थी वह लगातार खिड़की से बाहर पीछे छूटते प्लेटफौर्म को निहार रही थी. दिवाकर उसे कनखियों से देखने लगा.

वह सीट पर आ तो बैठा था लेकिन निश्चिंत नहीं था क्योंकि जो निश्चिंतता अपने निर्धारित टिकट से प्राप्त आरक्षित सीट पर आती है वह यहां नहीं थी. कभी भी, किसी भी स्टेशन से आरक्षित बर्थ का वास्तविक पैसेंजर आ सकता था और उसे वहां से अपना बोरियाबिस्तर ले कर उतरना पड़ेगा. यदि उस से पहले टिकट कलैक्टर ही आ गया तो उस के सामने सफाई देनी पड़ेगी और उसे सफाईवफाई देना बहुत ही इरिटेटिंग लगता था.

दिवाकर के मन में सोचविचार का सिलसिला चल ही रहा था कि तभी अचानक उस की सोचविचार की कंदरा के मुहाने पर किसी ने भारीभरकम चट्टान गिरा दी. फलस्वरुप, कंदरा में अंधकार व्याप्त हो गया. विचार, प्रश्न सब तिमिराच्छादित हो गए. कारण था, महिला का उस की ओर, और खुद दिवाकर का उस की ओर एकटक भाव से अपलक देखते ही रह जाना. उस महिला की उम्र कोई चालीसपैंतालीस से कम नहीं थी. उस के चेहरे में एक कशिश थी जो उसे अपनी ओर खींचे जा रही थी.

सामान्य कदकाठी की यह महिला गुलाबी रंग के डिजाइनर सूट सलवार पहने थी जिस पर क्रीम रंग का दुपट्टा और उस में जड़ी छोटीछोटी अनगिनत घंटियां सोने पर सुहागा प्रतीत हो रही थीं. दिवाकर उस महिला के आभामंडल से सम्मोहित हुआ जा रहा था. वह उसे देख कर मन ही मन प्रसन्न हो, खयालों में खोने लगा.

"एक्सक्यूज मी, एक्सक्यूज मी, कुछ कहना है आप को? क्या देख रहे हैं आप, आप को नहीं लगता कि इस तरह से किसी महिला को तकना बदतमीजी कहलाती है? हेलो मिस्टर, आप ही से कह रही हूं. आप चूंकि हुलिए और कपड़ों से शरीफ आदमी लग रहे हैं इसलिए इस भाव में बात कर रही हूं वरना मुझे दूसरे भाव भी आते हैं. हेलो, हां जी?"

दिवाकर अभी भी उसे अपलक देखे जा रहा था. दो चुटकियां चेहरे के पास बजीं, तो वह सम्मोहन से बाहर आया.

"ओह, सौरी मैडम, एक्चुअली मैं एक फेसरीडर हूं. मुझे आप के चेहरे में कुछ विशेष दिखाई पड़ रहा है जो फेसरीडिंग के मेरे अब तक के अनुभव को चुनौती देता प्रतीत हो रहा है. क्षमा चाहता हूं, मुझे आप को ऐसे नहीं देखना चाहिए था."

दिवाकर ने क्षमायाचना तो की लेकिन इस दौरान वह उस महिला के पूरे चेहरे को पढ़ चुका था. उसे पूरा विश्वास था कि कुछ ही देर बाद उस से कुछ प्रश्न पूछे जाने हैं. फेसरीडिंग संबंधी जिज्ञासाएं प्रकट होने वाली हैं. वह चाहता तो आमतौर पर सटीक पड़ने वाली एकदो बात बता कर उस महिला को कौतुक में डाल सकता था. परंतु, वह पहल सामने से करवाना चाहता था. इसलिए शांत भाव से अपने मोबाइल के साथ व्यस्त होने का नाटक करने लगा. उस ने प्रतीक्षा करना शुरू किया. उस के अधरों पर मुसकान तैर रही थी.

फेसरीडिंग की बात ने महिला को रोमांचित कर दिया था. उसे ऐसी अनुभूति होने लगी कि वह इस व्यक्ति से पहले भी मिल चुकी है परंतु बहुत जोर देने पर भी वह स्मरण न कर सकी कि वह इस से कब और कहां मिली है. वह मन ही मन सोच रही थी कि इस अजनबी को क्या मालूम कि फेसरीडिंग उस की कमज़ोरी है. फिर उस ने सोचा, कहीं यह कोई बहरूपिया तो नहीं जो उसे हानि पहुंचाना चाहता है?

आजकल बहुत बुरा समय चल रहा है. इसलिए हर किसी के सामने खुलना ठीक नहीं, पर देखने से तो यह कोई पाखंडी या आपराधिक प्रवृत्ति का नहीं लगता. मुझे न जाने क्यों ऐसा महसूस हो रहा है कि यह आदमी मेरे लिए नुकसानदेह नहीं हो सकता, पर आजकल किसी का क्या भरोसा? छलिये और कपटी लोग ऐसी ही मोहिनी सूरत लिए फिरते हैं.

दोनों अपनेअपने मन में विचारमग्न थे.

"चिंता मत कीजिए, आप को मुझ से कोई खतरा नहीं हो सकता," दिवाकर ने आश्वस्त करते हुए कहा.

"आप हंस क्यों रहे हैं?" महिला ने दिवाकर से पूछा.

"मुझे लगता है मैडम कि मेरे चेहरे पर जो भाव प्रतिलक्षित है वह मुसकान कहलाती है. हंसने में तो अधर कपाट खुलते हैं और दंतुलियों के दिग्दर्शन होते हैं जोकि नहीं हुए, इसलिए इस भावमुद्रा को आप हंसना नहीं कह सकती हैं."

"हांहां, वहीवही. मेरा मतलब वही था. आप मुझे देख कर मुसकरा क्यों रहे हैं?"

"क्योंकि मेरी फेसरीडिंग विद्या मुझ से कह रही है कि यहां एक इंटरैस्टिंग फेसरीडिंग का सैशन होने वाला है, जिस की शुरुआत आप करेंगी."

"मैं भला क्यों आप से बात करूंगी, मैं आप को जानती नहीं, पहचानती नहीं. और वैसे भी, मेरी फेसवेस रीडिंग में कोई दिलचस्पी नहीं है."

"वैसे, आप कहें तो मैं आप के बारे में कुछ अनुमान लगा सकता हूं" दिवाकर ने महिला की ओर एक सटीक गुगली फेंकी.

"लेकिन मैं आप को क्यों इजाज़त दूं? और मैं ने कहा न, मुझे इन अंधविश्वासों में कोई दिलचस्पी नहीं है."

"लेकिन मेरी फेसरीडिंग विद्या कह रही है कि आप के शब्द कुछ और कह रहे हैं और आप का चेहरा कुछ और ही बयान कर रहा है."

"'मतलब?"

"मतलब, आप के चेहरे ने जैसे ही मेरे मुंह से फेसरीडिंग शब्द सुने, सकारात्मक प्रतिक्रिया दी. आप की आंखों की चमक, अधरों का स्मित भाव और भौंहों का फैलाव बताता है कि आप भी इस क्षेत्र में दखल रखती हैं. मतलब, आप को भी थोड़ाबहुत इस विद्या का ज्ञान है."

महिला उस की बात सुन कर थोड़ा गंभीर हुई, फिर मुसकराते हुए बोली, "चलिए, मान लेते हैं, इसी बहाने थोड़ा टाइम ही पास हो जाएगा. लगाइए क्या अनुमान लगा सकते हैं आप मेरे बारे में?"

जैसे ही महिला ने दिलचस्पी दिखाई, दिवाकर मन ही मन खुश हो गया. यही तो चाहता था वह. बस, फिर क्या था, खेल शुरू.

"जैसे कि मेरी विद्या कहती है कि आप दिल्ली जा रही हैं."

"हाहाहाहाहा, अरे, दिल्ली वाली ट्रेन से सवारी दिल्ली नहीं जाएगी तो क्या लंदन जाएगी?" और महिला जोर से खिलखिला कर हंस पड़ी. उस की हंसी में बालसुलभ निर्मलता थी.

दिवाकर मंत्रमुग्ध हो उस महिला को हंसते हुए देखता रहा. फिर मुसकराते हुए उस ने हाईफाई वाली मुद्रा में अपनी दाईं हथेली आगे बढ़ाई और महिला ने भी हंसते हुए ही उस के हाथ पर ताली दे दी.

महिला हंसतेहंसते अचानक रुक गई, बोली, "आप ने इस तरह हाथ आगे क्यों बढ़ाया?"

"क्योंकि मेरी विद्या कहती है कि आप हंसते हुए सामने वाले के हाथ पे ताली मार कर अपनी हंसी समाप्त करती हैं."

"आप को यह बात कैसे पता?" महिला ने हैरत से पूछा.

"कहा न, कि मेरी फेसरीडिंग विद्या मुझे सिग्नल देती है."

"इंटरैस्टिंग, वैरी इंटरैस्टिंग. और क्या सिग्नल दे रही है आप की फेसरीडिंग विद्या?"

महिला दिवाकर के चेहरे को गौर से पढ़ने लगी. दिवाकर भी गौर से महिला के चेहरे को देखने लगा. कुछेक क्षण देखता रहा. फिर आंखें बंद कर के बोला, "आप के चेहरे को देख कर मुझे पुष्प दिखाई पड़ने लगे हैं. पुष्प के साथ भीमराव बाबासाहेब अंबेडकर भी दिखने लगे हैं. मतलब, आप का दिल्ली में पुष्प या अंबेडकरजी से कोई संबंध जरूर होगा. मतलब, कोई गार्डन या अंबेडकरजी से संबंधित कोई पुस्तक या कोई नगर या घर का पता वगैरहवगैरह."

दिवाकर ने अब आंखें खो दीं. उस ने देखा, महिला आश्चर्य से भरी उस को अपलक देख रही थी.

"और, और क्या बता रही है तुम्हारी विद्या, तुम्हारी यह फेसरीडिंग?" महिला ने गंभीर होते हुए पूछा.

"लेकिन आप ने जवाब नहीं दिया कि आप का पुष्प और अंबेडकरजी से क्या संबंध है?"

"मैं दिल्ली में पुष्प विहार में रहती हूं, उसे अंबेडकर नगर भी कहते हैं."

"आप हाथ आगे कीजिए एक मिनट."

महिला ने दिवाकर की बात का अनुसरण किया. दिवाकर थोड़ा आगे झुक कर महिला की हथेली को किसी अनुभवी और प्रशिक्षित ज्योतिषी की भांति देखने लगा. कुछ देर निरीक्षण करने के बाद वह वापस पीछे की ओर सरक गया और गौर से महिला के फेस को देखा, फिर आंखें बंद कर मंदमंद मुसकराने लगा.

"क्या बात है, आप मुसकरा क्यों रहे हैं?" महिला ने आश्चर्य से पूछा.

"कोई खास बात नहीं है," दिवाकर ने आंखें बंद किएकिए ही कहा.

"कोई ख़ास बात नहीं है तो फिर यों एकाएक मुसकराने का सबब?"

"देखिए, यदि आप बुरा न माने तो कहूं?"

"ऐसी क्या बात है?"

"मुझे कुछ ऐसा दिखाई पड़ रहा है कि असमंजस में हूं कि कहूं या न कहूं. कहूं तो डर है कि कहीं आप बुरा न मान जाएं."

"ऐसा क्या विलक्षणण दिख रहा है आप को कि दुविधाग्रस्त हो गए, मैं जानना चाहती हूं, मेरी उत्सुकता न बढ़ाइए."

"तो सुनिए, मुझे दिखाई पड़ रहा है एक रसगुल्ला, उस के ऊपर रखी हुई एक मूंछ, एक किताब, जिस पर 'कविता' लिखा हुआ है. एक चाक, एक डस्टर और साथ में गुलाब के 2 अधखिले फूल. कुछ समझ में आया, मैडम?"

"मैं कैसे समझ सकती हूं, तुम यह सब देख रहे हो, तुम ही बताओ?"

"शायद मैं गलत भी हो सकता हूं लेकिन इन सब के मुताबिक जैसे, रसगुल्ले के ऊपर मूंछ अर्थात मिठाई और व्यक्ति, मतलब आप का या आप के किसी करीबी का मिठाइयों का कारोबार या मिठाई में दिलचस्पी"

"मेरे पिताजी की मिठाई की दुकान है," महिला ने दिवाकर की बात काटते हुए कहा.

"ओके, दूसरा, एक कविता की किताब और चाकडस्टर अर्थात आप टीचर हैं और हिंदी विषय की शिक्षिका हैं. क्या यह भी सही है?"

"हां, सही है."

दिवाकर ने अब महिला के चेहरे को और भी गौर से देखते हुए कहा, "मैं ने कहा था न कि यहां फेसरीडिंग का एक इंटरैस्टिंग सैशन होने वाला है," दिवाकर ने आंखें खोलते हुए कहा.

"वह सब तो ठीक है परंतु अभी आप ने पूरी बात नहीं बताई है. उन 2 अधखिले गुलाब के फूलों का क्या रहस्य है?" महिला ने दिवाकर की आंखों में आंखें गडाते हुए पूछा.

दिवाकर कुछ क्षण खामोश रहा, फिर एक गहरी निश्वास खींचते हुए बोला, "वे आप के युवावस्था के अधूरे प्रेम के प्रतीक हैं."

"क्या बकवास कर रहे हैं, आप? यों ही कुछ भी अनापशनाप आप कहेंगे और मैं हां करती जाऊंगी. यह ग़लत है." यह कह कर महिला खिड़की के बाहर देखने लगी. दिवाकर उसे गौर से देखने लगा. कुछ देर तक कंपार्टमैंट में मौन छा गया.

"लेकिन मेरी विद्या और आप के फेशियल एक्सप्रैशन कह रहे हैं कि मैं जो कह रहा हूं वह ग़लत नहीं है."

"मुझे लगता है कि ये बहुत निजी बातें होती हैं जिन्हें सब से शेयर नहीं करनी चाहिए."

"मैं आप की भावना का सम्मान करता हों पर फिर भी सच बताइएगा, क्या कोई आप से प्रेम करता था कालेज में?"

महिला ट्रेन की छत पर लगे पंखे को देखने लगी. कुछ देर मौन रही.

"देखिए, यदि आप नहीं बताना चाहती हैं तो ठीक है, मैं अपनी दुकान बंद करता हूं."

महिला ने उस की ओर देखा, फिर गहरी सांस छोड़ते हुए बोली, "यस, मैं जानती थी कि वह मुझे चाहता है पर कभी कह नहीं सका. शरीफ और ईमानदार लड़का था."

"क्या उस ने कभी कुछ नहीं कहा?"

"नहीं, कभी नहीं."

"लेकिन मेरी विद्या कहती है कि उस ने एक बार इज़हार किया था."

"तो आप यह कहना चाहते हैं कि मैं झूठ बोल रही हूं?"

"नहीं, बिलकुल नहीं. लेकिन आप कोशिश कर रही हैं, पर आप का फेस इस के उलट गवाही दे रहा है."

महिला फिर से खिड़की के बाहर तेजी से बदलते दृश्यों को देखने लगी. उस का चेहरा गंभीर हो उठा.

"हां, एकदो बार कहने की कोशिश जरूर की थी उस ने पर हिम्मत नहीं जुटा सका था. फिर आखिरकार एक दिन उस ने इस पार या उस पार की मुद्रा में कहा.

"'मतलब?"

"मतलब, उस ने सीधेसीधे मुझ से कहा कि वह मुझ से शादी करना चाहता था."

"वैरी इंटरैस्टिंग, तो फिर अड़चन क्या थी?"

"अड़चन मैं खुद थी. मेरे संस्कार, मेरा डर था."

"मतलब, आप ने उसे मना कर दिया?"

"कह सकते हो."

"फिर आप उस से कभी नहीं मिलीं?"

"मिली थी एकदो बार उस के दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैंपस में."

"क्यों, आप ने तो उसे मना कर दिया था, फिर क्यों मिलीं आप?"

"बस, ऐसे ही मन किया."

"मतलब, आप भी उस से प्यार करती थीं?"

"हो सकता है. यह अनुभूति मुझे उस के एमए में पास आउट हो जाने के बाद महसूस हुई. उस के बाद फिर उस से कभी नहीं मिली. पच्चीसछब्बीस साल हो गए हैं इस बात को, अब तो वह मेरे सामने आ भी जाए तो शायद मैं उसे पहचान न पाऊं."

"और अगर वह संयोग से किसी दिन आप के सामने आ ही गया तो वह आप को पहचान लेगा?"

"सौ फीसदी पहचान लेगा," महिला ने दृढ़ता से कहा.

"लेकिन पच्चीसतीस सालों में तो आदमी की शक्लसूरत, चालढाल, डीलडौल सब बदल जाता है. आप में भी तो बदलाव आए होंगे, फिर भी आप को विश्वास है कि वह आप को पहचान लेगा?"

"बिलकुल, बिलकुल विश्वास है," महिला ने फिर दृढ़ता से कहा.

"आप जानना नहीं चाहती हैं कि इस समय वह कहां और कैसा है?"

"जरूर जानना चाहती हूं, बल्कि, मैं यह भी जानना चाहती हूं कि उस ने शादी की या नहीं, क्या तुम बता सकते हो?"

दिवाकर मुसकरा दिया और उस ने आंखें बंद कर लीं. कुछ क्षण मौन, बंद आंखों के साथ मुसकराता रहा. फिर आंखें बंद किए हुए ही बोला, "उस के 2 बच्चे हैं. एक खूबसूरत, मृदुभाषिणी पत्नी है जो उस पर अपनी जान निछावर करने को हमेशा तैयार रहती है. खुश है वह अपनी दुनिया में, सुखी है."

यह कह कर दिवाकर ने आंखें खोल दीं, देखा, महिला की आंखें सजल हो आई थीं. उस ने दुपट्टे से आंखें पोंछते हुए कहा, "मुझे ख़ुशी है कि वह सुखी है."

"मैडम, एक बात पूछूं? ऐक्चुअली मैं भविष्यवाणी नहीं करता और न ही भविष्य के बारे में कुछ बताता हूं लेकिन मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूं, हालांकि यह एक निजी प्रश्न है फिर भी, क्या आप ने शादी की?"

"की थी, मैं ने भी शादी की थी, पर मेरी शादी की उम्र मात्र 3 साल ही रही. लेकिन छोड़ो, मुझे ख़ुशी है कि वह सुखी है," कहते हुए महिला फिर से बाहर देखने लगी.

खेत, घर, सड़क, पेड़ों का समूह, दूर पहाड़ों की पंक्तियां तीव्र गति से पीछे छुटते जा रहे थे. कुछ देर बाद स्टेशन आ गया और ट्रेन रुक गई. प्लेटफौर्म से चायपकौड़े, पूरीसब्जी की आवाजें आने लगीं. सवारी का चढ़नाउतरना जारी था. तभी एक फैमिली कंपार्टमैंट में दाखिल हुई और दिवाकर के सामने आ कर खड़ी हो गई.

दिवाकर समझ गया कि आरक्षित बर्थ का वास्तविक स्वामी आ गया है. उस ने एक क्षण महिला को देखा. फिर तुरंत ही अपना सूटकेस और हैंडबैग ले कर नीचे उतर गया. खिड़की के पास आ कर महिला से बोला, "यह मेरा कार्ड है, कभी कोई समस्या हो, जरूरत हो, तो मुझे याद कर लेना. मुझे तुम्हारे कुछ काम आने में बहुत खुशी होगी." यह कह कर उस ने खिड़की की सलाखों के सामने एक विशेष मुद्रा में राजेश खन्ना स्टाइल में सिर झुका कर दाएं हाथ की एक उंगली से जैसे ही सैल्यूट किया, वैसे ही ट्रेन खिसकने लगी.

यह देख महिला का मुंह आश्चर्य से खुला का खुला ही रह गया. वह दौड़ कर दरवाजे तक गई. परंतु तब तक ट्रेन ने गति पकड़ ली थी. प्लेटफौर्म पीछे छूटने लगा था. महिला की नजर दूरदूर तक प्लेटफौर्म पर दौड़ कर लौट आई पर वो नहीं दिखा. उस ने दुपट्टे से अपना मुंह ढांप लिया. वह वापस अपनी बर्थ पर आ बैठी.

'वो मेरे सामने था और मैं उसे पहचान न पाई, ओह!'

वह छत के पंखे को एकटक देखने लगी. उस की सांसें तेज़तेज़ चलने लगीं. वह उस के साथ हुई बातचीत को मन ही मन रिवाइंड करने लगी. उस ने बर्थ की पीठ पर सिर टिका दिया और आंखें मूंद लीं. फिर कुछ देर बाद अचानक उस का ध्यान हाथ में पकड़े कार्ड की ओर गया. उस ने कार्ड देखा, उस के कोनों में उकेरी गई नीली कमल पत्तियों को देख मुसकरा दी.

'दुनिया कितनी छोटी है, रश्मि, वह एक बार फिर तुम्हारे सामने था और तुम पहचान न सकी. उस ने इतने सालों बाद भी झट से तुझे पहचान लिया. तुझ से बतियाता रहा, हायवाय भी किया. घर, परिवार, ऐड्रेस, कालेज की बात की. और तू मूर्ख, उस की बातों में ही अटकी रही. उसे न पहचान सकी. दिवाकर, मुझे समझ जाना चाहिए था कि तुम फेसरीडिंग नहीं बल्कि इतने सालों बाद मुझे पहचान कर पुरानी स्मृतियों को ताज़ा कर रहे थे.'

यह सब सोचतेसोचते महिला (रश्मि) मुसकराने लगी. उस ने अपने हैंडबैग में से एक कार्ड निकाला और उसे दिवाकर के दिए कार्ड के साथ मिलाने लगी. नीली कमल पत्तियों वाले दोनों कार्डों पर लिखा था- 'तुम सर्वश्रेष्ठ हो.' उस ने दोनों कार्डों को हैंडबैग में रखा और मुसकराते हुए एक बार फिर खिड़की के बाहर देखने लगी.

कुछ देर पहले के निर्जन मैदानों, सूखे-कंटीले पेड़ों, काले-मटमैले पहाड़ों के दृश्यों की जगह अब हरेभरे लहलहाते खेतों, फूलों से लदेफंदे पेड़पौधों, बलखाती नदी के दृश्यों ने ले ली थी. और रश्मि खयालों में खोई, बाहर की ओर देखते हुए लगातार मुसकरा रही थी.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

आवासीय बाजार में जोरदार तेजी, दिल्ली-एनसीआर में 31 फीसदी बढ़े घरों के दाम

परिवहन विशेष न्यूज

2024 की अंतिम तिमाही में भारत के आठ प्रमुख शहरों में मकानों की कीमतों में 10% की सालाना वृद्धि दर्ज की गई। दिल्ली-एनसीआर (31%) और बेंगलुरु (23%) में सबसे अधिक उछाल आया। बिना बिके मकानों की संख्या घटी खासकर पुणे (14%) और हैदराबाद (13%) में। लग्जरी और अल्ट्रा-लक्जरी सेगमेंट की मांग बढ़ रही है। 2025 में ब्याज दरों में कटौती से बिक्री और बढ़ने की संभावना है।

नई दिल्ली। कैलेंडर ईयर 2024 की अंतिम तिमाही में भारत के आठ प्रमुख शहरों में आवासीय संपत्तियों की औसत कीमतों में 10% सालाना वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि 2021 से लगातार 16वीं तिमाही जारी रही, जो मजबूत मांग और सकारात्मक बाजार रुझानों का संकेत है।

दिल्ली-एनसीआर और बेंगलुरु में सबसे तेज ग्रोथ

दिल्ली-एनसीआर में सबसे ज्यादा 31% की वृद्धि हुई, खासकर लग्जरी और अल्ट्रा-लग्जरी सेगमेंट में।

बेंगलुरु में 23% की सालाना वृद्धि दर्ज की गई।

अहमदाबाद में 15%, पुणे में 9% और चेन्नई में 6% की वृद्धि हुई।

हैदराबाद में मात्र 2% और कोलकाता में 1% की हल्की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

बिना बिके मकानों की संख्या में गिरावट

2024 की चौथी तिमाही में बिना बिके मकानों की संख्या लगातार चौथी बार घटी और सालभर में इसमें 5% की कमी दर्ज की गई। देशभर में बिना बिके मकानों की संख्या दिसंबर 2024 तक पहली बार 10 लाख से कम हो गई।

पुणे में सबसे अधिक 14% और हैदराबाद में 13% की गिरावट दर्ज की गई। हालांकि, 40% बिना बिके मकान अकेले मुंबई मेट्रो रीजन (MMR) में थे।

बड़े मकानों और बेहतर सुविधाओं की मांग बढ़ी

क्रेडाई नेशनल के अध्यक्ष बोमन ईरानी के अनुसार, ₹मकानों की कीमतों में बढ़ोतरी यह बताती है कि खरीदारों का भरोसा बना हुआ है। लोग अब बड़े घरों और बेहतर सुविधाओं वाले अपार्टमेंट्स को प्राथमिकता दे रहे हैं। इससे एकीकृत टाउनशिप और हाई-एंड प्रोजेक्ट्स की मांग बढ़ रही है।₹ उन्होंने यह भी बताया कि निर्माण लागत और ऊंची जमीन की कीमतें भी इस वृद्धि के प्रमुख कारण हैं।

2025 में भी कीमतों में तेजी की संभावना

कोलियर्स इंडिया के CEO बादल यागिनक का कहना है, ₹दिल्ली-एनसीआर और बेंगलुरु जैसे शहरों में लग्जरी और अल्ट्रा-लग्जरी सेगमेंट की मांग बढ़ने से कीमतों में सबसे ज्यादा उछाल आया है।₹ रेपो रेट में कटौती और सरकारी योजनाओं से किफायती मकानों की मांग बढ़ने की उम्मीद है। अगर ब्याज दरें घटती हैं, तो मकानों की बिक्री तेज होगी और 2025 में भी कीमतों में इसी तरह की 10% सालाना वृद्धि जारी रह सकती है।

शीर्ष शहरों में दिल्ली-एनसीआर सबसे आगे

दिल्ली-एनसीआर की बात करें, तो द्वारका एक्सप्रेसवे पर 58% की सालाना वृद्धि हुई। ग्रेटर नोएडा में 52% की कीमतों में उछाल देखा गया। वहीं, जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट के कारण आसपास के इलाकों में कीमतों में और बढ़ोतरी की संभावना है।

इसके अलावा बेंगलुरु, अहमदाबाद और पुणे में इन्फ्रास्ट्रक्चर सुधार और बेहतर कनेक्टिविटी के चलते मकानों की कीमतों में 15% तक की वृद्धि देखी गई। बेंगलुरु के आउटर वेस्ट और पेरिफेरी इलाकों में रेडी-टू-मूव मकानों की मांग बढ़ी है। पुणे के बानेर और नगर रोड जैसे क्षेत्रों में भी कीमतों में तेजी रही।

बिना गारंटी के 3 लाख का लोन, सिर्फ 5% देना होगा ब्याज; जानें लाभ उठाने का पूरा प्रोसेस

परिवहन विशेष न्यूज

पीएम विश्वकर्मा योजना छोटे शिल्पकारों और कारीगरों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण उपलब्ध कराती है। इसके तहत 5% ब्याज दर पर 3 लाख रुपये तक का बिना गारंटी लोन मिलता है। योजना में मुफ्त स्किल ट्रेनिंग 500 रुपये प्रतिदिन स्टाइपेंड 15000 रुपये टूल किट सहायता और डिजिटल ट्रांजैक्शन पर इनाम शामिल है। पात्रता के लिए पारंपरिक व्यवसाय से जुड़ा होना जरूरी है।

नई दिल्ली। देश के कई छोटे कारोबारी और शिल्पकार अपने कामकाज को बढ़ाना चाहते हैं। लेकिन, उनके सामने पूंजी की समस्या आ जाती है। उनकी मदद के लिए केंद्र सरकार की एक खास स्कीम है, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना (PM Vishwakarma Yojana)। इसमें सिर्फ 5 फीसदी की ब्याज दर पर 3 लाख रुपये तक का लोन मिल जाता है। इसके लिए आपको कुछ गिरवी रखने की जरूरत भी नहीं होती है।

क्या है पीएम विश्वकर्मा योजना

पीएम विश्वकर्मा योजना केंद्र सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है। इसका मकसद छोटे शिल्पकारों और कारीगरों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण देना है। इसकी शुरुआत 1 फरवरी 2023 को हुई थी। इस योजना के तहत मुफ्त में स्किल ट्रेनिंग और रोजगार के लिए सस्ती ब्याज पर लोन दिया जाता है। इसमें प्रशिक्षण के दौरान रोजाना 500 रुपये दिए जाते हैं। साथ ही, टूल किट खरीदने के लिए 15,000 रुपये की रकम बैंक ट्रांसफर के जरिए दी जाती है। यह योजना सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME) चला रहा है।

3 लाख रुपये तक का आसान लोन

पीएम विश्वकर्मा योजना में लाभार्थियों को कुल तीन लाख रुपये का कर्ज मिलता है। यह रकम दो चरण में दी जाती है। पहले चरण में 1 लाख रुपये तक का लोन मिलता है, जिसकी अवधि 18 महीने होगी। दूसरे चरण में 2 लाख रुपये तक का लोन, जिसकी अवधि 30 महीने होगी। इस लोन पर सिर्फ 5% की रियायती ब्याज दर लागू होगी।

किन व्यवसायों से जुड़े लोग पात्र हैं?

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के तहत 18 पारंपरिक व्यवसायों से जुड़े लोग आवेदन कर सकते हैं, जैसेः

बढ़ई, नाव बनाने वाले
लोहार, ताला बनाने वाले
सुनार, मूर्तिकार
राजमिस्त्री, मछली पकड़ने वाले
धोबी, दर्जी, नाई
खिलौना बनाने वाले, कुम्हार
जूता बनाने वाले, टोकरी/चटाई/झाड़ू बनाने वाले

योजना के लिए पात्रता (Eligibility)

आवेदक सूचीबद्ध 18 पारंपरिक व्यवसायों में से किसी एक से जुड़ा होना चाहिए।

आवेदक 18 वर्ष या उससे अधिक का होना चाहिए।

वह पहले से PMEGP, PM Swanidhi, Mudra Loan जैसी अन्य योजनाओं का लाभार्थी नहीं होना चाहिए।

19वीं किस्त नहीं मिली? जानिए क्या हो सकती है वजह और कहां करें शिकायत

परिवहन विशेष न्यूज

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की 19वीं किस्त 24 जनवरी 2025 को जारी हुई लेकिन कई किसानों को अब तक पैसा नहीं मिला। ई-केवाईसी गलत बैंक डिटेल्स आधार में गड़बड़ी या भूलेख सत्यापन अधूरा होने से भुगतान रोका जा सकता है। किसान PM-Kisan हेल्पलाइन ईमेल या फिर ऑनलाइन पोर्टल पर जाकर शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की 19वीं किस्त सोमवार (24 जनवरी 2025) को बिहार के भागलपुर से जारी की थी। इस योजना के तहत लगभग 10 करोड़ किसानों को 23,000 करोड़ रुपये डीबीटी (DBT) के जरिए सीधे बैंक खातों में ट्रांसफर किए गए। कई किसानों को यह किस्त मिल गई, लेकिन कुछ किसानों के खाते में अब तक पैसे नहीं पहुंचे हैं। अगर आपके खाते में भी यह किस्त जमा नहीं हुई है, तो घबराने की जरूरत नहीं है। आप सक्षम अधिकारियों के पास शिकायत दर्ज करा सकते हैं और अपनी समस्या का जल्दी निपटान भी करा सकते हैं।

हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करें

आप PM-Kisan हेल्पलाइन नंबर 1800-115-526 या 155261 पर कॉल करके अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। यह हेल्पलाइन सुबह 6:00 बजे से रात 10:00 बजे तक उपलब्ध रहती है।

ईमेल के जरिए शिकायत दर्ज करें

आप अपनी समस्या pmkisan-ict@gov.in पर ईमेल करके भी भेज सकते हैं। ईमेल में अपना आधार नंबर, बैंक खाता डिटेल और समस्या का विवरण स्पष्ट रूप से लिखें ताकि जल्द से जल्द समाधान मिल सके।

PM-Kisan पोर्टल पर ऑनलाइन कैसे करें शिकायत?

आप PM-Kisan की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर सकते हैं।

स्टेप 1: "किसान कॉर्नर" सेक्शन में जाएं।

स्टेप 2: "शिकायत दर्ज करें" विकल्प पर क्लिक करें।

स्टेप 3: आवश्यक जानकारी भरें और शिकायत सबमिट करें।

स्टेप 4: "शिकायत की स्थिति जानें" ऑप्शन से कंप्लेन स्टेटस ट्रैक करें।

राज्य नोडल अधिकारी से संपर्क करें

हर राज्य में PM-Kisan योजना के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। आप अपने राज्य के नोडल अधिकारी से संपर्क करके भी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। उनकी संपर्क जानकारी आपको PM-Kisan पोर्टल पर मिल जाएगी।

क्यों नहीं मिली 19वीं किस्त?

PM-Kisan योजना के तहत e-KYC अनिवार्य है। यदि आपने ई-केवाईसी पूरी नहीं की है, तो तुरंत PM-Kisan पोर्टल पर जाकर OTP आधारित e-KYC करें या CSC केंद्र पर जाकर बायोमेट्रिक e-KYC पूरा करें।

गलत IFSC कोड, बैंक अकाउंट नंबर या आधार नंबर दर्ज होने से ट्रांजेक्शन फेल हो सकता है। समाधान के लिए स्थानीय कृषि विभाग या बैंक शाखा से संपर्क करें और सही जानकारी अपडेट करवाएं।

आधार कार्ड और बैंक खाते में अलग-अलग नाम दर्ज होने के कारण भी भुगतान फेल हो सकता है। इस स्थिति में, बैंक शाखा से संपर्क करें और सही नाम अपडेट करवाएं।

जिन किसानों के जमीन के दस्तावेज (Land Record) का वेरिफिकेशन अधूरा है, उनकी किस्त रोकी जा सकती है। अपने राज्य के कृषि विभाग या पटवारी/लेखपाल से संपर्क करें और जरूरी दस्तावेज जमा करें।

समस्या से बचने के लिए क्या करें?

समय पर ई-केवाईसी पूरा करें।

बैंक खाते की सही जानकारी अपडेट करें।

भूलेख सत्यापन की प्रक्रिया पूरी करें।

PM-Kisan पोर्टल पर स्टेटस नियमित रूप से चेक करें।

अगर इन सभी उपायों के बाद भी आपकी 19वीं किस्त नहीं आई, तो केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अधिकारियों से संपर्क करें। उनकी संपर्क जानकारी PM-Kisan पोर्टल के ₹Contact Us₹ सेक्शन में उपलब्ध है।

PM-Kisan Helpline: 1800-115-526 | 155261

PM-Kisan Email: pmkisan-ict@gov.in

PM-Kisan Official Website

सोर्स:

PM Kisan Official Website

Press Information Bureau (PIB)

ईपीएफओ ने दी बड़ी राहत, यूएएन एक्टिवेशन और आधार लिंक की डेडलाइन बढ़ाई; जानें स्टेप बाय स्टेप प्रोसेस

परिवहन विशेष न्यूज

EPFO ने UAN एक्टिवेशन और आधार लिंकिंग की डेडलाइन बढ़ाकर 15 मार्च 2025 कर दी है। UAN एक्टिव करने से कर्मचारी PF बैलेंस चेक पासबुक डाउनलोड और ऑनलाइन क्लेम कर सकते हैं। इसे एक्टिवेट करने के लिए EPFO की वेबसाइट पर जाकर आधार नंबर UAN और OTP वेरिफिकेशन की प्रक्रिया पूरी करनी होगी। बिना देरी के इसे जल्द पूरा करें।

नई दिल्ली। EPFO Extend UAN Activation Deadline: कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) ने नौकरीपेशा लोगों को बड़ी राहत दी है। उसने यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (UAN) को एक्टिव करने और बैंक अकाउंट को आधार से लिंक (Aadhaar Link) करने की डेडलाइन को बढ़ा दिया है। अब यह जरूरी काम 15 मार्च 2025 तक किया जा सकता है। यह डेडलाइन 15 फरवरी 2025 को खत्म हो गई थी।

EPFO की सभी ऑनलाइन सर्विसेज का लाभ उठाने के लिए UAN एक्टिवेट करना जरूरी है। EPFO ने यह जानकारी अपने आधिकारिक ट्विटर (अब X) अकाउंट के जरिए साझा की है।

UAN Activation क्यों जरूरी है?

यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (UAN) 12 अंकों का होता है। इसके जरिए कर्मचारी अपने PF खाते से जुड़ी सभी जानकारियों को ट्रैक कर सकते हैं। UAN Activation के कई फायदे हैं:

आप EPFO की सभी ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

PF खाते की जानकारी देख सकते हैं और पासबुक डाउनलोड कर सकते हैं।

PF राशि को ऑनलाइन विड्रा (Withdraw) कर सकते हैं।

बिना किसी परेशानी के PF ट्रांसफर कर सकते हैं।

रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (ELI Scheme) का लाभ ले सकते हैं।

EPFO की ELI योजना के तहत सरकार नए कर्मचारियों को इंसेंटिव और अन्य लाभ देती है। इसलिए UAN को आधार और बैंक खाते से लिंक करना बेहद जरूरी है।

कैसे करें UAN Activation और Aadhaar Link?

आइए UAN Activation का सबसे आसान तरीका जानते हैं:

EPFO की आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं।

Services सेक्शन में 'For Employees' पर क्लिक करें।

'Member UAN Online Service' पर क्लिक करें।

'Activate UAN' पर क्लिक करें।

12 अंकों का UAN, आधार नंबर, नाम, जन्मतिथि, मोबाइल नंबर और कैप्चा डालें।

'Get Authorization Pin' पर क्लिक करें।

Aadhaar से लिंक मोबाइल नंबर पर OTP आएगा, इसे दर्ज करें और Submit पर क्लिक करें।

UAN एक्टिवेट हो जाएगा और मोबाइल पर एक पासवर्ड मिलेगा।

UAN और पासवर्ड डालकर लॉगिन करें।

Aadhaar को EPF अकाउंट से कैसे लिंक करें?

EPFO की आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं।

'For Employees' सेक्शन में 'Member UAN Online Service' पर क्लिक करें।

UAN और पासवर्ड डालकर लॉगिन करें।

'Manage' सेक्शन में 'KYC' ऑप्शन पर क्लिक करें।

आधार नंबर और बैंक अकाउंट डिटेल दर्ज करें।

'Save' पर क्लिक करें और EPFO के वेरिफिकेशन का इंतजार करें।

KYC अप्रूव होने के बाद EPF खाते से आधार लिंक हो जाएगा।

EPFO के नए बदलाव और आगे की योजनाएं

EPFO अब UPI के जरिए PF निकासी की सुविधा देने की योजना बना रहा है। इससे PF निकासी और भी आसान हो जाएगी। EPFO ने नए नियम लागू किए हैं, जिनके तहत बिना किसी दस्तावेज के नाम और जन्मतिथि में सुधार किया जा सकता है। अब EPFO सदस्य स्वयं अपने PF अकाउंट को एक नियोक्ता से दूसरे नियोक्ता के पास ट्रांसफर कर सकेंगे।

अगर आपको EPFO से जुड़ी कोई भी समस्या है, तो उसका समाधान पाने के लिए आप EPFO हेल्पलाइन नंबर 1800-118-005 पर भी संपर्क कर सकते हैं।

ट्रंप के टैरिफ वॉर से बेहाल होंगे एशियाई देश; भारत, कोरिया और थाईलैंड पर ज्यादा होगा असर

एसएंडपी ग्लोबल की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप (Donald Trump) के टैरिफ वॉर (Tariff War) से एशिया-प्रशांत देशों को भारी नुकसान हो सकता है। भारत (India) दक्षिण कोरिया (South Korea) और थाईलैंड (Thailand) पर इसका अधिक असर पड़ेगा। अमेरिका पहले ही चीन (China) से आयातित वस्तुओं पर 10% अतिरिक्त शुल्क (10% Additional Tariff) और इस्पात-एल्युमिनियम पर 25% शुल्क (25% Tariff on Steel Aluminium) लगा चुका है।

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में कई एशिया-प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं को भारी टैरिफ का सामना करना पड़ सकता है। अगर ऐसा होता है तो इसका सबसे अधिक असर भारत, दक्षिण कोरिया और थाईलैंड पर होगा।

रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ग्लोबल ने सोमवार को अपनी रिपोर्ट 'अमेरिकी व्यापार शुल्क से एशिया-प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं पर असर पड़ने की संभावना' में कहा कि वियतनाम, ताइवान, थाईलैंड और दक्षिण कोरिया जैसी अर्थव्यवस्थाओं का अमेरिका के प्रति आर्थिक जोखिम अपेक्षाकृत अधिक है। इसका अर्थ है कि अगर शुल्क लगाया गया तो इनपर इसका सबसे बड़ा आर्थिक प्रभाव होगा।

भारत और जापान पर कम होगा असर?

एसएंडपी ने कहा, 'भारत और जापान की अर्थव्यवस्थाएं घरेलू रूप से चालित हैं, जिससे इन शुल्क का असर उन पर कुछ कम होगा।' अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि वह भारत सहित अपने व्यापारिक साझेदारों पर जवाबी शुल्क लगाएंगे। नया अमेरिकी प्रशासन पहले ही चीन से आयात पर अतिरिक्त 10 प्रतिशत शुल्क और इस्पात तथा एल्युमिनियम पर 25 प्रतिशत शुल्क लागू कर चुका है।

एसएंडपी ने कहा, 'अनिश्चितता बहुत अधिक है, क्योंकि अमेरिकी प्रशासन ने साझेदार अर्थव्यवस्थाओं पर व्यापार शुल्क लगाने में काफी बेबाकी दिखाई है। द्विपक्षीय वार्ता भी परिणामों को प्रभावित कर सकती है। हालांकि, एशिया-प्रशांत क्षेत्र की कई अर्थव्यवस्थाएं इसके दायरे में हैं और आर्थिक गतिविधियों के लिए जोखिम मंडरा रहा है।'

अमेरिकी उत्पादों पर अधिक शुल्क

रेटिंग एजेंसी ने कहा कि एशिया-प्रशांत क्षेत्र के कुछ देश अमेरिकी उत्पादों पर अमेरिका द्वारा उनके उत्पादों पर लगाए गए शुल्कों की तुलना में काफी अधिक शुल्क लगाते हैं। उन अर्थव्यवस्थाओं पर 'जवाबी शुल्क कार्रवाई' के लिए संभावित जांच की जाएगी।

इसने कहा, 'इस पर नजर रखना मुश्किल है, क्योंकि यह स्पष्ट नहीं है कि अमेरिकी प्रशासन शुल्क की तुलना किस स्तर पर करेगा। परिणाम बहुत भिन्न हो सकते हैं, जो लागू किए गए विवरण के स्तर पर निर्भर करेगा।' अपनी रिपोर्ट में एसएंडपी ने एशिया-प्रशांत अर्थव्यवस्थाओं में अमेरिकी उत्पादों पर भारित औसत शुल्क दरों; उन्हीं अर्थव्यवस्थाओं से आयात पर अमेरिकी शुल्क तथा दोनों के बीच अंतर पर गौर किया।

टैरिफ पर भारत का रुख क्या है?

उच्चपदस्थ सूत्रों का कहना है कि भारत के हक में अच्छी बात यह है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पिछले एक माह में सिर्फ भारत के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) की बात की है। यह भारत के प्रति अमेरिका का सकारात्मक रुख है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ ट्रंप ने दोनों देशों के बीच व्यापार को 500 अरब डॉलर तक ले जाने की घोषणा की।

निवेश के लिए युवाओं की पहली पसंद बन रहा शेयर बाजार, क्या है इसकी वजह?

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में 35 साल से कम उम्र के 45% युवा निवेश के लिए शेयर बाजार (Stock Market) को प्राथमिकता दे रहे हैं। वित्तीय जागरूकता (Financial Awareness) टेक्नोलॉजी (Technology) लॉन्ग-टर्म वेल्थ क्रिएशन (Long-term Wealth Creation) और डिजिटल प्लेटफॉर्म (Digital Platforms) की मदद से निवेश आसान हो गया है। हालांकि बाजार की अस्थिरता (Market Volatility) को लेकर 51% निवेशक चिंतित हैं।

नई दिल्ली। भारत में 35 साल से कम उम्र के 45 फीसदी युवा निवेश के लिए शेयर बाजार (Stock Market Investment) को प्राथमिकता दे रहे हैं। रिसर्च फर्म 1Lattice और StockGro की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, युवाओं का इक्विटी निवेश (Equity Investment) की ओर रुझान बढ़ने का मुख्य कारण वित्तीय जागरूकता (Financial Awareness), टेक्नोलॉजी की मदद से बेहतर निवेश विकल्प और लॉन्ग-टर्म वेल्थ क्रिएशन (Long-term Wealth Creation) का लक्ष्य है।

इक्विटी इन्वेस्टमेंट पर क्यों फोकस कर रहे हैं युवा?

रिपोर्ट के अनुसार, 81% उत्तरदाताओं ने शेयर बाजार में निवेश कर रखा है, जो दर्शाता है कि युवा पारंपरिक बचत योजनाओं से हटकर सीधे इक्विटी मार्केट (Direct Equity Market) में निवेश कर रहे हैं। हालांकि, 42% गैर-निवेशकों को लगता है कि उनके पास निवेश शुरू करने के लिए जरूरी जानकारी की कमी है, जबकि 44% निवेशक स्टेप-बाय-स्टेप गाइडेंस चाहते हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म और AI से निवेश सीखना आसान

डिजिटल निवेश प्लेटफॉर्म की बढ़ती लोकप्रियता के चलते 68% निवेशक डिजिटल माध्यमों का उपयोग कर ट्रेडिंग और निवेश सीखना पसंद कर रहे हैं। इसके अलावा, 38% लोग ऑनलाइन वीडियो कोर्स के जरिए निवेश की जानकारी लेना पसंद करते हैं।

AI-बेस्ड इन्वेस्टमेंट रिकमेंडेशन (AI-based Investment Recommendations), रियल-टाइम डेटा (Real-time Data) और वर्चुअल ट्रेडिंग एक्सपीरियंस (Virtual Trading Experience) जैसी सुविधाओं ने निवेश को अधिक आसान बना दिया है। करीब 50% नए निवेशक रियल मनी लगाने से पहले वर्चुअल मनी से अभ्यास करते हैं।

बाजार में अस्थिरता को लेकर निवेशकों की चिंता

हालांकि, 51% निवेशक संभावित बाजार गिरावट (Market Volatility) को लेकर चिंतित हैं। पिछले कुछ महीनों में सेंसेक्स और निफ्टी करीब 15 फीसदी तक गिर चुके हैं। इससे निवेशकों की चिंता बढ़ रही है। हालांकि, उन्हें उम्मीद भी है कि मार्केट में जल्द रिकवरी होगी।

रिपोर्ट बताती है कि डिजिटल निवेश प्लेटफॉर्म (Digital Investment Platforms) छोटे शहरों तक अपनी पहुंच बना रहे हैं, जिससे अधिक लोग वित्तीय साक्षरता हासिल कर रहे हैं।

डिजिटल प्लेटफॉर्म निवेश को बना रहे आसान

StockGro के फाउंडर और CEO अजय लाखोटिया ने कहा, ₹युवा निवेशक डिजिटल निवेश और इक्विटी बाजार में बदलाव का नेतृत्व कर रहे हैं। ऐसे में वित्तीय साक्षरता (Financial Literacy) पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।₹

1Lattice के CEO अमर चौधरी के अनुसार, ₹इक्विटी निवेश को अब वेल्थ क्रिएशन (Wealth Creation) और पैसिव इनकम (Passive Income) के रूप में अपनाया जा रहा है।₹ हालांकि, बढ़ती रुचि के बावजूद, फाइनेंशियल एजुकेशन (Financial Education) एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

स्थानीय पशुओं के संरक्षण की ओर: #VocalForLocalAnimals

आज के दौर में जहाँ कई स्टार्टअप्स विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रहे हैं, वहीं हमें उन बेजुबान जानवरों के बारे में भी सोचना चाहिए जो हमारी मदद के बिना भूखे और प्यासे रह जाते हैं। #वोकलफॉरलोकलएनिमल्स एक ऐसी पहल है, जो स्थानीय और आवारा पशुओं, विशेष रूप से जंगल और सुनसान क्षेत्रों में रहने वाले जानवरों के लिए भोजन और पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने की दिशा में काम करेगी।

गर्मियों में अरावली क्षेत्र के जानवरों के लिए राहत

गर्मियों का मौसम आते ही अरावली क्षेत्र और अन्य सुनसान जगहों पर रहने वाले बंदरों व अन्य जानवरों को भोजन और पानी की भारी किल्लत का सामना करना पड़ता है। ऐसे में यदि उन्हें नियमित रूप से खाने-पीने की सुविधा मिल जाए, तो न केवल वे जंगल में ही रहेंगे बल्कि शहरों या कॉलोनियों में खाने की तलाश में आने से भी बचेंगे। इससे लोगों और जानवरों के बीच होने वाले संघर्ष को भी कम किया जा सकता है।

हाईवे पर जानवरों को न खिलाएं, दुर्घटनाओं से बचें

अक्सर लोग हाईवे के किनारे गाड़ियों से उतरकर बंदरों और अन्य जानवरों को खाना खिलाते हैं। इससे एक समय पर बड़ी संख्या में भूखे जानवर वहाँ इकट्ठा हो जाते हैं और तेज़ रफ्तार से आती-जाती गाड़ियों से दुर्घटनाएं होने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए, ऐसे लोगों से अपील की जाती है कि वे सीधे उन स्थानीय वेंडर्स और स्वयंसेवकों को आर्थिक सहायता दें, जो नियमित रूप से इन जानवरों के लिए भोजन और पानी की व्यवस्था कर रहे हैं। यह तरीका न केवल सुरक्षित रहेगा बल्कि यह भी सुनिश्चित करेगा कि हर दिन इन जानवरों को समय पर खाना मिल सके।

स्थानीय वेंडर्स और स्वयंसेवकों को दें समर्थन

यदि हम सच में इन जानवरों की मदद करना चाहते हैं, तो हमें उन स्थानीय विक्रेताओं और स्वयंसेवकों की मदद करनी होगी जो पहले से ही इस कार्य में लगे हुए हैं। इसके लिए आपः

स्थानीय वेंडर्स को नियमित रूप से आर्थिक सहायता दें ताकि वे भोजन और पानी की निरंतर व्यवस्था कर सकें।

स्थानीय समूहों और संगठनों से जुड़कर सामूहिक प्रयास करें।

जंगल के अंदर या सुनसान स्थानों पर खाने और पानी की व्यवस्था करें ताकि जानवरों को शहरी इलाकों में भटकना न पड़े।

समाजसेवी अंकुर शरण की अपील

अंकुर शरण, जो एक सोशलप्रेन्योर और कैम्पेन बडी (Campaign Buddy) हैं, उन्होंने समाज के लिए कई कल्याणकारी परियोजनाओं को डिजाइन किया है। वे इस पहल के माध्यम से सभी से अनुरोध करते हैं कि वे #वोकलफॉरलोकलएनिमल्स के लिए आगे आएं और स्थानीय स्तर पर जानवरों की सहायता के लिए काम करें। इस तरह हम न केवल जानवरों की ज़िंदगी बचा सकते हैं बल्कि उन्हें उनके प्राकृतिक आवास में सुरक्षित भी रख सकते हैं।

आपका छोटा-सा योगदान एक बड़ी पहल को सफल बना सकता है। आइए, मिलकर एक बेहतर समाज और प्रकृति का निर्माण करें!

श्री राम अवतार मिश्रा जी – अरावली में बेजुबानों के सच्चे संरक्षक

आज के इस विशेष अंक में हम ऐसे व्यक्ति की कहानी प्रस्तुत कर रहे हैं, जो निस्वार्थ भाव से उन बेजुबान प्राणियों की सेवा कर रहे हैं, जो अक्सर हमारी नजरों से दूर रह जाते हैं। हम बात कर रहे हैं श्री राम अवतार मिश्रा जी की, जो नियमित रूप से अरावली रेंज में बंदरों और गायों के लिए केले, दाना-पानी और जल की व्यवस्था करते हैं। उनका यह प्रयास न केवल इन पशुओं की भूख और प्यास मिटाता है, बल्कि उन्हें सुरक्षित रूप से उनके प्राकृतिक आवास में बनाए रखने में भी मदद करता है।

निस्वार्थ सेवा की प्रेरणादायक मिसाल

श्री राम अवतार मिश्रा जी वर्षों से बिना किसी प्रचार-प्रसार के, अपनी जिम्मेदारी समझते हुए इन जानवरों को भोजन और पानी उपलब्ध करवा रहे हैं।

खासतौर पर गर्मियों के मौसम में, जब अरावली क्षेत्र में जल स्रोत सूख जाते हैं, तब मिश्रा जी अपने प्रयासों से यह सुनिश्चित करते हैं कि इन जानवरों को पानी की कमी न हो।

उनका मानना है कि प्रकृति के इन बेजुबान जीवों की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। यदि हम उनके भोजन और पानी की व्यवस्था करेंगे, तो वे शहरों में भोजन की तलाश में नहीं भटकेंगे और मानव-वन्यजीव संघर्ष को रोका जा सकेगा।

श्री राम अवतार मिश्रा जी जैसे लोग समाज के लिए एक प्रेरणा हैं। वे हमें यह सिखाते हैं कि यदि हर व्यक्ति थोड़ा-थोड़ा योगदान करे, तो बेजुबान प्राणियों के लिए एक बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।

अगर आपके पास भी ऐसी कोई कहानी है, तो हमसे साझा करें! हमारे समाज में ऐसे कई लोग हैं, जो निस्वार्थ भाव से पशु-पक्षियों और पर्यावरण के लिए कार्य कर रहे हैं। यदि आप भी किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जो इस दिशा में काम कर रहा है, तो कृपया हमें उनकी कहानी भेजें। हम उनके प्रयासों को दुनिया के सामने लाकर उन्हें सम्मान देने का प्रयास करेंगे।

संपर्क करें और #वोकलफॉरलोकलएनिमल्स अभियान का हिस्सा बनें!

indiangreenbuddy@gmail.com

चढ़ रहा मजदूर जान से खिलवाड़ कर...!

व्यस्ततम मार्ग में विद्युत के पोल पर,
चढ़ रहा मजदूर जान से खिलवाड़ कर।
चंद कदमों दूरी पर महत्व के कार्यालय,
कलेक्टर भवन, पुलिस अधीक्षक निर्भय।
बिन सुरक्षा मजदूरों को करते देखा कार्य,
ठेकेदार भी नीडर बड़ा देख रहा है स्वार्थ।

व्यस्ततम मार्ग में विद्युत के पोल पर,
चढ़ रहा मजदूर जान से खिलवाड़ कर।
चंद रूपयों के लिए उसकी मजबूरी है,
घर चलाना है तो रोजगार भी जरूरी है।
कौनसी सुरक्षा और कौनसे है उपकरण,
मजदूर का सदा से होता रहा है मरण।

व्यस्ततम मार्ग में विद्युत के पोल पर,
चढ़ रहा मजदूर जान से खिलवाड़ कर।
वह कैसे करें पालन-पोषण और निर्वहन,
जान सदा संकट में होती,नहीं निस्तारण।
चढ़ाओं ना खंबे पर, ना करो खिलवाड़,
जान बचे मजदूरों की खुले करो किवाड़।
दो सबको सुरक्षा उपकरण यहीं है दरकार!
(संदर्भः लोकदेश-मजदूर की जान से खिलवाड़ कर बिना सुरक्षा के चढ़ाया जा रहा खंबे पर)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

महाशिवरात्रि केलिए कमिश्नरेट पुलिस ने भुवनेश्वर में यातायात प्रतिबंध लगाया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वरः महाशिवरात्रि। इसके लिए राजधानी भुवनेश्वर में यातायात प्रतिबंध लगा दिए गए हैं। कमिश्नरेट पुलिस ने जागर के लिए लिंगराज मंदिर में भीड़ को रोकने के लिए व्यापक व्यवस्था की है।सभी शैव मंदिरों में जागर की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। महाशिवरात्रि के लिए पिछले मंगलवार को लिंगराज मंदिर कार्यालय में एक तैयारी बैठक आयोजित की गई।इसमें वाहनों की सुचारू आवाजाही सुनिश्चित करने, भीड़ से बचने और भुवनेश्वर के श्रीलिंगराज मंदिर में मनाए जाने वाले महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर पैदल चलने वालों के लिए कोई बाधा उत्पन्न करने से बचने के लिए कुछ नियम लागू किए जा रहे हैं। पुलिस आयुक्तालय ने एक अधिसूचना में कहा कि ये नियम 25 फरवरी, 2025 की मध्यरात्रि से लागू होंगे।

समन्तरपुर से आने वाले वाहनों को श्रीराम नगर से होकर जाने की अनुमति होगी। इसका विलय सबस्टेशन क्रॉसिंग पर होगा। जहां उन्हें पार्किंग के लिए अनंत वासुदेव मंदिर के उत्तर की ओर और तरंगा क्लब के पीछे की ओर स्थानांतरित किया जाएगा।

रथ रोड और पूनमा गेट से लिंगराज मंदिर आने वाले वाहनों (चार पहिया और दो पहिया वाहन) को पार्किंग के लिए वरैबेका चैक से बीएम हाई स्कूल मैदान की ओर मोड़ दिया जाएगा। इस दौरान राठ रोड पर किसी भी भारी वाहन को चलने की अनुमति नहीं दी जाएगी।केदार गौरी मंदिर की ओर से और सेनिटोरियम चौक की ओर से लिंगराज मंदिर आने वाले वाहन कचरापिंडी चौक से होते हुए कोटि तीर्थ लेन का उपयोग कर सकते हैं और तरंगा क्लब के पीछे खाली स्थान पर अपने वाहन पार्क कर सकते हैं। इसके लिए एकतरफा यातायात को सिद्धि मंडप लेन से कोटि तीर्थ लेन की ओर मोड़ दिया जाएगा।

केउत साही की ओर से लिंगराज मंदिर की ओर आने वाले वाहनों को श्रीराम सिटी से बीएमसी मार्केट कॉम्प्लेक्स/अनंत वासुदेव पार्किंग और सब-स्टेशन चैक के माध्यम से अन्य निर्दिष्ट पार्किंग क्षेत्रों की ओर मोड़ दिया जाएगा।

बराईकेवाचा चैक के बाद तारा सुंदरी रोड से लिंगराज मंदिर की ओर आने वाले वाहनों को गुजरने की अनुमति नहीं दी जाएगी। वाहनों को पार्किंग के लिए म्यूनिसिपल अस्पताल से बीएम हाई स्कूल मैदान की ओर मोड़ दिया जाएगा।

झारखंडी ओडिया अल्पसंख्यकों को मातृभाषा में शिक्षा नहीं!

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची : ओड़िशा से उसके एक राजस्व जिला को जबरन लाकर बिहार में ५१ वर्ष रखे जाने के बाद अब झारखंड स्थित उन दो पूर्व ओड़िया देशी रियासत के जिले में एक भी ओड़िया स्कूल नहीं है, यह सोलह आने सच है। यद्यपि विधिवत जहां सरकारी नजर में ओड़िया भाषाई अल्पसंख्यक रखें गये है। दुर्भाग्य कहिए या आश्चर्य, हर राजनीतिक दल की सरकारें इन्हें क्यों उपेक्षित समझ लेता उच्चस्तरीय अध्ययन का विषय बना हुआ है राज्य नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर।

अब आलम यह है कि झारखंडी स्कूलों में सरकार की तरफ से ओड़िया भाषा की पढ़ाई हेतु शिक्षक ही नहीं है नतीजतन पूर्व के इन दो देशी रियासत में उनकी मातृभाषा की पढ़ाई बंद प्राय है।यहीं वह विधालय है जहां 100 साल पहले सरायकेला खरसावां प्रिन्सली स्टेट में राजागण चार पाच सौ किलोमीटर दुर से उच्च शिक्षित अध्यापक, प्रचार्य भुवनेश्वर ,कटक से लाकर अच्छी पढ़ाई अपने प्रजा को देते थे। जबकि आजादी के बाद भी दो सौ से अधिक ओड़िआ विधालय थे, जो भारतीय अधिराज्य गृहित हुए थे 14 तथा 15 दिसंबर 1947 को।

सरायकेला एवं खरसावां, सिंहभूम समेत कुछ जिला जहां आज भी लाखों की संख्या में ओड़िया भाषी लोग रहते है, लेकिन राज्य सरकार ने दशकों से ओड़िया शिक्षा पर प्रतिबंध जैसा माहौल बनाकर रखा है। जहां लोग अपने संवैधानिक अधिकार से वंचित है। अब यह केवल राज्य नहीं केन्द्र के लिए भी अहम विषय बन गया है। जिले में एक भी ओडिया स्कूल का नहीं होना, कारण बिहार विभाजन बिल बहस के दौरान केन्द्रीय गृहमंत्री के दोनों राज्यों को साफ निर्देश के बावजूद न तो झारखंड नहीं ओडिशा सरकार इस अहम विषय पर कभी सोचती है।

उदाहरण हेतु एक ऐतिहासिक तथ्य है। अनंतपुर कुजग, कटक के एक स्कूल के शिक्षक परमानंद मिश्र को राजा

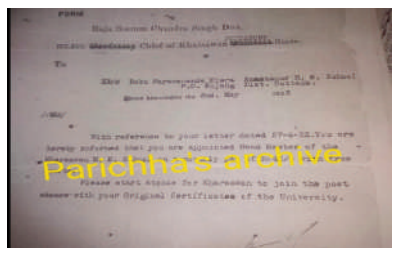

खरसावां (रूलीगं चीफ शासक खरसावां स्टेट) ने एक पत्र दिया था सौ साल पहले। वर्ष 1933 में राजा खारसुआं राम चंद्र सिंहदेव ने स्वयं उन्हें 40 रुपये प्रतिमाह वेतन देने तथा रहने हेतु क्वाटर की सुविधा देने की बात उल्लेख किया था। जिसका प्रमाण आज भी मौजूद है। परन्तु उक्त विधालय खरसावां +२ विधालय में केवल एक ओड़िआ शिक्षक है मौजूदा समय में। आज से 12-15 वर्ष सेवानिवृत हुए दो शिक्षक जय शंकर नंद तथा हरिश चंद्र आचार्य का कभी उक्त विधालय से तबादला बिहार एवं कालान्तर में झारखंड सरकार ने नहीं किया कारण वे ओड़िया भाषी शिक्षक थे। एक साहित्य एवं दुसरे कला विषय पढ़ाते थे। विज्ञान शिक्षक बी एस सी बीईडी होने के कारण विज्ञान पढ़ा रहे थे। बच्चे केवल साहित्य नहीं अन्य भाषा भी अपने मातृभाषा में पढ़ लिख कर परीक्षा ओडिया में लिखते थे।

आज राज्य और केंद्र सरकारों के को इस नियुक्ति पत्र का महत्व एवं संविधान वर्णित अधिकार जानते हुए उपेक्षा को ज्ञात व कारवाई करना आवश्यक है। मुख्य कारण यह है कि रियासती विलय समझौते में ओड़िया भाषा संस्कृति के संरक्षण का उल्लेख होने के बावजूद सरायकेला तथा खरसुआं को बिहार में रखे जाने की साजिश के बाद झारखंड में ओड़िया शिक्षकों पर हो रहे अत्याचार तथा पूर्व जिला शिक्षा पदाधिकारी संतोष गुप्ता द्वारा ओड़िया शिक्षकों को स्कूलों से हटाकर खरसुवां व भदरुडीह गांव में भेजने की साजिश लगातार चर्चा व जांच का विषय बन रहा है। बात केवल झारखंड मुक्ति मोर्चा की नहीं है बल्कि भाजपा, कांग्रेस सबकी सरकार ने उन्हें उपेक्षित माना है। जो एक उम्दा अध्ययन का सामग्री है गणतंत्र मे उनके संवैधानिक अधिकार का।

इतना ही नहीं सच तो यह है कि तत्कालीन बिहार एवं मौजूदा झारखंड के शिक्षा जगत में अनेक प्रकार भ्रष्टाचार के कारण ओडिया शिक्षा चरमराने हेतु विवश किया जा रहा है, वह भी गैर ओड़िया अधिकारियों द्वारा। कभी ओडिया पत्रकार पर झुठा मामला दायर करने के बाद सरायकेला खरसावां बार एसोसिएशन द्वारा एक आपात बैठक बुलाकर सभी अधिवक्ताओं ने वकालत नामे पर हस्ताक्षित कर अनोखा विरोध भी इसी न्यायालय किया था उसी विधालय के एक पूर्व प्राचार्य पर। जहां आज एक ओड़िआ शिक्षिका को भ्रष्टाचार का साथ न देने पर भ्रष्टाचार रुपी दानवों का इस कदर शिकार होना पड़ा है। जिसे भारत का दो राज्य देख रहा है।

झारखंड के रनिया में तीन नाबालिगों के साथ बारह दरिंदों ने किया दुष्कर्म

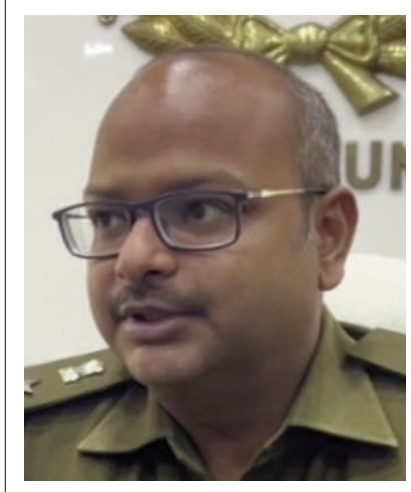

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड को शर्मसार करने वाली एक बड़ी घटना खूंटी जिले से आ रही है। जहां 3 आदिवासी नाबालिग बच्चियों के साथ 12 इंसानी भेड़ियों ने सामूहिक दुष्कर्म को अंजाम दिया गया है। गैंगरेप की इस घटना से न सिर्फ खूंटी-रांची जिला बल्कि पूरे राज्य में नारी सुरक्षा का पोल खोल कर रख दिया है। घटना शुक्रवार की देर रात की है, जब ये नाबालिग एक शादी समारोह में शामिल होकर लौट रही रहीं तब दरिंदों ने कहर बरपाया है। सभी नाबालिग लड़कियां खूंटी जिले के रनिया थाना क्षेत्र के एक गांव की है, आज से विधानसभा आरंभ हो रहा है संभवत मामला सदन पटल तक जायेगा. उधर एएसपी क्रिस्टोफर केरकेट्टा ने इस घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि रनिया थाना क्षेत्र के एक गांव से निचितपुर जाने वाले रास्ते में कारो नदी के पास वारदात को तब अंजाम दिया गया .जब सभी लड़कियां एक शादी समारोह में शामिल होकर अपने घर लौट रही थीं. रास्ते में एक दर्जन नाबालिग लड़कों ने लड़कियों को घेर लिया, लेकिन एक लड़की किसी तरह वहां से भाग निकली. इसके बाद सभी 12 आरोपियों ने तीनों नाबालिगों के साथ बारी-बारी से सामूहिक दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया. एएसपी ने बताया कि, बदमाशों ने पीड़ित नाबालिग लड़कियों को धमकी दी कि अगर किसी को इस घटना के बारे में बताया तो अंजाम बुरा होगा. इसके बाद डरी-सहमी युवतियों ने अपने परिजनों को इसकी जानकारी दी, जिसके बाद पुलिस कार्रवाई आरंभ हुई है।

क्या तरक्की सच में हो रही है, या हम डिजिटल मायाजाल में फँस गए हैं?

न मेहनत, न अपनापन – बस एक 'क्लिक' का खेल।

आज का दौर सचमुच ऐसा हो चला है कि जो दिखता है, वो है नहीं, और जो है, वो दिखता नहीं। पहले की दुनिया में मेहनत का रंग था, पसीने की महक थी, और इंसान से इंसान का रिश्ता था। सुबह की पहली किरण के साथ दुकानदार अपनी दुकान का शटर खटखटाता, लोहे की गड़गड़ाहट से गलियाँ चौंक उठतीं, और ग्राहकों को बुलाने वाली उसकी पुकार में आत्मीयता की मिठास घुली होती थी। ₹तशरीफ लाइए साहब,₹ कहकर वह हाथ जोड़ता, और दिनभर मोलभाव की जंग में अपनी सारी ताकत झोंक देता। सूरज डूबते-डूबते, जब थकान से निढाल वह अपनी तिजोरी में मुट्ठीभर सिक्के गिनता, तो उसकी आँखों में मेहनत की चमक और संतोष की लकीरें नाच उठतीं। मगर अब यह सब किसी भूले-बिसरे सपने-सा लगता है। अब दुकानें जमीन पर नहीं, आकाश में लहराती हैं—डिजिटल बादलों की आड़ में, जहाँ न शटर की खनक बची, न दुकानदार की जुबान की गरमाहट, और न ही ग्राहक से नजरें मिलाने का जज्बा। बस एक स्क्रीन का जाल, एक बटन की चाल, और सारा खेल पल में तय। ठिकाना पूछो तो जवाब फट पड़ता है—₹ऑनलाइन है, भाईसाहब!₹—जैसे यह कोई जादू की छड़ी हो, जिसने सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में कर लिया।

पहले व्यापार के अपने उसूल थे, पसीने की मेहनत थी, और मुनाफा उस कठोर परिश्रम का मीठा फल हुआ करता था। दुकानदार ग्राहकों को रिझाने के लिए जी-जान लगाता, अपनी चतुराई भरी बातों से दिल जीत लेता। लेकिन अब यह सब पुरानी किताबों की कहानी बनकर रह गया है। आज एक वेबसाइट बनाओ, सोशल मीडिया पर विज्ञापनों की बारिश कर दो, और देखते-देखते धंधा शुरू। ग्राहक आएँ या न आएँ, दुकान चलती रहे या ठप पड़े, मगर बिक्री का चक्का रुकने का नाम नहीं लेता। ये ईमान की कमाई नहीं, बल्कि तकनीक का मायावी खेल है, जो आँखों में चमक बिखेरकर जेबें लूट रहा है। पहले दुकान की शान उसकी जगह से झलकती थी—चाहे गली का कोना हो या बाजार की रौनक भरी चौखट। अब सब कुछ ₹क्लिक हियर₹ के एक छोटे से बटन में सिमट गया है। यहाँ न चेहरे की सच्चाई दिखती है, न भरोसे की नींव बनती है, बस स्क्रीन पर चमचमाते अंकों का तिलिस्मी नाच चलता रहता है।

गली-मोहल्लों की किराना दुकानों का भी यही दर्दनाक मंजर है। पहले वहाँ दुकानदार सिर्फ सामान नहीं बेचता था, बल्कि रिश्ते जोड़ता था। तराजू पर आटा तौलते हुए वह पूछता, ₹बीबी जी, थोड़ा बढ़िया दूँ?₹ और उसकी बातों में एक गर्मजोशी होती। उधारी की डायरी में नाम लिखते वक्त उसकी आँखों में भरोसा झलकता, जो ग्राहक को भीतर तक छू जाता। मगर अब? अब मोबाइल पर ऑर्डर करो, और कुछ देर बाद एक डिलीवरी बॉय सामान दरवाजे पर फेंककर चला जाता है। न मुस्कान, न बातचीत, न वह पुराना अपनापन। दुकानदार कहीं गायब, और उसकी जगह ले ली है एक ठंडी-सी मशीन ने, जो सिर्फ ऑर्डर लेती है और सामान भेजती है। धंधा पहले से कहीं ज्यादा तेजी से चल रहा है, मगर उस तेजी में इंसानियत कहीं पीछे छूट गई।

कपड़े और जूतों की दुनिया में भी यही जादूगरी फैल चुकी है। पहले दुकानदार ग्राहक के लिए अलमारी उधेड़ देता—₹सर, यह नीला वाला देखिए, शादी में धूम मचाएगा!₹ ग्राहक कपड़े को छूता, देखता, मोलभाव करता, और कई बार ₹सोचकर बताएँगे₹ कहकर दुकानदार की मेहनत पर पानी फेर देता। अब यह मेहनत फीकी पड़ गई है। ऑनलाइन दुकानों ने खेल बदल दिया—बस तस्वीर देखो, ₹बाइ नाउ₹ पर उँगली मारो, और ऑर्डर पक्का। मगर लेकिन जो मँगवाया, वह आएगा या कोई फटा-पुराना चिथड़ा, यह तो किस्मत की बाज़ीगरी है। दुकानदारी चमक रही है, मगर ग्राहक बार-बार ठगा-सा महसूस करता है। यहाँ न मेहनत की इज़्ज़त है, न ईमान की रोशनी, बस चमकीली ठगी का ज़हर हर ओर बिखरा पड़ा है।

खाने-पीने का हाल तो और भी बुरा है। पहले सड़क किनारे ठेले पर गरमागरम समोसे तलते थे, चाट की खुशबू हवा में तैरती थी, और गोलगप्पे वाला भैया ₹तीखा डालूँ या मीठा?₹ पूछकर स्वाद में जान डाल देता था। अब ऐप पर ऑर्डर करो, और खाना दरवाजे पर हाजिर। मगर वह स्वाद कहाँ? समोसा ऐसा कि तेल में डूबा कच्चा आटा लगे, और चाट ऐसी कि मसाले की जगह नमक की बोरियत चिपकी हो। ठेले की वह रौनक, वह चहल-पहल, अब ऐप की चमक में कहीं गुम हो गई। दुकान दिन-रात मुनाफा कमा रही है, मगर स्वाद का जनाजा निकल चुका है।

शिक्षा का मूल्य भी इस डिजिटल छलावे में कहीं विलीन हो गया है। पहले गुरुजी की कठोर छड़ी और उनकी गूंजती हुई कड़क आवाज़—₹ध्यान से सुनो!₹—से बच्चे सहमते थे, मगर ज्ञान अर्जित करते थे। अब ऑनलाइन कक्षाओं में बच्चे कैमरा बंद कर गहरी नींद में डूब जाते हैं, और शिक्षक स्क्रीन पर ₹हैलो-हैलो₹ की गुहार लगाते रह जाते हैं। स्कूल-कॉलेज इस डिजिटल मायाजाल में उलझ चुके हैं—न विद्यार्थी विद्यालय की दहलीज लाँघते हैं, न पुस्तकों को स्पर्श करते हैं; बस मोबाइल स्क्रीन पर ₹जॉइन क्लास₹ का ढोंग चलता रहता है। फीस वसूली में कोई कोताही नहीं बरती जाती, मगर ज्ञान के प्रसार में घोर उदासीनता झलकती है। यहाँ भी शिक्षा एक व्यापार बन गई है, और वास्तविक उद्देश्य कहीं धुंधला पड़ गया है।

बैंकिंग की दुनिया भी इससे अछूती नहीं। पहले बैंक में लंबी कतारें, ₹टोकन लो!₹ की चीख-पुकार, और कैशियर की घुड़कियाँ—₹फॉर्म पूरा भरिए!₹—सब सहना पड़ता था। अब बस मोबाइल पर दो उँगलियाँ नचाओ, और लाखों रुपये इधर से उधर। न लाइन का झंझट, न पासबुक का फेर—बस ₹पेमेंट डन₹ का मैसेज और काम खत्म। बैंक की शाखाएँ अब सुनसान पड़ी हैं, मगर धंधा ऐसा चल रहा है कि नोटों की गड्डियाँ हवा में उड़ती दिखती हैं। यहाँ भी तकनीक ने मेहनत को हाशिए पर धकेल दिया, और सुविधा के नाम पर सब कुछ मशीनों के हवाले कर दिया।

राजनीति की दुकान तो सबसे चमकदार है। नेता जी टीवी पर चेहरा चमकाते हैं, सोशल मीडिया पर नारे उछालते हैं, और वादों की बरसात करते हैं—₹हर घर में सोना, हर खेत में पानी!₹ मगर चुनाव खत्म होते ही सब हवा। नेता जी गायब, वादे गायब, और जनता अपने वोट को ढूँढती रह जाती है। उनकी दुकान दिन-रात चलती है, मगर जनता से मुलाकात का नामोनिशान नहीं। यहाँ भी जादूगरी अपने पूरे शबाब पर है—बोलो कुछ, करो कुछ, और दिखाओ कुछ और।

तो आखिर यह सब क्या है? यह कोई साधारण व्यापार नहीं, बल्कि इंसानियत पर छाई डिजिटल लूट की साजिश है। दुकान सजाने की जरूरत ही कहाँ, बस एक स्क्रीन और इंटरनेट का तिलिस्म काफी है। सामान तो हाथ में आ रहा है, पर भरोसे की छाया गायब। खाना दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, पर स्वाद की आत्मा रूठ चुकी। पैसा हवा में नाच रहा है, पर बैंक का चेहरा धुँधला। नेता जी मुँह फाड़-फाड़कर शब्द उछाल रहे हैं, पर सुनने को कान ही नहीं बचे। उनकी दुकानें सोने की फसल काट रही हैं, मगर उनके दर्शन दुर्लभ हो चले हैं। यह तरक्की का शंखनाद है या रिश्तों और परंपराओं की चिता पर बजता मातमी ढोल? जवाब शायद हमारे पास भी नहीं, क्योंकि अब तो जवाब तलाशने की चौपाल भी ऑनलाइन बिकाऊ माल बन चुकी है। जागिए, सोचिए, वक्त रहते कुछ कर डालिए, वरना यह डिजिटल जादूगरी हमें जड़ से निगल जाएगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",
बड़वानी (मप्र)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023